मख़्ज़न
-ए-
मालूमात
(मुफ्ती) मन्जूर आलम
मकतबा नईमिया

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

व-अ़ल्ल-म आदमल असमा-अ कुल्लहा

मख़्ज़न-ए-मालूमात

(मालूमात का ख़ज़ाना)

(मुफ़्ती) मन्ज़ूर आलम पुरनवी
प्रिन्सिपल दारूल उलूम ग़ौसिया
न्यूरिया हुसैन पुर पीली भीत

वितरक

मकतबा नईमिया
423 मटया महल, जामा मस्जिद दिल्ली-6

प्रकाशक

दारुल उलूम ग़ौसुल वरा
मुत्तासिल बायसी
ज़िला पूरनिया (बिहार)

नाम किताब ---------- मख़्ज़न-ए-मालूमात
संग्रह कर्ता ---------- मुफ़्ती मन्जूर आलम पुरनवी
वितरक ---------- मकतबा नईमिया 423,
मटया महल जामा मस्जिद दिल्ली-6
कम्पोज़िंग ---------- मोहम्मद इब्राहीम संभली
मकतबा नईमिया 423,
मटया महल जामा मस्जिद दिल्ली-6
अनुवादक ---------- मुहम्मद अहमद नईमी एम॰ ए॰
पिरूफ़ रीडिंग ---------- हामिद रज़ा बरकाती
सन प्रकाशन ---------- 2003
मूल्य ----------

मिलने के पते

सलमान बुक डिपो ---------- कमर मार्कीट मुन्सिफी संभल
तनज़ीमी बुक डिपो ---------- बाइसी पुरनिया बिहार
मकतबा फारूकिया ---------- मटया महल दिल्ली
हक एकेडमी ---------- मुबारक पुर
कादरी बुक डिपो ---------- नौमहला मस्जिद बरेली शरीफ
कादरी किताब घर ---------- नौमहला मस्जिद बरेली शरीफ
बरकाती बुक डिपो ---------- नौमहला मस्जिद बरेली शरीफ
अशरफी किताब घर ---------- नख़ासा बाज़ार संभल
रज़वी किताब घर ---------- मटया महल दिल्ली 6
अजमली कुतुब खाना ---------- मदरसा अजमलुल उलूम संभल

कलामुल इमाम इमामुल कलाम

मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमामे एहले सुन्नत सय्यिदुना सरकार आला हज़रत फाज़िले बरेलवी रदियल्लाहु अन्हु

सुनते हैं कि महशर में सिर्फ़ उनकी रसाई है
गर उनकी रसाई है लो जब तो बन आई है

मचला है कि रहमत ने उम्मीद बंधाई है
क्या बात तेरी मुज्रिम क्या बात बनाई है

सबने सफ़े महशर में लल्कार दिया हमको
ऐ बेकसों के आक़ा अब तेरी दुहाई है

यूँ तो सब उन्हीं का है पर दिल की अगर पूछो
यह टूटा हुआ दिल भी ख़ास उनकी कमाई है

ऐ दिल यह सुलगना क्या, जलना है तो जल भी उठ
दम घुटने लगा ज़ालिम क्या धूनी रमाई है

ऐ इश्क तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

तैबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क के बन्दे हैं क्यों बात बढ़ाई है

मतलअ में यह शक क्या था वल्लाह रज़ा वल्लाह
सिर्फ़ उनकी रसाई है, सिर्फ़ उनकी रसाई है

◆◆◆

तकरीज़-ए-जलील

अज़ कलम :- हज़रत अल्लामा मौलाना

मुफ़्ती हसन मनज़र साहिब क़दीरी ज़िला किशन गंज (बिहार)

सब कहाँ कुछ लाला व गुल में नुमायाँ हो गई
खाक में क्या सूरतें होंगी कि पिनहा हो गई

पूरनियाँ उत्तरी पूर्बी बिहार का आख़री ज़िला है जो इल्म और अदब तरक्की के लिऐ बहुत ही ज़रख़ेज़ है। पूरनिया की ज़मीन से हज़ारों लाल व हीरे ज़ाहिर हुऐ। और अभी न जाने कितने लाला व गुल महकने के लिऐ बेताब हैं। पूरनिया की ज़रख़ेज़ मिट्टी से हज़ारों आलिम, व फ़ाज़िल निकले जिनके इल्म और कमाल की रोशनी अब भी मौजूद है।

पूरनिया की खाक के ख़मीर में शायरों की सुरीली आवाज़ भी है और एहले जुबान व क़लम का मोती बिखेरना भी।

इन्ही रोशन हीरो में से एक हीरा "मौलाना मन्ज़ूर आलम साहिब रिज़वी भी हैं जो अपनी इल्मी व अदबी सलाहियत के लिहाज़ से शोहरत की बुलन्दी पर फाइज़ हैं। हज़रत जहाँ दर्सगाह में एक माहिर उस्ताद हैं वहीं क़लम की दुनिया में अपने अंदाज़ के एतेबार से बहतरीन अदीब भी नज़र आते हैं।

चन्द साल पहले हज़रत ने अपने इल्म और फ़न का एक खूबसूरत गुलदस्ता पेश किया था जो "तारीफ़ात" के नाम से जाना जाता है। इस गुलदस्ते में बहुत सी चीज़ों की तारीफ़ो के रंग बिरगें फूल हैं जिनकी खुश्बू और महक से इल्म वाले ऐसे खुश्बूदार हुऐ कि बार-बार तलब बढ़ती रही और हाल यह है कि अब वह किताब तीसरी बार छपाई की मन्ज़िल से गुज़र चुकी

है जो आपके इल्मी व फन्नी कमाल की दलील है।

मख़्ज़ने मालूमात भी हज़रत के बहुत ज़्यादा मुताले (STUDY) और इल्मी सोच का एक खूबसूरत नतीजा है जिसे कई अच्छे इल्म और नज़र वालों ने देखा और तारीफ़ की और जब मैंने इसे कहीं कहीं से पढ़ा तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि हज़रत ने हज़ारों फूलों की पंखड़ियों की खुश्बू एक खुश्बूदान में रखदी है। जिसमें सौ 100 से ज़्यादा किताबों के औराक़ से चुन-चुन कर अजीबो ग़रीब मालूमात, कीमती मसअले, और फ़ायदे मंद तारीख़ी, दीनी शरअ़ी बातें इकट्ठा कर दी हैं। और मज़े की बात यह है कि मौलाना ने अपनी काबिलियत के जोहर दिखाते हुऐ हर सवाल के जवाब को किताबों के हवालों से बयान कर दिया है बल्कि कुछ शक में डालने वाली जगहों में तहकीक़ व खोज-बीन के ज़रीए अपने इल्म के कमाल को भी उजागर किया है।

खुलासा यह कि यह किताब दीनी और दुनयावी मालूमात का अनमोल खज़ाना है मुझे उम्मीद है कि हज़रत की यह बहतरीन कोशिश भी अवाम और खवास में इज़्जत की निगाह से देखी जाऐगी।

परवरदिगारे आलम से दुआ है कि इस गुलदस्ते को अवाम में मक़बूल कर दे। और इसके सजाने वाले को दुनिया और आख़िरत की निअ़्मतों से माला माल फ़रमाऐ। आमीन

फ़क़्त

(मुफ़्ती) हसन मन्ज़र कदीरी

किशन गंज (बिहार)

तआरूफ़

अज़ कलम : हज़रत मौलाना मुहम्मद शाबान साहिब रिज़वी
उस्ताद दारूल उलूम गौसिया न्यूरिया पीली भीत यू0 पी0

शोरिशे अंदलीब ने रूह चमन में फूंक दी
वरना कली-कली यहाँ मह्व थी ख्वाबे नाज़ में

बिहार सूबे में ज़िला पूरनिया को "आलिमों के शहर" होने का शरफ़ हासिल है इस ज़मीन की कोख से न जाने कितनी बुलन्द शाख्सियतों ने जन्म लिया है जिन्होनें अपने वुजूद से इस इल्म और फन के शहर को और भी महान बना दिया। इसी की एक कड़ी इल्म व फ़न के माहिर हज़रत मौलाना मुफ़्ती मनजूर आलम साहिब रिज़्वी भी हैं जो इल्म और तालीम के सूरज इल्म व फ़न के इमाम हज़रत ख्वाजा मुज़फ़्फ़र हुसैन साहिब रिज़वी से फैज़ पाए हुए हैं। हज़रत सिर्फ चन्द साल ख्वाजा साहिब की बारगाह में रहकर कोर्स में राइज किताबों की तालीम हासिल करके सन् 1981 ई० में फारिग होने की सनद हासिल कर ली उसके बाद सन् 82 ई० में सुन्नी दुनिया की अज़ीम दर्सगाह दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम में बहैसियते उस्ताद दर्स व तदरीस की खिदमत पर मामूर हो गऐ। हज़रत वहाँ दो साल तक अपने इल्म से इल्म के प्यासों को सैराब करते रहे। हालात साज़गार न होने की बिना पर इल्मो फ़न के घर संभल तशरीफ़ ले गऐ, वहाँ एहले सुन्नत की मशहूर दर्सगाह मदरसा अजमलुल उलूम और मदरसा हामिदया अशरफ़िया सिराजुल उलूम में लगातार चार साल रहकर दूर दराज़ से आऐ हुऐ इल्म और फ़न

की चाहत रखने वालों को अपने इल्म और हिकमत से फैज़याब करते रहे। फिर वहाँ से ज़माने के हालात के उतार चढ़ाव के सबब दारुलउलूम गौसिया न्यूरिया तशरीफ़ लाऐ और हज़रत यहाँ रहकर हम जैसे नाचीज़ ज़र्रों को अपने इल्मी फैज़ और कमाल से फायदा पहुँचाते रहे। यह हज़रत ही का फैज़ और करम है कि हम जैसों को रोशन हीरा बनाया। और बराबर तीन साल तक सैकड़ों बच्चों को अपने इल्म से अच्छी तरह नवाज़ते रहे। खास तौर से कसबा न्यूरिया पर यह हज़रत का एहसान है कि बहुत सौं को "आलिम नबियों के वारिस हैं" कहलाने का हक्दार बना दिया। और अपना इल्मी सिक्का दारुल उलूम गौसिया की चार दीवारी पर लगा दिया औंर यहीं पर अपनी मशहूर किताब "तारीफ़ात" मुकम्मल फ़रमाई जो हज़रत की जीती जागती यादगार है। और अवाम व एहले इल्म से दाद और तहसीन हासिल कर चुकी है।

फिर हज़रत यहाँ से आली जनाब सेठ मज़हरुद्दीन की दावत पर गुरसहाय गंज की मशहूर दर्सगाह अलजामिअतुर्रिज़विया में बहेसिते शैखुल हदीस तशरीफ़ ले गऐ और वहाँ सिर्फ़ एक साल रहकर इल्मी खिदमात अंजाम दीं। उसके बाद संभल के मुफ़्ती हज़रत मौलाना इख्तेसासुद्दीन साहिब अजमली के ज़्यादा इसरार की वजह से दोबारा मदरसा अजमलुल उलूम संभल बहैसियते सदर मुदर्रिस तशरीफ़ ले गऐ और वहाँ पर मुसलसल नौ साल तक अपने इल्मी फैज़ से दूर दराज़ से आऐ हुऐ हज़ारों इल्म की तलब करने वालों को इल्मो हिकमत से आरास्ता करते रहे, सदर मुदर्रिसी की अहम ज़िम्मेदारी भी निहायत पाबन्दी और होशयारी के साथ पूरी करते रहे।

हज़रत ने अपनी ज़िन्दगी के एक-एक पल को खुदा की अता की हुई अज़ीम नेअ्मत व दौलत समझकर किसी हालत में बेकार नहीं जाने दिया और अपनी ज़ात को हमेशा दर्सो तदरीस, तसनीफ़ व तालीफ़ और किताबों के मुताला करने में मशग़ूल रखा और यहीं पर हज़रत ने लगातार मेहनत और बराबर कोशिश करने के बाद चन्द लाइब्रेरियों का सफ़र करके "मख्ज़ने मालूमात" किताब की तसनीफ़ और तालीफ़ की इब्तिदा की और वह कामयाबी की मन्ज़िल तक पहुँच गई जिसे आप किताबी शक्ल में देख रहे हैं।

फिर कसबा न्यूरिया के कुछ दोस्त और अहबाब के मुसलसल ज़ोर देने पर संभल से दोबारा दारुलउलूम ग़ौसिया में बहैसियते प्रिन्सिपल तशरीफ़ लाऐ। न्यूरिया वालों ने आप के तशरीफ़ लाने पर खुशी का जश्न मनाया और आपके आते ही दारुलउलूम ग़ौसिया के इल्मी माहोल में निखार पैदा हो गया और अपने खुदा की अ़ता की हुई सलाहियत से तालीम व तहज़ीब ऐसा माहोल पैदा किया जो इस से पहले न था। बिला शक हज़रत इल्म व फ़ज़्ल की बहुत सी खूबियों और अख़लाक़ व किरदार की बुलंदियों पर फाइज़ हैं। ख़ास तौर से दर्सी (कोर्स) किताबों पर तो बेपनाह महारत रखते हैं। जब किताब के किसी जगह की तक़रीर करते हैं तो यूँ लगता है कि मुसन्निफ़ (लेखक) के मक़सद इनके बयान के पैरो कार हैं। तक़रीर के दौरान ऐसा मालूम होता है कि किताब की लाइनें उनके लफ़्ज़ों में ढ़लती जा रही हैं। उनकी तालीम में यह ख़ासियत है कि जिस फ़न को पढ़ाते हैं तलबा में उस फ़न का सही शऊर पैदा कर देते हैं। वह उस्ताज़ बनाने वाले उस्ताज़ हैं। जिन खुश

नसीबों ने उनसे तालीम हासिल की है उनमें ज़्यादातर हिन्दुस्तान के मज़हबी मदरसों में ऊँचें उहदों पर रहकर दीन की ख़िद्मत अन्जाम दे रहे हैं।

मेरी दुआ है कि अल्लाह तआ़ला बहुत ज़माने तक हज़रत का साया हमारे सरों पर बाक़ी रखे और उन्हें दोनों जहान की लाज़वाल निअ़मतों से खुश्हाल फरमाऐ। आमीन

फ़क्त

मुहम्मद शाबान रिज़वी

नात शरीफ़

अज़ : हामिद रज़ा बरकाती शेर पुरी

दारुल उलूम गौसिया, न्यूरिया पीली भीत

मुद्दत से मेरे आक़ा यही आस दिली है।
मैं देख लूँ कैसी वह मदीने की गली है।

वलफज्र है चेहरा तेरा वल्लैल हैं गेसू।
क्या प्यारा तबस्सुम है कली जैसे खिली है।

जन्नत की फिज़ाओं में वह क्या रहके करेगा।
सहराऐ मदीना की हवा जिसको मिली है।

लो मुजरिमो सामाने शफ़ाअत हुआ अपना
अब बादे करम देखो मदीने से चली है।

सब झोलियाँ अब कासिमे निअ़मत ही भरेंगे
हाँ काने सख़ावत तो सख़ी दर की खुली है।

कैसे तु भला खुल्द में जाऐगा वहाबी
मिफ़्ताहे दरे खुल्द जब आक़ा को मिली है।

परवानों का झुरमुट वहाँ, हामिद तु यहाँ पर
चल देख शमा नूरी मदीने में जली है।

पेशकश

दारुल उलूम ग़ौसिया न्यूरिया पीली भीत में "*तारीफ़ात*" लिखने के बाद मद्रसा अजमलुल उलूम संभल पढ़ाने की खिदमत पर मुक़र्रर हो गया और उसी को अपनी ज़िन्दगी का सरमाया बना लिया साथ ही इस मद्रसे की सारी ज़िम्मेदारी भी अपने ऊपर ले ली जिसकी बिना पर कुछ लिखने लिखाने का मौक़ा न मिला इन दिनों में सिर्फ किताबों के वर्कों पर नज़र रखना रोज़-मर्रा के मामूल में शमिल रहा। इसी दरमयान "*मालूमात*" के मौजू (विषय) पर कुछ किताबें देखने का मौका मिला जो सवाल और जवाब के अन्दाज़ में थीं उनमें ज़्यादा तर किताबें तो वह हैं जो कि कम्ज़ोर-बनावटी रिवायतों को भी जगह दिये हुऐ हैं और जवाब के साथ हवाले भी नहीं हैं और कुछ किताबें तो बिल्कुल ग़ैर मोतबर हैं।

हमारे चन्द दोस्त जैसे हज़रत मौलाना मुफ़्ती मु॰ आरिफ हुसैन साहिब रज़वी मुदररिस मद्रसा एहले सुन्नत अजमलुल उलूम संभल व मौलाना शाबान साहिब रिज़वी उस्ताद दारुल उलूम गौसिया न्यूरिया पीली भीत और हज़रत मौलाना दबीरुल क़ादरी साहिब रशीदी प्रिन्सिपल दारुल उलूम सय्यद अली सरकार मेहसाना गुजरात ने इस सिलसिले में मुझसे फरमाइश की कि आप इस मौजू पर एक ऐसी मुकम्मल किताब लिख दें जो सवालो जवाब के तौर पर हो और हर सवाल का जवाब मुहक़्क़क़ व मुदल्लल हो और हर जवाब को किताबों के

हवाले से भी बयान कर दिया गया हो।

मुझ जैसे नाचीज़ के लिऐ यह बात दूध का दरया बहाने की तरह थी लेकिन फिर भी खुदा की मदद पर भरोसा करते हुऐ बहुत से कुतुबखानों की किताबों की छानबीन शुरू कर दी। इस सिलसिले में खुदा बख़्श लाइब्रेरी पटना, रज़ा लाइब्रेरी रामपुर और खास तौर से हजरत अल्लमा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद इख्तेसासुद्दीन साहिब अजमली नाज़िमे आला मदरसा अजमलुल उलूम संभल का बेहद एहसान है कि उन्होंने अपने ज़ाती कुतुबख़ाने से फ़ायदा उठाने का भर पूर मौका दिया अल्लाह तआला उनकी उमर दराज़ फरमाऐ और उनका साया एक लम्बे वक़्त तक हमारे सरों पर बाकी रखे। अल्लाह की मेहरबानी से मेरे पास काफ़ी खज़ाना जमा हो गया और हमने उस खज़ाने को बाबों (पाठ) के ऐतेबार से तरतीब दिया जो सवालो जवाब के अन्दाज में हैं अपने लिहाज़ से काफ़ी हद तक सही और दुरुस्त लिखने की कोशिश की है फिर भी इन्सानी आदत की वजह से कहीं कमी या खामी नज़र आऐ तो फक़ीर को आगाह कर दें ताकि आइन्दा एडीशन में उसको सही कर दिया जाऐ फक़ीर इसका शुकगुज़ार होगा।

मन्जूर आलम रिज़वी

(बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम)

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अल्लमलइन्सा-न मालम यअ्लम मिनल मुसम्मियाते वज़य्य-न फवादहु बिमा लम यअ्रिफ़ मिनल मअ्लूमाते वस्सलातु वस्सलामु अ्ला रसूलेहि मुहम्मदिन ख़ैरिल मौजूदाते वआ्ला आलेहि वअसहाबेही अल्लज़ीना फ़ाज़ू इला अअ्लद दरजाते॰

अक़ाइद का बयान

सवाल – अक़ाइद के इमाम कितने हैं? (अक़ाइद अक़ीदे की जमा यानी बहु वचन है। इस्लाम में जिन बातों का ज़ुबान के इक़रार के साथ दिल से गवाही देना ज़रुरी है वह अक़ीदा कहलाती हैं)

जवाब – दो हैं, एक हज़रत सय्यिदुना इमाम अबु मन्सूर मातुरीदी, दूसरे सय्यिदुना शेख इमाम अबुल हसन अशअरी रहमतुल्लाहे अलैहिमा। (रोज़ तुलबहिया पेज 3, निबरास पेज 229)

सवाल – क्या दोनों इमाम बरहक (सही) हैं?

जवाब – यह दोनों इमाम बरहक़ हैं। अस्ल अक़ाइद में दोनों एक हैं अल्बत्ता इख़्तेलाफ़ है तो सिर्फ़ अक़ाइद के फ़ुरुअ (अस्ल से निकली हुई बातों) में (बहारे शरीअत हिस्सा अव्वल पेज 53)

सवाल – जो इन्सान इन दोनों इमामों के खिलाफ़ कोई अक़ीदा रखे वह एहले सुन्नत में दाखिल है या नहीं?

जवाब – एहले सुन्नत इन्हीं दोनों इमामों की पैरवी करते हैं। मातुरीदया हज़रत सय्यिदुना इमाम अबु मन्सूर मातुरीदी की और अशाइरा हज़रत सय्यिदुना इमाम अबुलहसन अशअरी की तो

एहले सुन्नत की यही दो जमाअतें हैं जो इनके खिलाफ़ कोई अक़ीदा रखे और वह अक़ीदा कुफ़्र की हद तक नहीं पहुँचा है तो वह गुमराह है और अगर कुफ्र की हद तक पहुँच गया है तो काफ़िर और एहले सुन्नत से खारिज है। (मज़हबे इस्लाम पेज 4)

सवाल – मसाइल के इमाम कितने हैं?

जवाब – इस वक़्त सिर्फ चार हैं इमाम आज़म, इमाम, शाफ़ेई, इमाम मालिक, इमाम अहमद बिन हंबल, दूसरी सदी के बाद उम्मत ने इन्हीं चारों इमामों पर इत्तेफ़ाक़ कर लिया है, इससे पहले कुछ इमाम और भी हुऐ हैं लेकिन उनके मसलक कुछ जमाने तक चले और ख़त्म हो गऐ। (फ़तावा रिज़विया जिल्द 3 पेज 321)

सवाल – क्या इन चार इमामों में से किसी एक की पैरवी ज़रूरी है?

जवाब – हाँ शरीअत के मसाइल पर अमल करने के लिए किसी एक खास इमाम की पैरवी करना ज़रुरी है वरना वह शरीअत पर अमल करने वाला नहीं होगा बल्कि अपनी ख्वाहिश पर अमल करेगा और गुमराह होगा। इस वक़्त इन चार के सिवा किसी की पैरवी जाइज़ नहीं अब सही और हक़ मज़हब इन्हीं चारों में महफूज़ है और जो इन चारों से ख़ारिज है गुमराह और बे दीन है। (तहतावी जिल्द 4 पेज 153 सावी जिल्द 3 पेज 9)

सवाल – अगर चारो इमाम-बरहक हैं तो फिर इख्तेलाफ़ किस बात में है?

जवाब – यह चारों अस्ल अक़ाइद में मुत्तहिद हैं और इख्तेलाफ़ सिर्फ फुरुई मसाइल में है। (मज़हबे इस्लाम पेज 5)

सवाल – इन इमामों के इख्तेलाफ़ से क्या फायदा है?

जवाब – शरीअत एक चमन है जिसमें बहुत से किस्मों के फूल

हैं कहीं गुलाब तो कहीं चंबेली, कहीं नसरीन तो कहीं नस्तरीन सिर्फ एक फूल से चमन नहीं होता और न एक फूल चमन की खूबसूरती के लिए काफ़ी। इमाम अक़ाइद के हों या मसाइल के यह शरीअ्त के चमन के फूल हैं और इन फूलों का इख़्तेलाफ़ ही चमन की रोनक़ है। जैसे सर के मसह करने के सिलसिले में दीन के इमामों में इख़्तेलाफ़ है, इमामे आज़म रदियल्लाहु अन्हु अपने इज्तेहाद से चौथाई सर का मसह फर्ज़ करार देते हैं और इमाम शाफ़ेई रदियल्लाहु अन्हु मुतलक मसह को फर्ज़ करार देते हैं, चाहे एक दो बाल ही सही, और इमाम मालिक रदियल्लाहु अनहु का कहना है कि पूरे सर का मसह फ़र्ज़ है। मक़सूदे इलाही चाहे जो भी हो मगर इस इख़्तेलाफ़ से उम्मते मुस्लिमा को अलग-अलग अन्दाज़ में अमल करने का मौक़ा मिला। और यही मतलब है "*इख़्तिलाफु उम्मती रहमतुन*" का।

(मेरी उम्मत का इख़्तेलाफ़ रहमत है) इख़्तेलाफ़ में रास्ते मुख़्तलिफ़ होते हैं लेकिन मक़सद एक होता है जैसा कि एक शख़्स काबे की ज़ियारत के लिऐ बग़दाद से मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हुआ और दूसरा इसी ज़ियारत के लिऐ मुल्के शाम से मक्का मुकर्रमा चला, अगरचे पहुँचने के रास्ते मुख़्तलिफ़ हैं मगर मक़सूद दोनों का एक है, और खिलाफ में रास्ते भी मुख़्तलिफ़ होते हैं और मकसद भी जैसे कि दो शख़्स हिन्दुस्तान से मुख़तलिफ सम्त पाकिस्तान और बंगला देश की तरफ़ रवाना हों, ज़ाहिर है कि यहाँ दोनों के रास्ते भी मुख़्तलिफ़ हैं और मक़सूद में भी एक नहीं। (अज़ कलम मुफ़्ती हसन मन्जर कदीरी)

सवाल – एहले सुन्नत किसे कहते हैं?

जवाब – हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम सहाबए

किराम ताबेईन और तबए ताबेईन के तरीके पर चलने वालों को एहले सुन्नत कहते हैं। (ततहीरुल जिनान वल्लिसान पेज 9)

दूसरे लफ़्ज़ों में अशाइरा और मा तुरीदया को एहले सुन्नत कहते हैं। (रद्दुल मुहतार जिल्द 1 पेज 35)

सवाल – वहाबी किसे कहते हैं और उनका अक़ीदा क्या है?

जवाब – मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब के मानने वालों को वहाबी कहते हैं, इस मज़हब का बानी मुहम्मद बिन अब्दुल बहाब नजदी है जिसके बारे में शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद टांडवी देवबन्दी अपनी किताब "अश्शिहाबुस्साकिब" में लिखते है। कि "मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नजदी इब्तेदाऐ तेरहवीं सदी में नज्द अरब से ज़ाहिर हुआ और चूँकि यह ख़्यालाते फासिद और अक़ाइदे बातिल रखता था, एहले सुन्नत व जमाअत से कत्लो किताल किया, उनको बिल्जब्र अपने ख़्यालात की तकलीफ़ देता रहा, उनके अमवाल को ग़नीमत का माल और हलाल समझता रहा, उनके क़त्ल करने को बाइसे सवाब व रहमत शुमार करता रहा, एहले हरमैन को खुसूसन और एहले हिजाज़ को उमूमन उसने तकलीफ़े शाक्का पहुँचाई। सल्फ़ सालेहीन और अत्बाअ़ की शान में निहायत गुस्ताख़ी और बे अदबी के अलफ़ाज़ इस्तेमाल किऐ, बहुत से लोगों को बे वजह उसकी तकलीफ़े शदीदा के मदीना मुनव्वरा और मक्का मुअज़्ज़मा छोड़ना पड़ा। और हज़ारों आदमी उसके और उसकी फौज के हाथों शहीद हो गऐ"।

इसने अपना मज़हबे बातिल फैलाने के लिए एक कितबा लिखी जिसका नाम "किताबुत्तौहीद" रखा। उसके ज़रीए नबियों और वलियों और खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की

दिल खोलकर तौहीन की फिर उसी का तरर्जुमा हिन्दुस्तान में इस्माईल देहलवी, ने क्या जिसका नाम तकवीयतुल ईमान रखा उसी ने यहाँ वहाबियत फैलाई इस वक्त ईसमाईल देहलवी रशीद अहमद गंगोही और क़ासीम नानौतवी अशरफ़अलीथानवी और तक़वियतुल ईमान को मानने वाला या असके मुताबिक़ अक़ीदे रखने वाला वहाबी है।

मो॰बिन अब्दुल बहाव का अकीदा था कि :

"जुमला एहले आलम व तमाम मुसलमानाने दयार मुश्रिक व काफ़िर हैं और उनसे कत्लो किताल करना, उनके अमवाल को उनसे छीन लेना हलाल व जाइज़ बल्कि वाजिब है। वह सिर्फ़ अपने आपको मुसलमान समझते हैं"।(रद्दुल मुहतार जिल्द सोम पेज 319, फतावा रिज़विया 9 पेज 4 अश्शिहाबुस्साकिब पेज 43)

सवाल – देवबन्दी किसे कहते हैं और उनका अकीदा क्या है?

जवाब – मौलवी रशीद अहमद गंगोही, मौलवी अशरफ़अली थानवी, मौलवी क़ासिम नानौतवी और मौलवी ख़लील अहमद अंबेठवी के मानने वालों को देवबन्दी कहते हैं उनका अक़ीदा यह है कि

(1) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के बाद दूसरा नबी हो सकता है।

(2) शैतान मरदूद का इल्म हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के इल्म से ज़्यादा है।

(3) इबलीस के इल्म की ज़्यादती नस्से कत ई (कुरान) से साबित है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के इल्म की ज़्यादती के लिए कोई नस्से कतई नहीं।

(4) खुदा झूठ बोल सकता है। बल्कि झूठ बोला भी है।

(5) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के लिए कुछ ग़ैब के इल्मों का सुबूत बच्चा व पागल बल्कि तमाम जानवरों और

चौपायों के इल्म की तरह है।"

यह चारों अपने अकीदे के ऐतेबार से काफ़िर व मुर्तद हैं जो इनके कुफ्र व अज़ाब में शक करे वह खुद काफिर है। आज के दौर में देवबंदी वहाबी दोनों का एक ही हुक्म है कि यह लोग इन ख़बीस लोगों की झूठी बातों और ख़राब अक़ीदों को सही और हक़ मानते हैं इसलिऐ यह भी काफ़िर व मुर्तद हैं।

(फ़तावा रिज़विया जिल्द 9 पेज 39 ता 42)

(नोट) तफ़सील के लिऐ हिसामुल हरमैन और अस्सवारिमुल हिन्दिया का मुताला करें।

सवाल – ग़ैर मुक़ल्लिद किसे कहते हैं और उनका अक़ीदा क्या है?

जवाब – ग़ैर मुक़ल्लिद जिसे एहले हदीस भी कहते हैं एक गुमराह और बद मज़हब फिरक़ा है जो इमामों की पैरवी और इजमाअ (सरकार की उम्मत के इमामों और नेक हज़रात का किसी दीनी हुक्म या मसअले पर इत्तेफ़ाक़ कर लेना) और क़्यास (कुरान या हदीस को आईना बनाकर दूसरे मसअले निकालना) का इनकार करते हैं पैरवी को हराम और बिदअत बताते हैं और दीनके इमामों को गाली और बुराई से याद करते हैं और इमामों की पैरवी करने वालों को मुश्रिक बताते हैं। इस फिरके ने अपना नाम "आमिल बिल हदीस" रखा इसके पेशवा इसमाईल देहलवी और सिद्दीक हसन खाँ भोपाली और नज़ीर हुसैन देहलवी हैं। इस्माईल देहलवी ने यह नया मज़हबनिकाला और हिन्दुस्तान में फैलाया, उनका अक़ीदा वही है जो वहाबी देवबन्दी का हे बल्कि उनसे भी एक दरजा आगे। और इनके मज़हब में यह भी है कि राम चन्द्र लक्षमण,

कृष्ण जो हिन्दुओं के पेशवा हैं नबी हैं, काफिर का ज़िबह किया हुआ जानवर हलाल उसका खाना जाइज़ है। मर्द एक वक़्त में जितनी औरतों से चाहे निकाह कर सकता है उसकी हद नहीं कि चार ही हों। मनी पाक है, मुता (कुछ वक़्त के लिए निकाह करना) जाइज़ है वग़ैरा (इज़हारूलहक़ पेज 4 ता 18, फ़तावा रिज़्विया जिल्द 9 पेज 41, ग़ैर मुक़ल्लिदों के फ़रेब पेज 59 ता 64)

सवाल – तबलीग़ी जमाअत किसे कहते हैं और उनका अक़ीदा क्या है?

जवाब – तबलीग़ी जमाअत वहाबी देवबन्दी ही की एक शाख़ है, उसके बानी मौलवी इलयास कांधुलवी हैं उनकी जमाअत का मक़सद सिर्फ अशरफ़ अली थानवी और रशीद अहमद गंगोही वग़ैरा की काफ़िर बनाने वाली तालीम फैलाना और राइज करना है और सुन्नी मुसलमानों को वहाबी बनाना है। लेकिन इस जमाअत के प्रचार करने वाले सीधे–सादे लोगों को धोका देने के लिये यह कहा करते हैं कि तबलीग़ी जमाअत का यह तरीक़ा नबियों और सहाबियों का तरीक़ा है। यह उनका साफ़ झूठ और निहायत शर्मनाक धोका है उनके अक़ीदे वही हैं जो अशरफ़ अली थनवी के थे।

(फ़तावा फैज़ुर्रसूल जिल्द 1 पेज 43 तबलीग़ी जमाअत पेज 12)

सवाल – मौदूदी किसे कहते हैं और उनका अक़ीदा क्या है?

जवाब – अबुलओला मौदूदी के मानने वालों को मौदूदी कहते हैं इसी का दूसरा नाम जमाअते इसलामी भी है। उनका दावा तो इस्लाम की तबलीग़ और प्रचार है मगर हक़ीकत में उनकी तहरीक इस्लाम में फितना डालना और मुसलमानों के दरमयान फर्क पैदा करना और कुफ्र पैदा करना और काफ़िर बनाना है

वह इस्लाम के मअ़ना ही अलग बताते हैं। आम मुसलमानों को मुसलमान नहीं समझते बल्कि जिहालत के साथ मुसलमान होना ही ना मुम्किन बताते हैं। उनका अक़ीदा यह भी है कि नबी अपनी कोशिश के साथ खुदा को पहचानते हैं, नबियों के नफ़्स भी शरारत करने वाले होते हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बहुत बड़ा गुनाह सरज़द हो गया था। वग़ैरा (मौदूदी मज़हब, इक़बाल अहमद नूरी पेज 126, मौदूदी मज़हब, काज़ी मज़हर हुसैन पेज 20-22)

सवाल – एहले कुरान किसे कहते हैं और उनका अक़ीदा क्या है?

जवाब – एहले कुरान एक मुर्तद व गुमराह फिरक़ा है, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की पैरवी का इन्कार करता है तमाम हदीसों को साफ़–साफ़ झूठ, ग़लत और अमल करने के क़ाबिल नहीं बताता है। सिर्फ कुरान मजीद की पैरवी का दावा करता है। इस फिरके का बानी अब्दुल्लाह चकड़ालवी है, जिसने अपनी जमाअत के लिए एक नई नमाज़ गढ़ी जो मुसलमानों की नमाज़ से बिल्कुल अलग है। रात और दिन में। सिर्फ तीन वक़्त की नमाज़ रखी और हर वक़्त में फ़क़त दो ही रकअ़तें, उनका अ़क़ीदा है कि मुसलमानों की मौजूदा नमाज़े कुरान के मुताबिक नहीं हैं, सिर्फ कुरान की सिखाई हुई नमाज़ पढ़नी फ़र्ज़ है। इसके इलावा कोई और नमाज़ पढ़नी कुफ़् व शिर्क है। एक अक़ीदा यह भी है कि मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम किसी नबी या रसूल से अफ़ज़ल नहीं। वग़ैरह

(हाशिया फ़तावा रिज़विया जिल्द 1 पेज 191, मज़ाहेबुल इस्लाम पेज 680)

सवाल – क़ादयानी क़िसे कहते हैं और उनका अक़ीदा क्याा है?

जवाब – क़ादयानी एक शैतानी और मुर्तद फ़िरका है जो मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी की पैरवी करता है। उसने अपने नबी

और रसूल होने का दावा किया अपने कलाम को खुदा का कलाम बताया, खातिमुन्नबिय्यीन (आख़री नबी) में इस्तिसना की पच्चर लगाई, नबियों की शान में निहायत बेबाकी के साथ गुस्ताखियाँ कीं खासतौर से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी माँ हज़रत मरयम के बारे में बकवास व खूराफ़ात और गन्दी बातें कहीं जिनके ज़िक्र से मुसलमान कादिल दहल जाता है। उनका अक़ीदा यह है कि (1)मैं वही अहमद हूँ जिसकी खुश्खबरी कुरान पाक में दी गई है। (2)मैं हदीस बयान करने वाला मुहद्दिस हूँ और मुहद्दिस भी एक मअ़ना से नबी होता है। (3)सच्चा खुदा वही है जिसने क़ादयान में अपना रसूल भेजा (4)बराहीने अहमदया में इस आजिज़ का नाम उम्मती भी रखा है और नबी भी (5)मैं कुछ नबियों से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) हूँ (6)अपने बारे में लिखा "इब्ने मरयम के ज़िक्र को छोड़ो उससे बहतर गुलाम अहमद है वग़ैरा। (अस्सूउ वल एक़ाब अललमसीहिल कज़्ज़ाब पेज 26-37 बहारे शरीअत हिस्सा अव्वल पेज 57)

सवाल – राफ़ज़ी किसे कहते हैं और उनका अक़ीदा क्या है?

जवाब – राफ़ज़ी एक गुमराह फिरका है, जो तीनों खालिफा यानी हज़रत अबु बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उसमाने ग़नी, रदियल्लाहु अनहुम की खिलाफ़ते राशिदा को छीनी हुई खिलाफ़त कहते हैं और हज़रत अबुबक्र व हज़रत उमर और दूसरे सहाबए किराम को गालियाँ देते हैं और हज़रत मौला अली को तमाम सहाबा से बहतर बताते हैं, उनका अक़ीदा यह है कि-(1)मौजूदा कुरान ना मुकम्मल है, इसमें से कुछ सूरतें हज़रत उसमान ग़नी या दूसरे सहाबए किराम ने घटा दीं, कोई कहता है कुछ आयतें कम कर दीं कोई कहता है कुछ लफ़्ज़

बदल दिऐ वग़ैरा। (2)हज़रत अली और दूसरे इमाम हज़रत पहले नबियों से अफ़ज़ल हैं (3)नेकियों का पैदा करने वाला अल्लाह है और बुराइयों का पैदा करने वाला खुद इन्सान है। (4)12 इमाम मासूम हैं। (5)अल्लाह तआ़ला पर असलह वाजिब है यानी जो काम बन्दे के लिऐ फायदे मन्द है अल्लाह पर करना वजिब है वग़ैरा। (फ़तावा रिज़विया जिल्द 9 पेज 99-401, फ़तावा अज़ी ज़िया जिल्द 1 पेज 188, बहारे शरीअत हिस्सा अव्वल पेज 61)

सवाल – खरिजी किसे कहते हैं और उनका अक़ीदा कया है?

जवाब – खरिजी एक गुमराह फ़िरका है जो जंगे सफ़फ़ेन के मौके पर ज़ाहिर हुआ वजह यह हुई कि यह लोग हज़रत अली के साथ मिलकर हज़रत अमीरे मआविया से जंग कर रहे थे, दौराने जंग ही हज़रत अमीर मआविया और हज़रत अली के दरमयान सुलह की बात चीत होने लगी, तो यह लोग यह कहकर "ला हुक-म-इल्लल्लाह" यानी (अल्लाह के सिवा किसी का हुक्म नहीं) हज़रत अली से जुदा हो गऐ और आप पर तबर्रा करने लगे और बग़ावत पर उतर आऐ। यहाँ तक कि अब यह लोग उन सहाबियों की जिन्हों ने आपस में लड़ाइयाँ लड़ीं जैसे हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत उसमान, हज़रत अली, हज़रत अमीर मआविया, हज़रत उमर बिन आस को काफ़िर कहते हैं और मुसलमानों के खून और उनके माल को जाइज़ समझते हैं। उनका अक़ीदा यह भी है कि गुनाहे कबीरा (बड़े गुनाह) का करने वाला काफिर है। (2)क्यास और इजमाअ़ कोई दलील नहीं बल्कि इन दोनों का इन्कार करते हैं। (3)इमामे वक़्त पर खुरूज व क़िताल जाइज़ है। (4)इमाम का करशी होना ज़रुरी नहीं इन्साफ़ करने

वाला होना काफ़ी है वग़ैरा। (रद्दुलमुहतार) जिल्द 3 पेज 319, फ़तावा अज़ीज़िया जिल्द 1 पेज 107 मज़ाहेबुल इस्लाम पेज 456-470)

सवाल – तफ़जीली किसे कहते हैं और उनका अक़ीदा क्या है?

जवाब – हज़रत अली से मुहब्बत करने वालों में से उन लोगों को कहते हैं जो हज़रत मौला अली को हज़रत अबु बक्र और हज़रत उमर पर फज़ीलत देते हैं और हज़रत अली को उनसे अफ़ज़ल मानते हैं बाक़ी तमाम बातों में एहले सुन्नत व जमाअत के साथ है एहले सुन्नत व जमाअत के नज़दीक ऐसा अक़ीदा रखने वाला बिदअती व गुमराह है।

(फ़तावा अज़ीज़ि जिल्द 1 पेज 183, इजहारुल हक़ पेज 180)

सवाल – एहले किबला किन लोगों को कहते हैं?

जवाब – उन लोगों को कहते हैं जो कलमा गो होकर हमारे किबले की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ते हों और तमाम दीन की ज़रूरी बातों की तसदीक़ करते हों, यानी उन तमाम बातों को मानते हों जिनका सुबूत शरीअत से यकीनी और मश्हूर है, जैसे दुनिया के लिऐ हुदूस जिसमों के लिऐ हश्र (मरने के बाद उठना) खुदा के लिऐ कुल्लियात व जुज़यात का इल्म, नमाज़, रोज़ा, का फ़र्ज़ होना वग़ैरा। जो शख़्स इनमें से किसी बात का इन्कार करे वह एहले किबला नहीं अगरचे इबादतों की परेशानी बरदाशत करता हो। (शरह फिक्हे अकबर लिअली क़ारी पेज 154, निबरास 572)

सवाल – इन बयान किये गये फिरकों के लिये क्या हुक्म है, आया उनके साथ मेल जोल रखना जाइज़ है?

जवाब – वहाबी, देवबन्दी, राफ़ज़ी, तबर्राई, क़ादयानी, मौदूदी चकड़ालवी, गैर मुक़ल्लिद जो भी दीन की ज़रुरी बातों में से किसी चीज़ का इन्कार करने वाला है, सब काफ़िर व मुर्तद हैं।

और जो कोई उनकी लानत वाली बातों पर आगाह होकर उनके कुफ्र में शक करे वह भी काफ़िर है। उनके साथ मेल जोल रखना खाना पीना, सलाम व कलाम, इसी तरह मौत व ज़िन्दगी में शरीक होना वग़ैरा सब नाजाइज़ व हराम है।

(फ़तावा रिज़विया जिल्द 1 पेज 191 जिल्द 6 पेज 95)

सवाल – ईमान किसे कहते हैं?

जवाब – जिन बातों का पेश करना हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यक़ीनी और क़तई तौर पर साबित है उन बातों की तसदीक़ का नाम ईमान है। (शरह फिक्हे अकबर लिअलीक़ारी पेज 86)

सवाल – क्या ईमान कमी-ज़्यादती कुबूल करता है?

जवाब – नहीं। अस्ल ईमान दिल की तसदीक़ है और तसदीक़ एक कैफ़ (हालत) है यानी एक हालते इज़आनिया जो मिक़दार के एतेबार से कमी ज़्यादती कुबूल नहीं करती अलबत्ता उसमें कमज़ोरी और शिद्दत होती है।

(शरह अक़ाइद पेज 93, बहारे शरीअ़त 1 पेज 45)

सवाल – कुफ़्र किसे कहते हैं?

जवाब – जिन बातों का पेश करना हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से क़तई व यकीनी तौर पर साबित है उनमें से किसी एक बात का इन्कार करना कुफ़्र है। (बेज़ावी शरीफ़ पेज 23)

सवाल – शिर्क किसे कहते हैं?

जवाब – अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी दूसरे के वुजूद को वाजिब मानना या किसी और को इबादत के लायक़ समझना शिर्क है। (शरह अक़ाइद पेज 61)

हज़रत शेख़ अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी फरमाते हैं कि शिर्क तीन किस्म पर है, एक तो यह कि अल्लाह के इलावा

किसी और के वुजूद को वाजिब माने दूसरे यह कि खुदा के सिवा किसी और को पैदा करने वाला माने, तीसरे यह कि खुदा के सिवा किसी और को भी इबादत के लायक समझे।

(अशिअअतुललमआत जिल्द 1 पेज 72)

सवाल – मुहाल की कितनी किसमें हैं?

जवाब – मुहाल की तीन किसमें हैं, मुहाले अक़ली, मुहाले शरई मुहाले आदि। मुहाले अक़ली कुदरत के अन्दर दाख़िल नहीं। (अलमुअतक़ दुलमुन्तक़द पेज 29-30)

सवाल – क्या अल्लाह तआ़ला की कुदरत सिर्फ़ मुमकिन चीज़ो से मुतअल्ल्कि है?

जवाब – जी हाँ सिर्फ मुमकिन चीज़ो से मुतअल्लिक है वाजिब और मुहाल चीज़ों से नहीं। (सावी 1पेज 276)

सवाल – क्या अल्लाह तआ़ला वाजिब और मुहाल चीज़ों का इरादा भी नहीं करता?

जवाब – नहीं, इरादे का तअल्लुक सिर्फ़ मुमकिन चीज़ों से है, वाजिब और मुहाल से नहीं। (सावी 1 पेज 14)

सवाल – जब अल्लाह तआ़ला की कुदरत वाजिब और मुहाल से मुतअल्लिक़ नहीं तो क्या अल्लाह तआ़ला की कुदरत अधूरी है?

जवाब – नहीं, अधूरी तो जब होती कि कोई चीज़ कुदरत के अन्दर दाखिल होती और फिर न कर सके। यहाँ ऐसा नहीं है क्योंकि वाजिब और मुहाल में तो कुदरत के तअल्लुक की बिल्कुल सलाहियत ही नहीं लिहाज़ा कुदरत के अधूरा होने का सवाल ही नहीं होता। (फ़तावा रिज़विया 6 पेज 215)

सवाल – क्या मुश्रिकों की बख़्शिश हो सकती है?

जवाब – मुश्रिकों की बख़्शिश अक़्ल के ऐतेबार से मुमकिन है और शरीअत के लिहाज़ से मुहाल है। (सुबहानुस्सुबबूह 82)

सवाल – क्या काफ़िर का जन्नत में दाख़िल होना मुमकिन है?

जवाब – जमहूर एहले सुन्नत के नज़दीक शरीअत के एतेबार से मुहाल है और अक़्ल के ऐतेबार से मुमकिन है।(सुबहानुस्सुबबूह पेज 82)

सवाल – क्या अल्लाह तआ़ाला को दुनिया में ज़ाहिर आँख से देखना मुमकिन है?

जवाब – हाँ अकलन और शरअन दोनों ऐतेबार से मुमकिन है। अलबत्ता हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के सिवा किसी और ने नहीं देखा सिर्फ हमारे नबी ने मेराज की रात में अपनी ज़ाहिर आँख से अल्लाह का दीदार फ़रमाया। (अशिअ्अतुललमआत जिल्द 4 पेज 424, फ़तावा हदीसीया पेज 108, मुनब्बिहुल मुनियह पेज 6)

सवाल – यह दीदार कितनी बार हुआ?

जवाब – सिर्फ दो बार हुआ, पहली बार सिदरतुल मुन्तहा पर और दूसरी बार अर्शे आज़म पर। (अशिअअ्तुल्लमआत जिल्द 4 पेज 429, मवाहिबे लदुन्निया जिल्द 2 पेज 35)

सवाल – क्या आखिरत (मरने के बाद) में मोमिन और काफ़िर सब को खुदा का दीदार होगा?

जवाब – हाँ हश्र के मैदान मे सब को दीदार होगा लेकिन मोमिनों को रहमो करम की हालत में और काफ़िरों को गुस्सा और ग़ज़ब की हालत में। फिर उसके बाद काफ़िर हमेशा के लिए इस नेमत से महरुम कर दिऐ जाऐंगे ताकि अफ़सोस और ग़म ज़्यादा हो। (तकमीलुल ईमान पेज 6 अशिअ अतुल्लमआत जिल्द 4 पेज 425, शरह फ़िक़्हे अकबर बहरुल उलूम पेज 66)

सवाल – क्या सारे मोमिन इस नेमत के मिलने में बराबर होंगे

या अलग-अलग?

जवाब - हर एक अपने-अपने नामा ए आमाल के ऐतेबार से इस नेमत के पाने में अलग-अलग होंगे। आम मोमिनों को हर जुमे के दिन और ख़ास मोमिनों को हर सुबह व शाम दीदार होगा और उनसे भी ख़ास जो जन्नते अदन में रहेंगे हमेशा क़रीब होगें और उसके ख़ास जलवों की नेमत हासिल होगी।

(तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 पेज 100 तकमीलुल ईमान पेज 5)

सवाल - अल्लाह तआ़ला के नाम कितने हैं?

जवाब - अल्लाह के नामों की कोई गिन्ती और शुमार नहीं है कि उसकी शान की कोई हद नहीं मगर इमाम राज़ी ने अपनी किताब तफ़सीरे कबीर में 5000 नामों का ज़िक्र किया है, जिनमें से कुरान में एक हज़ार, तौरेत में एक हज़ार, इन्जील में एक हज़ार, ज़ुबूर में एक हज़ार और लौहे महफूज़ में एक हज़ार हैं। (तफ़सीरे कबीर जिल्द 1 पेज 119, अहकामे शरीअत हिस्सा दोम पेज 157)

सवाल - तमाम नामों में कौनसा लफ़्ज़ ज़्यादा मशहूर व मारुफ़ है?

जवाब - लफ़्ज़े "अल्लाह" ज़्यादा मश्हूर व मारुफ़ है।

(ख़ाज़िन जिल्द 2 पेज 262)

सवाल - क्या अल्लाह तआ़ला को सख़ी (दानी) आक़िल (बुद्धिवान) तबीब (हकीम, डाक्टर) वग़ैरह लफ़्ज़ों के साथ बोल सकते हैं?

जवाब - नहीं अल्लाह तआ़ला के सारे नाम तौक़ीफ़ी है, अल्लाह तआ़ला को उन्हीं लफ़्ज़ों से पुकार सकते हैं जिनका इस्तेमाल कुरान व हदीस या इजमाऐ उम्मत से साबित है जैसे लफ़्ज़े "खुदा" कि इसका इस्तेमाल अगरचे कुरान व हदीस में नहीं है लेकिन इजमा ए उम्मत से साबित है।

(ख़ाज़िन जिल्द 2 पेज 262, निबरास पेज 173)

सवाल – अल्लाह तआ़ला के लिए हर जगह हाज़िर व मौजूद है कहना कैसा है?

जवाब – अल्लाह तआ़ला जगह से पाक है, यह लफ़्ज़ बहुत बुरे मअ़ना का एहतेमाल रखता है, इससे बचना लाज़िम है।

(फ़तावा रिज़विया जिल्द 6 पेज 132)

सवाल – अल्लाह तआ़ला को अल्लाह मियाँ कहना कैसा है?

जवाब – अल्लाह मियाँ कहना मना है, लफ़्ज़ मियाँ के तीन माना हैं, (1) मालिक (2) शौहर (3) ज़िना का दलाल इनमें बाद वाले दो ऐसे माने हैं जिनसे अल्लाह की शान पाक और बरी है और पहले वाले माना सही हो सकते हैं। तो जब लफ़्ज़ दो बुरे माना और एक अच्छे माना में शरीक हुआ तो उसका अल्लाह के लिऐ बोला जाना ग़लत होगा।

(अलमलफूज़ हिस्सा 1 पेज 116)

सवाल – मुहम्मद नबी, अहमद नबी, नबी अहमद, नाम रखना कैसा है?

जवाब – हराम है कि इनमें हकीकत में नुबुव्वत का दावा अगरचे नहीं पाया जाता मगर सूरत और लफ़्ज़ों के ऐतेबार से दावा ज़रुर है, और यह गुमान करना कि नामों में पहले माना मुराद नहीं होते न शरीअ़त में ऐसा कहीं है और न आम बोल चाल की जुबान में। इसी तरह यासीन, व ताहा नाम रखना मना है। यूँ ही ग़फूरुद्दीन, वग़ैरह नाम भी सख़्त ग़लत व बुरे हैं।

(फ़तावा रिज़विया जिल्द 9 पेज 201-202)

अंबिया ए किराम का बयान

सवाल – नबी और रसूल किसे कहते हैं?

जवाब – नबी वह इन्सान है जिनकी तरफ़ अल्लाह की वही (यानी पैग़ाम) आती हो चाहे वह तबलीग़ (प्रचार) पर मामूर हो या न हो। रसूल उस शख़्स को कहते हैं। जिसकी तरफ़ अल्लाह की वही भी आती हो। और तबलीग का भी हुक्म दिया गया हो।

(अलमोअ़तक़दुल मुन्तकद पेज 103, अलमोतमदुल मुस्तनद पेज 113)

सवाल – सब नबी कितने हैं?

जवाब – कम या ज़्यादा एक लाख चौबीस हज़ार।

(मवाहिब लदुन्निया जिल्द 2 पेज 46)

सवाल – उनमें रसूल कितने है?

जवाब – तीन सौ तेरह (313) (मवाहिबलदुन्निया जिल्द 2-46) या तीन सौ पन्द्रह (315) (तबक़ाते इब्ने सअद जिल्द 1 पे 14)

सवाल – कुरान में कितने नबियों के नाम लिखे हैं?

जवाब – कुल 26 नाम साफ़-साफ़ लफ़्ज़ों में लिखें हैं, (1)हज़रत आदम (2)हज़रत इदरीस (3)हज़रत नूह (4)हज़रत हूद (5)हज़रत सालेह (6)हज़रत लूत (7)हज़रत इब्राहीम (8)हज़रत इस्माईल (9)हज़रत इसहाक़ (10)हज़रत याक़ूब (11)हज़रत यूसुफ़ (12)हज़रत जुलकिफ़्ल (13)हज़रत शुऐब (14)हज़रत मूसा (15)हज़रत हारुन (16)हज़रत अलयसअ् (17)हज़रत इलयास (18)हज़रत युनूस (19)हज़रत उज़ेर (20)हज़रत दाऊद (21)हज़रत सुलेमान (22)हज़रत अय्यूब (23)हज़रत ज़करया (24)हज़रत यहया (25)हज़रत ईसा

अलैहिमुस्सलाम (26) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम। और तीन का बयान इशारे के तरीके पर हुआ है। हज़रत शमवील हज़रत युशअ और खिज़्र अलैहेमुस्सलाम।

(तफ़सीरे अहमदी पेज 5, फ़तावा रिज़विया जिल्द 6 पेज 61)

सवाल – इनमें कितने नबी बहुत ज़्यादा मरतबे वाले हुऐ हैं?

जवाब – पाँच, हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा, और इनमें भी सबसे बड़े हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम। (शरह फ़िक्हे अकबर लिअलीक़ारी पेज 116)

सवाल – काफ़िरों की तरफ़ सबसे पहले कौनसे रसूल भेजे गऐ?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम।(उम्दतुलक़ारी जिल्द 7 पेज 436)

सवाल – क्या तमाम नबियों का एक दीन था?

जवाब – हाँ लेकिन सब की शरीअत अलग–अलग और आमाल भी जुदा–जुदा थे।

(ख़ाज़िन जिल्द 2 पेज 50 अशिअतुल लमआत 4 पेज 458)

सवाल – क्या अम्बियाऐ किराम भी किसी की उम्मत हैं?

जवाब – हाँ तमाम नबी और रसूल अपने ज़मानों में भी और अब भी हुज़ूर के उम्मती हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम नबियों के नबी हैं। (मवाहिब लदुन्निया जिल्द 2 पेज 52, ज़रक़ानी जिल्द 6 पेज 164, फ़तावा रिज़विया जिल्द 9 पेज 12)

सवाल – बनी इस्राईल के सबसे पहले और आख़री नबी कौन हैं?

जवाब – बनी इस्राईल के सबसे पहले नबी हज़रत युसूफ़ अलैहिस्सलाम और आख़री नबी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हैं। (ख़ाज़िन जिल्द 1 पेज 294, सावी जिल्द 1 पेज 139)

नोटः– हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की औलाद को बनी इस्राईल कहते हैं। (तफ़सीर अज़ीज़ी सू॰ बकर 176)

सवाल – अरब क़ौम में कितने नबी पैदा हुऐ?

जवाब – अरब क़ौम में चार नबी पैदा हुऐ (1)हज़रत हूद (2)हज़रत सालेह (3)हज़रत शुऐब (4)हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहे वसल्लम।

(अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 1 पेज 120 तफ़सीरे नसफ़ी जिल्द 1 पेज 264)

सवाल – नबियों में सबसे ज़्यादा लम्बी उमर किसने पाई?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने। (ख़ाज़िन जि० 1 पेज 518)

सवाल – क्या नबियों से गुनाह होना मुम्किन है?

जवाब – नहीं, तमाम नबी मासूम होते हैं उनसे किसी गुनाह का होना शरीअ़त में मुहाल है। वह हर तरह के छोटे और बड़े गुनाह से महफ़ूज़ होते हैं नबुव्वत के बाद भी और पहले भी।

(शरह फ़िक़हे अकबर लिअली क़ारी पेज 59)

सवाल – अचानक मौत किन-किन नबियों की हुई?

जवाब – सिर्फ तीन नबियों की हुई (1)हज़रत दाऊद अलैहिसलाम (2)हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम (3)हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम। (अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 2 पेज 17)

सवाल – वह कौनसे नबी हैं जिनका नाम पैदा होने से पहले रख दिया गया?

जवाब – आख़री नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम (2)हज़रत यहया अलैहिस्सलाम (3)हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम (4)हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम (5)हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम (अलइतकान जिल्द 2 पेज 141)

सवाल – वह कौन से नबी है जिनके दो नाम रखे गऐ?

जवाब – हुज़ूर सल्लल्लहु अलैहे वसल्लम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हमारे नबी का नाम मुहम्मद और अहमद हज़रत

ईसा अलैहिस्सलाम का नाम ईसा और मसीह रखा गया।

(अलइतक़ान जिल्द 2 पेज 141)

सवाल – अरब में कितने नबी भेजे गऐ?

जवाब – पाँच नबी भेजे गऐ (1)हज़रत हुद अलैहिस्सलाम (2)हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम (3)हज़रत इस्माईल अलैहिस्लाम (4)हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम (5)और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लमा (सावी जिल्द 1 पेज 225)

सवाल – किस नबी ने उम्मते मुहम्मदिया में पैदा होने की तमन्ना की थी?

जवाब – मूसा अलैहिस्सलाम (मदारिजुन्नुबुव्वत जिल्द 1 पेज 114)

सवाल – कितने नबी ज़िन्दा हैं जिनको अभी मौत नहीं आई है?

जवाब – चार हैं हज़रत इदरीस और हज़रत ईसा अलैहिमस्सलाम, यह दोनों आसमान पर हैं, हज़रत ख़िज़्र, हज़रत इलयास अलैहिमस्सलाम, यह दोनों ज़मी पर हैं।

(शरह फ़िक़्हे अकबर लिअलीक़ारी पेज 61, ख़ाज़िन जिल्द 4 पेज 204)

सवाल – वह कौनसे नबी हैं जो अपनी ज़िन्दगी में क़ब्रे मुबारक में लेट गऐ और वहीं उनकी रुह कब्ज़ कर ली गई?

जवाब – हज़रत हारुन अलैहिस्सलाम (जज़्बुलकुलूब पेज 55)

सवाल – किन नबियों ने अल्लाह से बिला वास्ते बात-चीत की?

जवाब – हज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम (सावी जिल्द 3 पेज 27)

सवाल – वह कौन से नबी हैं जिनके लिये मकड़ी ने जाला तना और वह दुश्मन की शरारत से महफ़ूज़ रहे?

जवाब – एक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम हैं जिनके लिये ग़ारे सौर के दरवाज़े पर मकड़ी ने जाला तना और दूसरे

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम हैं जब उनको तालूत ने क़त्ल करने का इरादा किया तो दाऊद अलैहिस्सलाम एक ग़ार में जा छुपे, जब तालूत को मालूम हुआ तो ग़ार पर तलाश करने गए तो मकड़ी ने जाला तन दिया जिसकी वजह से तलाश में नाकाम रहे। (हयातुल हैवान जिल्द 2 पेज 166)

सवाल – वह कौनसे दो नबी हैं जो क़यामत के दिन एक क़ब्र से उठेंगे?

जवाब – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम। (मिशकात शरीफ़ जिल्द 2 पेज 480)

सवाल – सबसे पहले किस नबी को पैदा किया गया?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को (अलहिदायतुलमुबारकाह 2)

सवाल – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत में कितने दिन रहे?

जवाब – आख़िरत (क़यामत) के आधे दिन के बराबर जिसकी मिक़दार दुनियावी दिनों से पाँच सौ साल है।

(ज़रक़ानी जिल्द 1 पेज 55 तबक़ात इब्ने सअ़द जिल्द 1 पेज 17)

सवाल – हज़रत आदम अलैहिस्लाम जन्नत से कहाँ उतारे गऐ?

जवाब – हज़रत आदम सरान्दीप और हज़रत हव्वा जद्दे में।

(सावी जिल्द 1 पेज 23)

सवाल – फिर दोनों की मुलाकात कहाँ हुई?

जवाब – बकरा ईद के चाँद की नौ तारीख़ को मक़ामे अरफ़ात में हुई। (ख़ाज़िन जिल्द 1 पेज 155)

सवाल – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से निकलने के बाद ग़म में कितने साल तक रोते रहे?

जवाब – तीन सौ साल तक रोते रहे।

(ज़रकानी जिल्द 1 पेज 56, मुदारिजुन्नुबुव्वत जिल्द 2 पेज 5)

सवाल - हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की कुन्नियत (उपाधिनाम) क्या है?

जवाब - ज़मीन में "अबुलबशार" और जन्नत में "अबु मुहम्मद" थी। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरए बक़र पेज 173)

सवाल - वह कौनसे नबी हैं जो दुनिया में हज़ार साल तक रहे मगर कभी ज़मीन का पानी न पिया?

जवाब - हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं कि पूरी ज़िन्दगी बारिश का पानी पीते रहे। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरए बक़र पेज 172)

सवाल - हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में कौन-कौन से नबी पैदा हुऐ?

जवाब - हज़रत शीस अलैहिस्सलाम और हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम (सावी जिल्द 3 पेज 73)

सवाल - हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम को हज़रत आदम का कितना ज़माना मिला?

जवाब - सौ साल, लेकिन नबी होने का एलान करने का हुक्म हज़रत आदम के इन्तिक़ाल के दो सौ साल बाद हुआ। (सावी जिल्द 3 पेज 73)

सवाल - वह कौन से नबी हैं जिनके निकाह का खुतबा खुद खुदा ने पढ़ा और खुदा ही ने निकाह पढ़ाया?

जवाब - हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं। (सावी जिल्द 4 पेज 21, मदारिजुन्नुबुव्वत जिल्द 2 पेज 5)

सवाल - वह कौन से नबी है जिनके निकाह का देन महर हमारे नबी पर दुरुद पढ़ना था?

जवाब - हज़रत आदम अलैहिस्सलाम कि आपके निकाह का देन महर तीन या दस या बीस बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना था। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र

पेज 159 मदारिजुन्नुबुव्वत जिल्द 2 पेज 4, मवाहिबुल लदुनिया जिल्द 1 पेज 10)

सवाल – हज़रत आदम और हज़रत मूसा अलैहिमस्सलाम का मशहूर मुनाज़रा (बहस) कहाँ और किस हालत में हुआ?

जवाब – इसमें इख़्तेलाफ़ हे कुछ के नज़दीक आसमान में रुहों की मुलाकात के वक़्त यह मुनाज़रा हुआ और कुछ के नज़दीक दोनों को आलमे ब़रज़ख़ (मौत के बाद की दुनिया) में ज़िन्दा करके यह मुनाज़रा कराया गया और कुछ के नज़दीक हज़रत आदम को हज़रत मूसा के ज़माने ज़ाहेरी में ज़िन्दा करके यह मुनाज़रा कराया गया। (अशिअ्अतुललमआत जिल्द 1 पेज 88)

सवाल – वह कौन से नबी हैं जिनके निकाह का खुतबा हज़रत जिब्रील ने पढ़ा और फ़रिशते गवाह बने?

जवाब – हज़रत शीश अलैहिस्सलाम।

(ज़रक़ानी जिल्द 1 पेज 65)

सवाल – "हिबतुल्लाह" किस नबी का लक़ब है?•

जवाब – हज़रत शीश अलैहिस्सलाम का। वजह यह है कि जब क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया तो हज़रत जिब्रील ने हज़रत आदम को खुशख़बरी दी कि खुदा ने हाबील के बदले में शीश को अता फ़रमाया।

(तबक़ात इब्ने सअ्द जिल्द 1 पेज 14 सावी जिल्द 1 पेज 242)

सवाल – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का अस्ल नाम क्या है?

जवाब – अस्ल नाम "अख़्नूक" है, इदरीस इसलिये कहते हैं कि उन्होनें सबसे पहले दर्स (सबक) दिया। (सावी 3 पेज 35)

सवाल – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम किस आसमान पर हैं?

जवाब – चौथे आसमान पर (मिश्कात शरीफ़ जिल्द 2 पेज 527)

सवाल – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का अस्ल नाम क्या है?

जवाब – अब्दुलग़फ़्फ़ार या अब्दुल जब्बार नूह के माना हैं बहुत रोने वाला, चूँकि आप अपने नफ़्स बहुत ज़्यादा रोऐ या अपनी उम्मत के गुनाहों पर बहुत रोऐ इसलिये आपका लक़ब नूह पड़ गया। (अलइतकान जिल्द 2 पेज 184 ज़रकानी जिल्द 1 पेज 41)

सवाल – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने कितने साल अपनी कौम को तबलीग़ फरमाई?

जवाब – साढ़े नौ सौ साल (950)

(ख़ाज़िन व मआलिम जिल्द 5 पेज 157)

सवाल – शैखुलअंबिया (नबियों के शेख़) किस नबी को कहा जाता है?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को (किसासुलअंबिया 42)

सवाल – हज़रत आदम और हज़रत नूह के बीच कितने साल का फासिला था?

जवाब – ग्यारह सौ साल का। (सावी जिल्द 2 पेज 27)

सवाल – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को कश्ती बनाना किसने सिखाई?

जवाब – अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा जिन्होंने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को कश्ती बनाना सिखाई। (सावी 3 पेज 96)

सवाल – हज़रत नूह की कश्ती कितने वक़्त में तैयार हुई?

जवाब – दो साल में तैयार हुई, उसकी लम्बाई तीन सौ गज़, चौड़ाई पचास गज़ और ऊँचाई 30 गज़ थी।

(खज़ाइन पेज 326, सावी जिल्द 2 पेज 72)

सवाल – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती कितने तख़्तों से तैयार हुई?

जवाब - एक लाख चौबीस हज़ार तख़्तों से और हर तख़्ते की पीठ पर एक एक नबी का नाम लिखा था और सबसे आख़री तख़्ते की पीठ पर "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" लिखा था।

(नुज़हतुल मजालिस पेज 321)

सवाल - इस कश्ती में कितने दरजे बनाऐ गऐ थे?

जवाब - तीन दरजे बनाऐ गयो थे (1)सबसे नीचे दरजे में जंगली जानवर और शेर, चीते वग़ैरा और साँप, बिच्छु ज़मीन के कीड़े मकोड़े वग़ैरा थे (2)बीच में चौपाऐ वग़ैरा थे (3)सबसे ऊपर दरजे में खुद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और आपके साथी थे। और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का मुबारक जिस्म भी था जो औरतों और मर्दों के बीच में रखा था। खाने पीने का सामान भी इसी में था और परिन्दे भी ऊपर ही के दरजे में थे।

(सावी जिल्द 2 पेज 182 खज़ाइन पेज 326, अलमलफूज़ 1 पेज 73)

सवाल - हज़रत नूह किस तारीख़ में कश्ती पर सवार हुऐ और किस तारीख़ में उतरे?

जवाब - दसवीं रजब को सवार हुऐ दसवीं मुहर्रम को ख़ास जुमे के वक़्त जूदी पहाढ़ पर उतरे कुल छः महीने का वक़्त लगा।

(खजाइन पेज 328)

सवाल - उसमें कितने आदमी सवार थे जो तूफान से महफूज़ रहे?

जवाब - 80 अस्सी आदमी सवार थे जिनमें दो नबी थे, एक हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ताबूत और खुद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम। (जज़बुलकुलूब पेज 51, अलमलफूज़ हिस्सा 1 पेज 73)

सवाल - अबुल अंबिया (नबियों के बाप) किस नबी का लक़ब है?

जवाब - हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह का, वजह यह है कि

आठ नबी हज़रत आदम, हज़रत शीश, हज़रत इदरीस, हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत लूत, हज़रत यूनुस के इलावा बाकी सारे नबी आप ही की नस्ल से हुऐ, आपके दो साहिबज़ादे नबी थे, हज़रत इस्माईल और हज़रत इसहाक़। ज़्यादा तर नबी हज़रत इसहाक़ की नस्ल से हुऐ और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल में सिर्फ़ आख़री नबी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पैदा हुऐ इसलिये हज़रत ख़लील का लकब (पदवी नाम) अबुलअंबिया हुआ।

(मुहाज़िरतुलअवाइल पेज 154, नुज़हतुल कारी जिल्द 6 पेज 501)

सवाल – अबुज़्जैफ़ (महमान नवाज़) किस नबी का लक़ब है?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का।

(तफ़सीर अज़ीज़ी जिल्द 1 पेज 373)

सवाल – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ग़ार में कितने दिन रहे?

जवाब – पन्द्रह दिन, जिसमें दिन एक महीने के बराबर और महीना साल भर के बराबर था (ख़ाज़िन व मआलिम जिल्द 2 पेज 125)

सवाल – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम किस उमर में आग में डाले गऐ?

जवाब – सोलह साल की उमर में।

(शरह फिक़्हे अकबर लिअली क़ारी पेज 130)

सवाल – हज़रत इब्राहीम दुरूद आग में कितने दिन रहे?

जवाब – सात दिन। (शरह फिक़्हे अकबर लिअलीक़ारी पेज 130)

सवाल – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जिस आग में डाला गया था उसके लिऐ कितने दिनों तक लकड़ियाँ जमा की गई थीं और कितने दिनों तक दहकाया गया था?

जवाब – एक महीने लकड़ियाँ जमा की गई और सात दिन दहकाया गया। (सावी 3 पेज 96)

सवाल – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में डालते वक़्त कौनसा लिबास पहनाया गया और किसने पहनाया?

जवाब – रेशमी क़मीज थी जिसे हज़रत जिब्राइल अलैहिस्सलमा ने पहनाया था और यह जन्नत से लाई गई थी। (सावी 3 पेज 96)

सवाल – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उम्मतेमोहम्मदिया को कब सलाम कहलवाया?

जवाब – जब आखरी नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम मैराज शरीफ़ के लिये तशरीफ़ ले जाने लगे और आसमान पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मुलाकात हुई तो उस वक़्त उन्होंने आपकी मारेफ़त आपकी उम्मत को सलाम कहलवाया।

(मिशकात शरीफ़ जिल्द 1 पेज 202)

सवाल – हज़रत इब्राहीम और हज़रत नूह अलैहिमस्सलाम के दरमयान कितने साल का फासिला था?

जवाब – एक हज़ार साल का (सावी जिल्द 2 पेज 27)

सवाल – किस नबी को अबुल अरब (अरब वाले) और किस नबी को (अबुलअजम (ग़ैर अरब वाले) कहा जाता है?

जवाब – हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को अबुल अरब और हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम को अबुल अजम कहा जाता है। (सावी जिल्द 1 पेज 225)

सवाल – हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम में ज़बीहुल्लाह कौन हैं?

जवाब – हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलामा हैं

(रद्दुलमोहतार जिल्द 1 पेज 587 ज़रक़ानी जिल्द 1 पेज 97)

रूहुल बयान जिल्द 3 पेज 313 अल बिदाया वन निहाया जिल्द 1 पेज 158 सीरते हल्बी जिल्द 1 पेज 43

सवाल – इन दोनों में उमर के एतेबार से बड़े कौन थे?

जवाब – हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम, हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम से चौदह 14 साल बड़े थे।

(तफ़सीरे अज़ीज़ी सूरऐ बकर पेज 401, अलइतक़ान जिल्द 2 पेज 138)

सवाल – हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का लक़ब क्या था?

जवाब – इस्राईल, यह सुरयानी ज़ुबान का लफ़्ज़ है जो "इसरा" और "ईल" दो लफ़्ज़ों से बना है, इसरा का माना है "अ़ब्द" और "ईल" का माना है "अल्लाह" यानी अब्दुल्लाह।

(तफ़सीरे नसफ़ी जिल्द 1 पेज 44 तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 176)

सवाल – हज़रत याकूब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की जुदाई में कितने साल तक रोते रहे?

जवाब – तक़रीबन अस्सी साल तक (ख़ज़ाइन पेज 355)

सवाल – हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम मिश्र में कितने साल रहे?

जवाब – 24 साल (खज़ाइन पेज 357)

सवाल – हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दरमयान कितने साल का फासला था?

जवाब – 965 साल का। (सावी जिल्द 2 पेज 27)

सवाल – हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कुऐं में कितने दिन रहे?

जवाब – तीन दिन। (ख़ाज़िन व मआलिम 3 पेज 219)

सवाल – किस उमर में डाले गऐ?

जवाब – बारह साल की उमर में (अलइतक़ान 2 पेज 138)

सवाल – हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम क़ैद ख़ाने में कितने दिन रहे?

जवाब – 12 साल। (खजाइन पेज 347)

सवाल – हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने मिश्र में कितने साल हुकूमत की?

जवाब – नव्वे 90 साल। (सावी 3 पेज 202)

सवाल – ख़तीबुल अंबीया (नबीयों को खिताब करने वाले) किस नबी का लक़ब है?

जवाब – हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम का, चूँकि आप बहुत फसीह व बलीग़ कलाम फरमाया करते थे इसलिये आपका लक़ब ख़तीबुल अंबिया हुआ। (खाज़िन जिल्द 2 पेज 215)

सवाल – किस नबी का सब्र मशहूर है?

जवाब – हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का। (कुरान पाक सूरऐ सौद)

सवाल – हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम कितने दिन इम्तेहान व आज़माइश में मुब्तिला रहे?

जवाब – सात साल या अठारह साल।

(उम्दतुलक़ारी जिल्द 7 पेज 388, खाज़िन जिल्द 4 पेज 254)

सवाल – हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का इम्तेहान कैसा था?

जवाब – अल्लाह तआला ने पहले आपको हर तरह की नेमतें अता की थीं, सूरत की खूबसूरती भी, ज़्यादा औलाद भी, और माल भी बहुत ज़्यादा। मगर औलाद मकान के गिरने से दबकर ख़त्म हो गई, तमाम जानवर जिनमें हज़ारों ऊँट ओर बकरियाँ थीं बीमार होकर खत्म हो गए। इसी तरह तमाम खेतियाँ, और बाग़ात भी तबाह हो गऐ, कुछ भी बाकी न रहा फिर आप बीमार पड़े तमाम बदन में आबले पड़ गऐ और आपका जिस्म शरीफ ज़ख्मों से भर गया, सब लोगों ने आपका साथ छोड़ दिया सिर्फ आपकी बीबी साहिबा आपके साथ रहीं और वही खिदमत करती रहीं सालों साल यही हालत रही, फिर अल्लाह तआला

ने आपकी दुआ क़बूल फरमाई और सारी तकलीफ़ें दूर फरमादीं यहाँ तक कि तमाम औलाद को ज़िन्दा फरमा दिया और इतनी ही औलाद और इनायत की यही आपका इम्तेहान था।

(सावी जिल्द 3 पेज 72, खज़ाईन पेज 476)

सवाल – हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को किसदिन उनकी माँ ने दरया में डाला?

जवाब – जुमे के दिन। (हयातुल हैवान जिल्द 2 पेज 26)

सवाल – आपकी माँ ने जिस सन्दूक में बन्द करके आपको दरया में डाला था वह सन्दूक कितने दिन पानी में बहकर फिरऔ़न के महल तक पहुँचा?

जवाब – तीन दिन में। (नुज़हतुल मजालिस 2 पेज 419)

सवाल – हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़ुबान में लुकनत क़ब पैदा हुई?

जवाब – जब आप की उमर तीन साल की थी तो फिरऔ़रन एक दिन गोद में आपको खिला रहा था कि अचानक आपने उसके चहरे पर थप्पड़ मार दिया, जिससे फिरऔ़न घबरा गया कि शायद यह वही बच्चा है जो मेरी हुकूमत को बर्बाद कर देगा। फिरऔन ने आपको क़त्ल करना चाहा, लेकिन फिरऔन की बीवी आसिया ने यह कहकर टाल दिया कि अभी बच्चा है उसमें अक़ल व शऊर कहाँ है हज़रत आसिया ने फिरऔ़न की तसल्ली के लिये एक तरफ़ आग का तबक़ रखा और दूसरी तरफ़ हीरे और जवाहरात का तबक़ रखा फिरऔ़न से कहा देख अगर इस बच्चे में अक़्ल व शऊर होगा तो अपना हाथ हीरे-जवाहरात की तरफ़ बढ़ाऐगा वरना आग की तरफ़। हज़रत मूसा ने अपना हाथ हीरे जवाहरात की तरफ़ बढ़ाना चाहा

लेकिन हज़रत जिब्राईल ने आपका हाथ पकड़कर आग में डाल दिया और आपने उसमें से एक अंगारा उठाकर अपने मुँह में रख लिया जिससे आपकी ज़ुबान जल गई और उसी दिन से आपकी ज़ुबान में लुकनत पैदा हो गई।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 201, ख़ाजिन जिल्द 4 पेज 217)

सवाल – हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फिरऔन के घर कितने दिन रहे?

जवाब – 30 साल। (ख़ाज़िन व मआलिम जिल्द 5 पेज 137 तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 203)

सवाल – हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हज़रत शुऐब के पास कितने दिन रहे?

जवाब – 10 साल। (ख़ाज़िन व मआलिम जिल्द 5 पेज 142 तफ़सीरे अज़ीज़ी सूरऐ बक़र-पेज 203)

सवाल – हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मुक़ाबला कितने जादूगरों से हुआ था?

जवाब – अस्सी हज़ार से। (सावी जिल्द 3 पेज 79)

सवाल – क्या सब जादूगर आप पर ईमान ले आऐ थे?

जवाब – हाँ सब के सब ईमान ले आऐ थे।

(तफ़सीरे नईमी पारा 11 पेज 465)

सवाल – अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा से तूर पहाड़ पर किस दिन बात-चीत फ़रमाई?

जवाब – बक़राईद की नौ तारीख़ को जुमेरात के दिन।

(सावी जिल्द 2 पेज 84)

सवाल – हज़रत मूसा और हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के दरमयान कितने साल का फासला था?

जवाब – चार सौ साल का (सावी जिल्द 1 पेज 28)

सवाल – हज़रत हारुन हज़रत मूसा से कितने साल बड़े थे?

जवाब – चार साल। (जुमल जिल्द 3 पेज 67)

सवाल – हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने कितने साल हुकूमत की?

– 40 साल। (अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 2 पेज 16)

सवाल – हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम जुबूर मुकद्दस कितनी आवाज़ों में पढ़ा करते थे?

जवाब – सत्तर आवाज़ों में पढ़ते थे।

(अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 2 पेज 16)

सवाल – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को अपनी उमर में से कितने साल अता किये थे?

जवाब – चालीस साल और कुछ के नज़दीक साठ साल।

(अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 1 पेज 87-88)

सवाल – अल्लाह तआ़ला ने हज़रत दाऊद अलैस्सिलाम पर किन चीज़ों को उनके बस में कर दिया था?

जवाब – पहाड़ों और परिन्दों (पक्षियों) को। (कुरान सूरऐ सोद)

सवाल – हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की कितनी बीबियाँ थीं?

जवाब – 100 बीबियाँ थीं। (अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 2 पेज 15)

सवाल – जब आपका इन्तेक़ाल हुआ तो आपके जनाज़े के साथ कितने आलिम थे?

जवाब – चालीस हज़ार।

(अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 2 पेज 17)

सवाल – हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दरमयान कितने साल का फ़ासिला था?

जवाब – 599 साल का। (सावी जिल्द 2 पेज 27)

सवाल – अल्लाह तआला ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के बस और क़बज़े में किस चीज़ को कर दिया था उसके ज़रीऐ जहाँ चाहते चले जाते थे?

जवाब – हवाओं को। (क़ुरान मुक़द्दस सूरऐ स्वाद)

सवाल – हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने कितने साल हुकूमत की?

जवाब – 40 साल। (ख़ाज़िन व मआलिम जिल्द 5 पेज 235)

सवाल – हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की उंगूठी में क्या लिखा हुआ था?

जवाब – लाइला-ह इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्र रसूलुल्लाह लिखा था। (मवाहिबलदुन्निया जिल्द 2 पेज 47)

सवाल – हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम किस उमर में तख़्त पर बैठे?

जवाब – 13 साल की उमर में (ख़ाज़िन व मआलिम 5 पेज 235)

सवाल – हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की कितनी औरतें थीं?

जवाब – एक हज़ार जिनमें 300 कुंवारियाँ और सात सौ बाँदियाँ थीं। और कुछ के क़ौल की रोशनी में 300 बाँदियाँ और सात सौ आज़ाद बीबियाँ थीं, एक क़ौल यह है कि 400 बीबियाँ और 600 बाँदियाँ थीं। (अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 2 पेज 29)

सवाल – हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का लक़ब क्या है?

जवाब – ज़ुन्नून और साहिबुल हूत। (सावी 3 पेज 73)

सवाल – हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट में कितने दिन रहे?

जवाब – इस बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायतें (हवाले) हैं तीन दिन, या सात दिन, या चौदह दिन या चालीस दिन।

(हयातुलहैवान 2 पेज 373, ख़ाजिन व मआलिम 4 पेज 258)

सवाल – हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने मछली के पेट में कौनसी दुआ पढ़ी थी जिससे मछली के पेट से बाहर निकल आऐ थे?

जवाब – लाइला-ह इल्ला अन-त सुबहा-न-क इन्नी कुन्तु मिन्ज़्ज़ालिमीन। (कुरान सूरए अंबिया)

सवाल – वह कौनसे नबी हैं जो बचपन में इन्तेक़ाल होने के बाद फिर एक नबी की दुआ से ज़िन्दा हो गऐ थे?

जवाब – वह हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम हें जो बचपन में इन्तेक़ाल फरमा गऐ थे फिर चोदह दिन के बाद हज़रत इलयास अलैहिस्सलाम की दुआ से ज़िन्दा हो गऐ।

(सावी जिल्द 3 पेज 73, कससुल अंबिय पेज 179)

सवाल – वह कौनसे नबी हैं जो खुदतो 40 साला जवान थे मगर उनके बेटे 120 साल के और पोते 90 साल के बूढ़े?

जवाब – वह हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलम हैं जो इन्तेक़ाल क सो साल बाद दोबारा जिन्दा किये गये तो जवान थे मगर आपकी औलाद बूढ़ी हो चुकी थी। (तफ़सीर नईमी पेज 83 पारा 3)

सवाल – वह कौनसे नबी हैं। जिन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की उम्मत के हाथों से दफ़्न होने की तमन्ना की थी?

जवाब – वह हज़रत दानियाल अलैहिस्सलाम हैं कि उन्होंने खुदा की बारगाह में दुआ की थी कि उन्हें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की उम्मत दफ़न करे। रिवायत में है कि जब हज़रत अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु ने तस्तर का क़िला फ़तह किया तो उन्होंने हज़रत दान ाल अलैहिस्सलाम को ताबूत में इस हाल में पाया कि उनके तमाम जिस्म और गर्दन की सब रगें बराबर चल रही थीं फिर आपने उनको दफन

किया। हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया था जो हज़रत दानयाल अलैहिस्सलाम का पता बता दे उसको जन्नत की खुशख़बरी देना।

(अलबिदाया वन्निहाया 2 पेज 41, नुज़हतुल मजालिस 2 पेज 92)

सवाल – हज़रत ज़करया अलैहिस्सलाम कब शहीद किये गऐ?

जवाब – हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की शहादत के एक दिन बाद। (तफ़सीर नईमी जिल्द 7 पेज 655)

सवाल – हज़रत ज़करया अलैहिस्सलाम की शहादत किस तरह हुई?

जवाब – जब हज़रत यहया अलैहिस्सलाम को ज़िबह किया गया तो उसके जुर्म में कुछ बनी इसराईल अल्लाह की तरफ़ से ज़मीन में धंसा दिये गऐ उन लोगों ने हज़रत ज़करया को भी शहीद करना चाहा तो आप वहाँ से बचकर एक बाग़ में पहुँच गऐ। इस बाग़ में एक दरख़्त ने आवाज़ दी कि ऐ अल्लाह के नबी मुझ में छुप जाइये, वह दरख़्त फटा और आप उसमें छुप गऐ। फिर दरख़्त आपस में मिल गया। उधर शैताम मरदूद ने मौक़ा ग़नीमत जानकर आपके कपड़े का एक कोना पकड़ कर दरख़्त से बाहर रख दिया था उससे उन ज़ालिमों ने जान लिया कि इसमें छुपे हुऐ हैं। उन्होंने शैतान के कहने पर दरख़्त को आरे से चीर दिया और आप के दो टुकड़े हो गऐ। फरिशतों ने आपको गुस्ल देकर नमाज़े जनाज़ा अदा की फिर दफ़न कर दिया। (कससुल अंबिया पेज 266)

सवाल – वह कौनसे नबी हैं जिनको सारी ज़मीन के ऊपर कोई बुरा नहीं कहता?

जवाब – वह हज़रत यहया अलैहिस्सलाम हैं कि उन्होंने खुदा

की बारगाह में दुआ की थी, ऐ अल्लाह तू मुझे ऐसा करदे कि मुझे कोई बुरा न कहे। अल्लाह ने इरशाद फ़रमाया ऐ यहया मैंने अपने लिये तो किया नहीं, कोई मेरा शरीक बनाता है, कोई फ़रिश्तों को मेरी बेटियाँ बताता है कोई कहता हे मेरे लिये बेटा है, लेकिन नबी की दुआ ख़ाली नहीं जाती, यही वजह है कि तमाम नबियों को बुरा कहने वाले मौजूद हैं, लेकिन हज़रत यहया को कोई बुरा नहीं कहता। (अलमलफ़ूज़ 2 पेज 57)

सवाल – हज़रत यहया अलैहिस्सलाम किस उमर में शहीद हुऐ?

जवाब – हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान पर उठाऐ जाने से छः महीने पहले। (तफ़सीर कबीर 2 पेज 441)

सवाल – हज़रत ईसा और हज़रत यहया अलैहिमस्सलाम के बीच कौनसा रिश्ता था?

जवाब – दोनों में मामू–भान्जे का रिश्ता था।

(सीरते हलबी जिल्द 1 पेज 434)

सवाल – हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की शहादत किस तरह हुई?

जवाब – बादशाह बनी इस्राईल अपनी लड़की या अपने भाई की बेटी पर आशिक था। उसने हज़रत यहया से इससे शादी के मुतअल्लिक पूछा, तो आपने जवाब दिया वह तेरे लिये हराम है। बादशाह चूँकि आपकी बहुत ज़्यादा इज़्ज़त व ताज़ीम करता था और आपके हर हुक्म की फरमांबरदारी करता था, इसलिये हुक्म मान लिया। लेकिन यह बात जब लड़की की माँ तक पहुँची तो वह गुस्से में भड़क उठी, वह चाहती थी कि बादशाह की उसकी लड़की से शादी हो जाऐ, बस उसके दिल में उसी दिन से हज़रत यहया की तरफ़ से दुश्मनी और हसद पैदा हो

गया और हज़रत यहया को बीच में से ख़त्म करने की ठान ली। एक दिन उसने अपनी लड़की को बहुत अच्छा लिबास पहनाकर और ज़ेवर से सजाकर बादशाह की ख़िदमत में भेज दिया और उसको बता दिया कि पहले बादशाह को शराब पिलाकर बेहोश कर देना, फिर जब वह तुमसे अपनी ख़्वाहिश पूरी करना चाहे तो तुम इन्कार करना और कहना कि मुझे हज़रत यहया का सर चाहिये, इस बद बख़्त ने ऐसा ही किया। बादशाह ने नशे की हालत में चूर होकर जल्लाद को हुक्म दे दिया कि हज़रत यहया को ज़िबह करके फौरन उनका सर तश्त में रखकर हाज़िर करो, जब ज़िबह करने के बाद सर सामने लाया गया तो सर से आवाज़ आने लगी कि तेरे लिये हराम है, हराम है।

(ख़ाज़िन जिल्द 4 पेज 123, सावी जिल्द 2 पेज 289)

सवाल – क्या हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलमा नबी हैं?

जवाब – हाँ जमहूर का क़ौल है कि नबी हैं।

(तफ़सीर कबीर 5 पेज 500, तकमीलुल ईमान पेज 41)

सवाल – आपका अस्ल नाम क्या है?

जवाब – बिल्याबिन मलकान और कुन्नियत अबुल अब्बास है।

(तकमीलुल ईमान पेज 41)

सवाल – फिर आपका लक़ब खिज़्र कैसे हुआ?

जवाब – आप जहाँ बैठते या नमाज़ पढ़ते हैं वहाँ की ज़मीन खुश्क हो तो हरी-भरी हो जाती इसलिये यह आपका लक़ब हुआ। (ख़िज़्र का माना है हरा होना या करना) (खज़ाइनुल इरफ़ान पेज 436)

सवाल – हज़रत ख़िज़्र और हज़रत इलयास अलैहिमस्सलाम जब दोनों ज़मीन पर ज़िन्दा हैं तो क्या खाते-पीते हैं?

जवाब – हर साल दोनों हज व उमरा करते हैं, और ख़त्मे हज

पर ज़मज़म शरीफ़ के पास मिलते हैं और आबे ज़मज़म पीते हैं कि आइन्दा साल तक के लिए काफी होता है, फिर किसी खाने पीने की ज़रुरत नहीं रहती। (फ़तावा रिज़विया जिल्द 9 पेज 108)

सवाल – क्या यह दोनों रमज़ान शरीफ़ का रोज़ा भी रखते हैं?

जवाब – हाँ दोनों बैतुल मुक़द्दस में रमज़ान शरीफ़ का रोज़ा रखते हैं। (ज़रकानी 5 पेज 354)

सवाल – वह कौनसे मबी हैं जिन्होंने पैदा होते ही लोगों के सवालों का जवाब दिया?

जवाब – हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम। (कुरान सुरऐ मरयम)

सवाल – आपका लक़ब क्या था?

जवाब – कलिमतुल्लाह (अल्लाह का कलिमा)

(शरह शिफ़ा जिल्द 1 पेज 225)

सवाल – हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिमस्सलाम के बीच में कितने नबी तशरीफ़ लाऐ?

जवाब – सत्तर हज़ार और कुछ के नज़दीक चार हज़ार।

(सावी जिल्द 1 पेज 41)

सवाल – हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बीच कितने सालों का फ़ासला था?

जवाब – 1975 साल का। (सावी जिल्द 1 पेज 41)

सवाल – हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने ज़िन्दगी में कितने मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाया?

जवाब – चार को ज़िन्दा फ़रमाया (1)आज़र (2)साम बिन नूह जिनके इन्तेक़ाल किये हुऐ हज़ारों साल गुज़र चुके थे (3)एक बुढ़िया का लड़का जिसका जनाज़ा आपके सामने से गुज़र रहा था, आपने दुआ फरमाई वह ज़िन्दा होकर लाश उठाने वालों

के कंधों से उतर पड़ा ओर कपड़े पहन कर घर आ गया काफ़ी दिनों ज़िन्दा रहा उसकी औलाद हुई फिर मौत हुई। (4)एक आशिर की लड़की कि शाम को मरी थी फिर अपकी दुआ से ज़िन्दा हो गई। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान पेज 82)

सवाल – हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम किस उमर में आसमान पर उठाऐ गऐ?

जवाब – 120 साल की उमर में।

(ज़रक़ानी 1 पेज 34 जुमल जिल्द 1 पेज 280)

सवाल – हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम किस आसमान पर हैं?

जवाब – दूसरे आसमान पर (मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 23)

सवाल – हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान में क्या खाते-पीते हैं?

जवाब – जब अल्लाह तआ़ला ने आपको आसमान पर उठाया तो उठाने से पहले भूक प्यास नींद वगैरा तमाम इन्सानी ज़रुरतों को आपसे ख़त्म कर दिया, यहाँ तक कि आपका हाल फ़रिशतों की तरह हो गया कि खाने-पीने के मोहताज नहीं रहे, ज़मीन पर दोबारा तशरीफ़ लाने तक इसी तरह रहेगें।

(ज़रकानी 5 पेज 202, तफ़सीर कबीर 2 पेज 458, तफसीर जुमल 1 पेज 280)

सवाल – क्या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अब भी ज़मीन के ऊपर आते हैं?

जवाब – हाँ, मगर छुपकर हज व उमरा भी करते हैं।

(ज़रकानी 5 पेज 354)

सवाल – क्या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से नीचे आऐंगे?

जवाब – हाँ, कयामत के करीब तशरीफ़ लाऐंगे।

(मिशकात शरीफ़ 2 पेज 480)

सवाल – फिर दुनिया में कितने साल रहेंगे?

जवाब – रिवायतों के इख़्तिलाफ़ के साथ सात साल। (मुस्लिम शरीफ़ जिल्द 2 पेज 403) चालीस साल (अबुदाऊद 2 पेज 238, ज़रकानी 1 पेज 35) 45 पैंतालिस साल। (अशिअअतुल्लमआत 4 पेज 353)

सवाल – क्या आप शादी भी करेंगे?

जवाब – हाँ कबील-ए- जुहनिया की एक औरत से शादी फरमाऐंगे और आप की मर्द औलाद भी होगी।

(शरह शिफ़ा 1 पेज 209)

सवाल – इन्तिकाल के बाद कहाँ दफ़्न होंगे?

जवाब – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के पहलू में।

(ज़रक़ानी जिल्द 8 पेज 296)

आख़िरी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम का बयान

सवाल – आख़री नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की पैदाइश की तारीख क्या है?

जवाब – 12 रबीउलअव्वल पीर के दिन आम्मुल फील (यानी हाथी वाले हादसे का साल) के चालीस या पचास दिन बाद (20 अप्रेल 571 ई०) (मुदारिजुन्नुबुव्वत 2 पेज 18) ज़रक़ानी 1 पेज 132

सवाल – पैदा होने के बाद आपने किन औरतों का दूध पिया?

जवाब – माँ हज़रत आमिना का, अबु लहब की बाँदी सोवैबा और हलीमा सादिया का। (मदारिजुन्नुबुव्वत 2 पेज 23 ता 24)

सवाल – क्या यह सही है कि जिस साल नबी-ए- करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की पैदाइश हुई उस साल दुनिया

की सारी औरतों से सिर्फ लड़का ही पैदा हुआ कोई लड़की पैदा न हुई?

जवाब – हाँ अल्लाह तआला ने तमाम हमल वाली औरतों के लिये ऐसा ही हुक्म दिया था। (मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 21)

सवाल – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम और हज़रत ईसा के दरमयान कितने साल का फ़ासला था यानी ज़मानऐ फ़ितरत कितने साल रहा?

जवाब – तकरीबन 600 साल का इस दरमयान कोई नबी तशरीफ़ नहीं लाऐ। (ज़रक़ानी जिल्द 1 पेज 181)

सवाल – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के नसब में कितने नबी आते हैं?

जवाब – छः नबी आते हैं, हज़रत इस्माईल, हज़रत इब्राहीम, हज़रत नूह, हज़रत इदरीस, हज़रत शीस, हज़रत आदम अलैहिमुस्सलाम (सीरत इब्ने हिशाम जिल्द 1 पेज 2)

सवाल – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के नाम कितने हैं?

जवाब – बेशुमार नाम हैं हुज़ूर के नाम हर जिन्स में अलग अलग और हर तबके में जुदा-जुदा हैं, अब तक आलिमों व इमामों ने जो नाम शुमार किये हैं 1400 हैं। (अहकामे शरीअत 2 पेज 157)

सवाल – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम का ज़ाती नाम लेकर पुकारना यानी या मुहम्मद, या अहमद कहना कैसा है?

जवाब – या मुहम्मद, या अहमद कहना हराम है, बल्कि या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह कहा जाऐ।

(शरह शिफा 2 पेज 388) तजल्लियुल यकीन पेज 18

सवाल – नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम का सीन ए मुबारक कितनी बार चीरा गया?

जवाब - चार बार चीरा गया, पहली बार जब आप हलीमा सअ्दिया के घर थे, और आपकी उमर मुबारक चार साल की थी, दूसरी बार दस साल की उमर में, तीसरी बार नुबुव्वुत का ऐलान करने से क़रीब जब वही आने का वक़्त क़रीब हुआ, चौथी बार मेराज की रात में ।

(नुरुलअब्सार पेज 15, तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 पेज 233)

सवाल - क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के पाख़ाना और पैशाब पाक हैं?

जवाब - हाँ सब पाक व तय्यब हैं।(फ़तावा रिज़विया जिल्द 1 पेज 105)

सवाल - प्यारे नबी का वह कौनसा मोअ्जज़ा (चमत्कार) है जो हमेशा रहेगा ओर कभी ख़त्म नहीं होगा?

जवाब - कुरान पाक। (मवाहिबलदुन्निया 1 पेज 401)

सवाल - प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने जिहाद में अपने मुबारक हाथ से कितने बदबख़्तों को क़त्ल किया?

जवाब - सिर्फ उबइ इब्ने ख़ल्फ़ को क़त्ल किया।

(ज़रक़ानी 2 पेज 56)

सवाल - हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने कितनी औरतों से शादी की?

जवाब - ग्यारह औरतों से (1)हज़रत खदीजतुल कुबरा (2)हज़रत सौदह बिन्त ज़मआ (3)हज़रत आ़इशा (4)हज़रत उम्मे सलमह (5)हज़रत हफ़सह (6)हज़रत ज़ैनब बिन्त खुज़ैमह (7)हज़रत जैनब बिन्त जहश (8)हज़रत जुवैरिया बिन्त हारिस (9)हज़रत सफ़िय्या (10)हज़रत मैमूना (11)हज़रत उम्मे हबीबा बिन्त अबी सुफ़यान (मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 201 शरह शिफ़ा 1 पेज 212, उम्दतुल क़ारी 2 पेज 32)

सवाल – आपकी औलादें कितनी हुई?

जवाब – सात, चार साहिबज़ादियाँ और तीन साहिबज़ादे (1)हज़रत ज़ैनब (2)हज़रत रुकय्या (3)हज़रत उम्मे कुलसूम (4)हज़रत फातिमा ज़ोहरा (5)हज़रत कासिम (6)हज़रत अब्दुल्लाह (7)हज़रत इब्राहीम । छः औलादें हज़रत खदीजा के पेट से पैदा हुई, और बाकी हज़रत इब्राहीम मरिया किबतिया से पैदा हुऐ।

(मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 199 मदारिजिन्नुबुव्वत 2 पेज 533) शरह फ़िकहे अकबर लिअली कारी पेज 109

सवाल – यह औलादें किस तरतीब से पैदा हुई?

जवाब – सबसे पहले हज़रत कासिम, फिर हज़रत ज़ैनब, फिर हज़रत रुकय्या, फिर हज़रत फातिमा, फिर हज़रत उम्मे कुलसूम, फिर हज़रत अब्दुल्लाह इन छः हज़रात की पैदाइश मक्के में हुई और हज़रत इब्राहीम की पैदाइश मदीने में हुई।

(मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 198, नुरुल अबसार पेज 43)

सवाल – हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के वाज़ीर कितने हैं?

जवाब – चार हैं, दो आसमान में और दो ज़मीन में आसमान में हज़रत जिब्राईल, व मीकाईल अलैहिमस्सलाम और ज़मीन में हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ व उमर फ़ारुक़ रदियल्लाहु अनहुमा।

(जामेए सग़ीर 1 पंज 81, ज़रकानी 6 पेज 87)

सवाल – हमारे नबी को इबनुज़्ज़बीहैन (यानी दो ज़बीहों का बेटा) क्यों कहा जाता है?

जवाब – इसलिये कि एक ज़बीह (ज़िबह किये हुऐ) तो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम हैं जो हमारे नबी के आबा व अजदाद (बाप-दादा) में से हैं और दूसरे ज़बीह खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के बाप हज़रत अब्दुलल्लाह हैं कि जब हज़रत

अब्दुलमुत्तलिब नज़र पूरी करने के लिये उन्हें ज़िबह करने चले तो सौ ऊँट के बदले से उनकी जान बची, इसलिये आप इब्नुज़्ज़बीहैन कहलाऐ। तफ़सील मदारिजुन्नु बुव्वत में मुलाहिज़ा फरमाऐं। (मुदारिजुन्नुबुव्वत 2 पेज 14 सीरते हलबी 1 पेज 43)

नबियों की उमरें और उनके मज़ारों का बयान (अलैहिस्सलाम)

सवाल – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब – एक हज़ार साल।

(ज़रक़ानी 1 पेज 64, तबकात इब्ने सअद जिल्द अव्वल पेज 10)

सवाल – आपका मज़ारे पाक कहाँ है?

जवाब – इसमें इख़्तिलाफ़ है, मिना में मस्जिदे खैफ़ से मिला हुआ। (तफ़सीर अज़ीजी सूरऐ बक़र पेज 172) या अबु कुबैस के पहाड़ में, या सरान्दीप में। या फिर बैतुल मुक़द्दस में।

(ज़रक़ानी 1 पेज 65, तबक़ात इब्ने सअद 1 पेज 24)

सवाल – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब – एक हज़ार छः सौ बरस।

(उम्दतुलक़ारी 7 पेज 320, अलमलफ़ूज़ 1 पेज 74)

सवाल – आप का मज़ारे शरीफ कहाँ पर है?

जवाब – मक्के में। (अलबिदाया वन्निहाया 1 पेज 120) या मुल्के शाम के मकाम बकरक में। (रुहुल बयान 2 पेज 968)

सवाल – हज़रज शीस अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब – 912 साल। (ज़रक़ानी 1 पेज 65)

सवाल – आपका मज़ारे शरीफ़ कहाँ है?

जवाब – जबले अबी कुबैस में, (जरकानी 1 पेज 65)और कुछ लोग

हिन्दुस्तान के शहर अयोध्या में बताते हैं। (तफ़सीर नईमी पारा 3 पेज 664)

सवाल – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम किस उमर में आसमान पर उठाऐ गऐ?

जवाब – 450 साल की उमर में। (सावी 3 पेज 73)

सवाल – हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब – चार सौ चौंसठ साला (सावी 2 पेज 72)

सवाल – आपका मज़ारे पाक कहाँ है?

जवाब – हज़र मौत में या मक़ामे इब्राहीम और ज़मज़म शरीफ़ के दरमयान। (ख़ाज़िन 2 पेज 207)

सवाल – हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब – अठावन साल। (ख़ाज़िन 2 पेज 213) या दो सौ अस्सी साल। (सावी 2 पेज 73)

सवाल – आपका मज़ारे मुबारक कहाँ है?

जवाब – मक़ामे इब्राहीम और ज़मज़म शरीफ़ के दरमयान। (ख़ाज़िन 2 पेज 207)

नोटः– सिर्फ़ हजरे असवद (सन्गे असवद) और ज़मज़म शरीफ़ के बीच में 70 नबियों के मज़ार हैं। (फ़तावा रिज़विया 2 पेज 453)

सवाल – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी थी?

जवाब – एक सो पछत्तर साल। (सावी 2 पेज 27) या दो सौ साल। (उम्दतुलक़ारी 7 पेज 345)

सवाल – आपका मज़ार कहाँ है?

जवाब – हिबरून में जो मुल्के फिलिस्तीन में है। (उम्दतुलक़ारी जिल्द 7 पेज 345)

सवाल – हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब – एक सौ तीस साल। (सावी 2 पेज 27)

सवाल – आपका मज़ारे शरीफ़ कहाँ है?

जवाब – सरज़मीने मक्का में मीज़ाबे रहमत के नीचे।

(फ़तावा रिज़विया 2 पेज 453)

सवाल – हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब – एक सौ अस्सी साल। (सावी 2 पेज 27)

सवाल – आपका मज़ारे पाक कहाँ है?

जवाब – हिबरून में अपने वालिद के क़रीब।

(उम्दतुलक़ारी ज़िल्द 7 पेज 373)

सवाल – हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी थी?

जवाब – एक सौ पैंतालीस साल। (ख़ज़ाइन 358)

सवाल – आपका मज़ारे पाक कहाँ है?

जवाब – अपने वालिद के क़रीब। (अलबिदाया वन्निहाया 1 पेज 175)

सवाल – हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब – एक सौ बीस साल। (सावी 2 पेज 27)

सवाल – आपका मज़ारे पाक कहाँ हैं?

जवाब – हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के पहलू में।(ख़ज़ाइन पेज 358)

सवाल – पहले आपको कहाँ दफ़्न किया गया था?

जवाब – आपके इन्तेक़ाल के बाद बनी इस्राईल क़बीलों में इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ हर क़बीला चाहता था कि उसके मुहल्ले में दफ़्न हो। ताकि आप से फैज़ मिलता रहे। आखिर इस इख़्तिलाफ का हल यह निकाला गया कि दरयाऐ नील में दफ़नाऐ जाऐं ताकि उसके पानी से सब फैज़ पाते रहें उन लोगों ने आपको संगे मर-मर के सन्दूक में रखकर दरयाऐ नील में दफ़न कर दिया, फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने तक़रीबन चार सौ साल बाद वहाँ से उठाकर आपके वालिद के बग़ल में

दफ्न किया। (खज़ाइन पेज 358)

सवाल – हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब – तिरेसठ साल (सावी 2 पेज 27) या तिरानवे साल।

(उम्दतुल क़ारी 2 पेज 51)

सवाल – आपका मज़ारे पाक कहाँ है?

जवाब – मुल्के शाम के एक गाँव में। (उम्दतुलक़ारी 2 पेज 51)

सवाल – हज़रत शुऐब अलैहिस्सलम की उमर कितनी थी?

जवाब – एक सो चालीस साल। (उम्दतुल क़ारी 7 पेज 415)

सवाल – आपका मज़ारे पाक कहाँ है?

जवाब – मक्का मुकर्रमा में। (उम्दतुल क़ारी 7 पेज 415)

सवाल – हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब – एक सो बीस साल। (सावी 1 पेज 29)

सवाल – आपका मज़ारे पाक कहाँ है?

जवाब – मैदाने तीह में जो मुल्के फ़िलिस्तीन में है।

(उम्दतुल क़ारी 4 पेज 166)

सवाल – हज़रत हारुन अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब – तकरीबन एक सो चोबीस साल। (तफ़सीरजुमल 3 पेज 67)

सवाल – आपका मज़ारे पाक कहाँ है?

जवाब – मैदाने तीह में (ज़रक़ानी 2 पेज 19) या उहद पहाड़ में।

(जज़्बुल कुलूब पेज 55)

सवाल – हज़रत यूशअ् अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब – एक सो छब्बीस साल। (सावी 1 पेज 242)

सवाल – आपका मज़ारे पाक कहाँ है?

जवाब – जबले इब्राहीम (इब्राहीम पहाड़) में। (सावी 1 पेज 242)

सवाल – हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब - 100 साल। (सावी 2 पेज 27)

सवाल – आपका मज़ारे पाक कहाँ है?

जवाब – बैतुल मुक़द्दस में। (किससुल अंबिया पेज 267)

सवाल – हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की उमर कितनी थी?

जवाब - तिरेपन साल। (ख़ाज़िन व मआलिम 5 पेज 235)

सवाल – हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का मज़ार पाक कहाँ है?

जवाब – मक़ामे नैनवा में। (आईन-ए- तारीख़ पेज 123)

सवाल – हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम का मज़ारे पाक कहाँ है?

जवाब – दमिश्क में । (आईन-ए- तीरख़ पेज 136)

सवाल – आख़री नबी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की उमर कितनी थी?

जवाब – तिरेसठ साल। (मसनद इमामे आजम पेज 112)

सवाल – आपका मुबारक मज़ार शरीफ़ कहाँ है?

जवाब – मदीना मुनव्वरह में गुम्बदे ख़ज़रा के अन्दर।(आम किताबें)

अंबियाऐ किराम के ज़ाती कामों का बयान

सवाल – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने कौन से काम किये?

जवाब – आपने खेती बाड़ी की है और कपड़े भी बुने हैं।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170, अलबिदाया वन्निहाया 1 पेज 80)

नोटः- मुफस्सिर हज़रात फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने सिर्फ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को कारोबार के एक हज़ार हुनरों की तालीम दी थी। (रुहुल बयान 1 पेज 69)

सवाल – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने कौन से काम किये हैं?

जवाब – आपने कपड़े सीने का काम किया है।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम क्या काम करते थे?

जवाब – लकड़ी का काम। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कौनसे काम किये हैं?

जवाब – खेती बाड़ी और कपड़े की तिजारत।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170, अलजुवैरतुलमोनीफह पेज 17)

सवाल – हज़रत हूद अलैहिस्सलाम और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने कौनसे काम किये हैं?

जवाब – तिजारत। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – हज़रत लूत अलैहिस्सलाम क्या काम करते थे?

जवाब – खेती बाड़ी। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – हज़रत इस्माईल अलैहिस्लाम क्या काम करते थे?

जवाब – तीर कमान से हलाल जानवरों का शिकार।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 402)

सवाल – हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम क्या करते थे?

जवाब – चोबानी। (आइन-ए तारीख़ पेज 84)

सवाल – हज़रत शुऐब अलैहिस्सलम क्या करते थे?

जवाब – मवेशी पालते थे। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कौनसे काम किये हैं?

जवाब – कुछ दिनों हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के यहाँ बकरियाँ चराईं। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम क्या काम करते थे?

जवाब – ज़िरह (जंगी लिबास) बनाते थे।

(तफ़सीरे अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – हज़रात सुलैमान अलैहिस्सलाम क्या काम करते थे?

जवाब – दरख़्तों के पत्तों से ज़ंबील, चटाई, पन्खे बनाते थे।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – हज़रत ज़करया अलेहिस्सलाम क्या काम करते थे?

जवाब – लकड़ी का काम करते थे।

(अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 2 पेज 49)

सवाल – हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क्या करते थे?

जवाब – सय्याही यानी सैर। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने कौनसे काम किये हैं?

जवाब – पहले तिजारत फिर जिहाद।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

आसमानी किताबों का बयान

सवाल – आसमान से कितनी किताबें और सहीफ़े (छोटी किताबें) नाज़िल हुऐ (उतरे)?

जवाब – चार मुकद्दस किताबें और 100 सहीफ़े नाज़िल हुऐ।

(ख़ाज़िन 1 पेज 169, तकमीलुलईमान पेज 10)

सवाल – किस नबी पर कौनसी किताब नाज़िल हुई?

जवाब – "तौरेत" हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर, "ज़ुबूर" हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर, "इन्जील" हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर और "कुरान" मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पर नाज़िल हुआ। (तकमीलुल ईमान पेज 10)

सवाल – किस नबी पर कितने सहीफ़े नाज़िल हुऐ?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर दस, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर दस हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम पर तीस, हज़रत शीस अलैहिस्सलाम पर पचास सहीफ़े नाज़िल हुऐ।

(ख़ाज़िन 1 पेज 169 अशिअ्अतुल लमआत 1 पेज 40)

सवाल – तौरेत किस तारीख़ में नाज़िल हुई?

जवाब – छः रमज़ान को नाज़िल हुई।

(अलइतक़ान 1 पेज 41, फ़तावा हदीसिया पेज 169)

सवाल – किस ज़ुबान में नाज़िल हुई?

जवाब – सुरयानी ज़ुबान में।

(ज़रक़ानी 1 पेज 214, अलमलफ़ूज़ 4 पेज 14)

सवाल – तौरेत शरीफ़ में कितनी सूरतें थीं?

जवाब – एक हज़ार सूरतें और हर सूरत में एक-एक हज़ार आयतें थीं। (ख़ज़ाइन पेज 460)

सवाल – तौरात शरीफ की ज़ख़ामत (मोटाई और वज़न) क्या थी?

जवाब – सत्तर ऊटों के बोझ के बराबर, उसके एक हिस्से की तिलावत (पढ़ना) एक साल में मुकम्मल होती थी।

(आशिअ्अतुललमआत पेज 89, ख़ाज़िन व मआलिम 2 पेज 236)

सवाल – कितने हज़रात हैं जो तौरेत शरीफ़ के हाफ़िज़ हुऐ?

जवाब – सिर्फ चार पैग़म्बर हैं जो तौरात शरीफ़ के हाफ़िज़ हुऐ और याद भी रखा (1)हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम (2)हज़रत यूशअ बिन नुन (3)हज़रत उज़ैर (4)हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलाम।

(सावी 2 पेज 85, ख़ाज़िन व मआलिम, 2 पेज 236)

सवाल – ज़बूर किस तारीख़ में नाज़िल हुई?

जवाब – अठारह रमज़ान को।

(अलइतक़ान 1 पेज 41) फ़तावा हदियिया पेज 169

सवाल – किस ज़ुबान में नाज़िल हुई?

जवाब – इब्रानी ज़ुबान में। (उम्दतुल क़ारी 1 पेज 35)

सवाल – ज़ुबूर में कितनी सूरतें थीं?

जवाब – एक सौ पचास सूरतें थीं जिनमें सिर्फ दुआ और

अल्लाह की हम्द व तारीफ़ थी। न तो इसमें हलाल व हराम का बयान था और न फ़रज़ों और हदों का ज़िक्र।

(ख़ाज़िन 2 पेज 519, अलइतक़ान जिल्द 1 पेज 66)

सवाल – इन्जील किस तारीख़ में नाज़िल हुई?

जवाब – तेरह रमज़ान में।

(अलइतक़ान 1 पेज 41, फ़तावा हदीसया पेज 169)

सवाल – किस ज़ुबान में नाज़िल हुई?

जवाब – इबरानी ज़ुबान में।

(ज़रक़ानी 1 पेज 214, अलमलफ़ूज़ 4 पेज 14)

सवाल – कुरान किस तारीख में नाज़िल हुआ?

जवाब – लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया की तरफ़ उसका नुज़ूल (उतरना) रमज़ान शरीफ की 27 तारीख में हुआ फिर वहाँ से ज़रुरत के मुताबिक़ थोड़ा-थोड़ा नाज़िल होता रहा।

(ख़ज़ाइन 872)(रुहुलबयान 4 पेज 681)

सवाल – फिर दुनिया के आसमान से कितने साल में मुकम्मल नाज़िल हुआ?

जवाब – 23 साल में। (सावी 1 पेज 3, ख़ाज़िन 1 पेज 131)

सवाल – क्या कुरान पाक का आना सिर्फ हज़रत जिब्राईल के वास्ते से हुआ या दूसरे फ़रिश्तों के ज़रीऐ भी हुआ?

जवाब – सिर्फ़ हज़रत जिब्राईल के वास्ते से हुआ दूसरा कोई फ़रिश्ता कुरान लेकर नहीं उतरा।

(मवाहिब लदिुन्नया 1 पेज 44, अलइतक़ान 1 पेज 45)

सवाल – कुरान के नाज़िल होने की इब्तेदा किस तारीख़ से हुई?

जवाब – सत्तरह रमज़ान पीर के दिन से।

(ज़रक़ानी 1 पेज 207, नुरुल अबसार पेज 11)

सवाल – सबसे पहले कौनसी आयत उतरी?

जवाब – इक़रा बिस्मि रब्बिक।

(अलइतक़ान 1 पेज 23, सावी 1 पेज 3)

सवाल – सबसे आख़िरी आयत कौनसी उतरी?

जवाब – वत्तकू यौमन तुरजऊन फीहि इलल्लाह।

(अलइतक़ान 1 पेज 23, सावी 1 पेज 3)

सवाल – कुरान में कितनी सूरतें हैं?

जवाब – एक सौ चौदह सूरतें हैं। (अलइतक़ान 1 पेज 64)

सवाल – इसमें कितनी सूरतें मक्की और कितनी सूरतें मदनी हैं?

जवाब – तिरासी सूरतें मक्की और इकत्तीस सूरतें मदनी हैं।

(सावी 1 पेज 3)

सवाल – नबियों के नाम से कितनी सूरतें हैं?

जवाब – छः सूरतें हैं (1)सूरऐ यूनुस (2)सूरऐ हूद (3)सूरऐ यूसुफ (4)सूरए इब्राहीम (5)सूरए नूह (6)सूरए मुहम्मद। (कुराने मुक़द्दस)

सवाल – कुरान में कितनी आयतें हैं?

जवाब – इस बारे में चन्द क़ौल हैं लेकिन मुफ़स्सिरों के सरदार हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास से रिवायत है कि छः हज़ार छः सौ सोलह आयतें हैं। (इतकान 1 पेज 67)

नोटः– इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी ने कन्जुलईमान में छः हज़ार दो सौ छत्तीस शुमार की हैं।

सवाल – कुरान में कितने कलमे हैं?

जवाब – 77, 9, 34 (अलइतक़ाना 1 पेज 67)

सवाल – कुरान में कितने हुरूफ़ हैं?

जवाब – तीन लाख तेइस हज़ार छः सौ इक्हत्तर (323671)

(अलइतक़ान 1 पेज 70)

सवाल – कुरान की सूरतों में यह तर्तीब किसने दी?

जवाब – यह तर्तीब तोक़ीफ़ी है यानी अल्लाह की जानिब से और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से साबित है, और यह ख़ास लौहे महफ़ूज़ के मुताबिक़ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम हर साल रमज़ान शरीफ़ में इसी तर्तीब पर हज़रत जिबराईल से कुरान का दौर फ़रमाते थे।

(अलइतक़ाना 1 पेज 62 जुमल 1 पेज 8)

सवाल – आयतों में यह तरतीब किसने दी?

जवाब – यह तर्तीब भी तौक़ीफ़ी हे यानी अल्लाही की वही और हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के मुताबिक आयतों को तर्तीब वार रखा गया। यही तर्तीब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से नक़ले मुतवातिर (सिलसिलेवार) के साथ साबित है नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम सहाब-ए-किराम को आयतों के बारे में हुक्म देते थे कि फ़लाँ आयत फ़लाँ जगह लिखो, फ़लाँ जगह फ़लाँ आयत लिखो।

(अतइतक़ान 1 पेज 16, उम्दतुलक़ारी 3 पेज 100) जुमल 1 पेज 8

सवाल – कुरान मुक़द्दस में एराब (ज़बर, ज़ेर, पेश, जज़्म) किसने लगाऐ?

जवाब – अबुल असवद दोयली ने लागाए, मगर उस वक़्त ज़बर, ज़ेर, पेश वग़ैरा की शकलें यह न थीं जो आज हैं, उन्होंने नुक़तों से ही ज़बर ज़ेर, पेश का काम लिया। फर्क यह था कि एराब वाले नुक़तों के लिये उस रंग की रोशनाई न होती जिस रंग से कुरान लिखा होता बल्कि उसके लिये अलग रंग की रोशनाई इस्तेमाल करते थे। ज़बर के लिये हर्फ़ पर एक नुक़ता, ज़ेर के लिये हर्फ़ के नीचे एक नुक़ता, पेश के लिये हर्फ़ के

अन्दर एक नुक़ता और तश्दीद के लिये दो नुक़ते मुक़र्रर किये। फिर खलील बिन अहमद फराहीदी ने तशदीद, मद, वक़्फ़, जज़्म, वस्ल और हरकतों की निशानियाँ लगाईं। और ज़बर, ज़ेर पेश की सूरतें बनाई जो आज मौजूद हैं।

(रुहुलबयान जिल्द 4 पेज 65 ता 66)

सवाल – कुरान में नुक़ते किसने लगाऐ?

जवाब – हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी के हुक्म से नस्र बिन आसिम लेसी और यहया बिन यामर ने लगाए।

(रुहुलबयान 4 पेज 66)(शरह शिफ़ा 2 पेज 335)

सवाल – नुक़ते किस सन में लगाऐ गये?

जवाब – 86 हिजरी में 1 (आईनऐ तारीख़ पेज 22)

सवाल – हज़रत उसमान ग़नी रदियल्लाहु अनहु ने कुरान पाक के कितने नुस्ख़े तैयार कराऐ?

जवाब – मशहूर यह है कि पाँच नुस्ख़े तैयार कराऐ, लेकिन अबुदाऊद फरमाते हैं कि मैंने अबु हातिम सजिस्तानी से सुना के सात नुस्ख़े तैयार कराऐ थे जो अलग-अलग इलाक़ों में भेजे गऐ। एक नुस्ख़ा मक्का शरीफ़ मुल्के शाम एक यमन एक बहरैन एक कूफ़ा एक बसरा, और एक नुस्ख़ा मदीना शरीफ़ ही में महफ़ूज़ रखा गया था।

(अशिअअतुललमआत 2 पेज 164, अलइतक़ान जिल्द 1 पेज 81)

सवाल – कुरान मुक़द्दस के कितने नाम हैं?

जवाब – कुल नामों की तादाद तो अल्लाह और रसूल जाने, अलबत्ता इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने 32 नाम शुमार किये हैं।

(तफ़सीर कबीर 1 पेज 241)

सवाल – कुरान पाक का सबसे पहले फ़ारसी ज़ुबान में तर्जुमा

किसने किया है?

जवाब – शेख सअूदी ने। (आईनए तारीख़ पेज 40)

सवाल – कुरआने पाक का सबसे पहले उर्दू ज़ुबान में तर्जुमा किसने किया?

जवाब – शाह शफ़ीउद्दीन ने 1774 ई० में किया।

(आइनए तारीख़ पेज 40)

सवाल – कुरान पाक में कितनी आयतें हैं जिनसे मसाइल निकाले गये हैं?

जवाब – तमाम आयतों का तो इल्म नहीं अलबत्ता अल्लामा मुल्ला जीवन ने अपनी किताब तफ़सीरे अहमदी में पाँचसो आयतों को शुमार किया है। (तफ़सीर अहमदी)

सवाल – क्या कुरान पाक की तरह दूसरी आसमानी किताबें भी मुअ्जिज़ा (ख़ुदाई चमत्कार) हैं?

जवाब – हाँ ग़ैब की ख़बरों पर मुश्तमिल होने की वजह से मुअ्जिज़ा हैं। अलबत्ता इन किताबों की नज़्मों तालीफ़ (तरतीब) कुरान की तरह मुअ्जिज़ा नहीं बर खिलाफ़ कुरान के नज़्म व तालीफ़ के एतेबार से भी मुअ्जिज़ा है।

(एजाज़ुलकुरआन पेज 43, तकमीलुल ईमान पेज 10)

सवाल – क्या फ़रिश्ते भी कुरान पाक की तिलावत करते हैं?

जवाब – आम फ़रिश्तों को यह फ़ज़ीलत नहीं दी गई, अलबत्ता फ़रिश्तों को कुराने पाक सुन्ने का बहुत शौक है। जब कोई मुसलमान कुरान शरीफ़ पढ़ता है तो फ़रिशते उसके मुँह पर मुँह रखकर कुरान के पढ़ने की लज़्ज़त से फ़ायदा उठाते हैं।

(फ़तावा हदीसिया पेज 45, अहकामे शरीअत 1 पेज 119)

सवाल – कुरान ने कितनी चीज़ों को अहसन (अच्छा) फरमाया?

जवाब – पाँच चीज़ों को, अव्वल अपने आपको, दूसरे इन्सानी शक्ल व सूरत को, तीसरे अज़ान को चौथे इस्लाम दीन को, पाँचवे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के किस्से को।

(तफ़सीर नईमी पारा 12 पेज 368)

सवाल – हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने काफ़िरों और मुश्रिकों को कुरान पाक से कितनी बार चैलेन्ज किया?

जवाब – चार बार चैलेन्ज किया, पहले पूरे कुरान से दिया जैसे यह आयत "*कुल लइनिज्तमअ़तिल इन्सो वल जिन्नो अ़ला इंय्यातु बेमिस्लेहाज़ल कुरान* "दूसरे दस सूरतों से दिया जैसे "*कुल फअ्तू बिअ़श्रि-सुवारिम मिसलिही मुफ़त-र-यातिन*" तीसरे सिर्फ एक सूरत से दिया जैसे "*फअ्तू बिसूरतिम मिममिस्लिही*," चौथे कुरान जैसी कोई एक ही बात लाने से दिया जैसे "*फलयातु बिहदीसिम मिस्लिही*।

(सावी 1 पेज161)

सवाल – क्या कुरान में नासिख़ और मनसूख़ भी हैं? (यानी एक आयत या सूरत का हुक्म दूसरी आयत या सूरत के हुक्म को ख़त्म करने वाला)

जवाब – हाँ दोनों हैं। कुछ आयतें नासिख़ और कुछ मन्सूख़ हैं जैसे सूरऐ काफ़िरुन और वह तमाम आयतें जिनमें जंग करने की पहल से रोका गया है, सबकी सब "फक़्तुलुल मुश्रिकीना हैसो वजत्तुमूहुम से मन्सूख़ हैं। (तफ़सीर अहमदी पेज 14)

सवाल – कुरान में ऐसे कितने सवालात हैं जिन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से पूछा गया और आपकी तरफ़ से रब ने जवाब दिया?

जवाब – चौदह सवालात हैं, आठ तो सूरऐ बक़र में और छः

सवालात दूसरी सूरतों में हैं (1)रब कहाँ है। (2)चाँद क्यों घटता बढ़ता है (3)क्या खर्च करें, किस पर करें। (4)माहे हराम में लड़ने का क्या हुक्म है? (5)शराब और जुऐ का क्या हुक्म है? (6)क्या ख़र्च करें यानी कितनी मिक़दार ख़र्च करें (7)यतीमों के मालों को अपने माल से मिलाने का कया हुक्म है? (8)हैज़ (यानी एम॰ सी॰) का हुक्म क्या है (9)सूरऐ मायदा में है क्या-क्या चीज़ें हलाल हैं। (10)सूरऐ इनफ़ाल में है, माले ग़नीमत (जो माल जंग में हासिल हो) का मालिक कौन है? (11)सूरऐ बनी- इस्राईल में है कि रुह क्या चीज़ है? (12)सूरऐ कहफ़ में है कि (सिकन्दर) जुलकरनैन के हालात क्या हैं? (13)सूरऐ ताहा में है कि क़यामत के दिन पहाड़ों का क्या हाल होगा? (14)सूरऐ नाज़िआत में है कि क़यामत कब के लिये ठहरी हुई है। (अलइतक़ान 1 पेज 197)

सवाल – वह सूरतें या आयतें कौन सी हैं। जिनको लेकर हज़रत जिब्राईल के साथ और फ़रिश्ते भी आऐ?

जवाब – वह यह हैं (1)सूरऐ अनआम जिसको लेकर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरे (2)सूरऐ फातिहा इस के साथ अस्सी हज़ार फ़रिश्ते उतरे (3)सूरऐ यूनुस इसके साथ तीस हज़ार फरिश्ते उतरे (4)"वस्अल मन अरसल्ना मिन क़ब्लिक मिर्रुसुलिना" इसके साथ बीस हज़ार फ़रिश्ते उतरे (5)"आयतुल कुर्सी" इसके साथ तीस हज़ार फ़रिश्ते नाज़िल हुऐ (6)सूरऐ कहफ़ इसको लेकर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरे।

(कन्ज़ुल उम्माल 1 पेज 144, अलइतक़ान 1 पेज 37 और 38)

सवाल – वह कौनसी सूरतें हैं जिनके बारे में फरमाया गया कि आर्श के ख़ज़ाने से नाज़िल हुई?

जवाब – (1) सूरऐ फातिहा (2) आयतुलकुर्सी (3) सूरऐ बक़र का आखि़र (4) सूरऐ कौसर। (कन्ज़ुल उम्माल 1 पेज 495)

सवाल – वह दो सूरतें कौनसी हैं जिन्हें नूर कहा गया है और आप से पहले किसी नबी पर नाज़िल नहीं हुईं?

जवाब – सूरऐ फातिहा और सूरऐ बक़र की आख़री आयतें।

(अलइतक़ान 1 पेज 38)

सवाल – कुरान में लफ़्ज़े मुहम्मद और अहमद कितनी जगह पर आया है?

जवाब – लफ़्ज़े मुहम्मद चार जगह और अहमद एक जगह है?

(कुरान मुक़द्दस)

सवाल – वह कौनसी औरत है जिसका नाम कुरान में साफ़–साफ़ आया है?

जवाब – हज़रत मरयम। (सावी 1 पेज136)

सवाल – वह कौनसे सहाबी हें जिनका नाम कुरान में साफ़ लफ़्ज़ों में आया है?

जवाब – हज़रत ज़ैद बिन हारिसा, बाक़ी इनके इलावा किसी सहाबी या सहाबिया का नाम साफ़–साफ़ नहीं आया है।

(ज़रक़ानी 3 पेज 305)

सवाल – वह कौन ऐसा बद बख़्त है जिसका नाम कुरान ने नहीं लिया बल्कि उसकी कुन्नियत (उपधि नाम) ज़िक्र फ़रमाया?

जवाब – अबु लहब है कि उसके इलावा कुरान में किसी की कुन्नियत ज़िक्र न फ़रमाई गई। (अलइतक़ान 2 पेज 144)

सवाल – क्या कुराने मुक़द्दस का हिफ़्ज़ करना फ़र्ज़ है?

जवाब – हाँ फ़र्ज़ किफ़ाया है।

(फ़तावा रिज़विया जिल्द 10 निस्फ़ अव्वल पेज 104)

वही का बयान

सवाल – वही किसे कहते हैं?

जवाब – वही उस बात को कहते हैं जो किसी नबी पर अल्लाह की तरफ़ से आऐ। (उम्दतुलक़ारी 1 पेज 47)

सवाल – वही किस ज़ुबान में नाज़िल होती थी?

जवाब – अरबी ज़ुबान में नाज़िल होती थी, नबी कौम़ की ज़ुबान में उसका तर्जुमा फ़रमा दिया करते थे।

(अलइतक़ान 1 पेज 45)

सवाल – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पर वही की इब्तिदा किस चीज़ से हुई?

जवाब – सच्चे और अच्छे ख़्वाबों से। (बुख़ारी शरीफ़ 1 पेज़ 2)

सवाल – आप पर वही की इब्तिदा किस तारीख से हुई?

जवाब – बरोज़ पीर (सोमवार) आठ या तीन रबीउलअव्वल से हुई। (मदारिजुन्नुबुव्वत 2 पेज 38)

सवाल – क्या कुरान की तरह हदीस भी अल्लाह की वही है?

जवाब – हाँ जिस तरह हज़रत जिब्राईल कुरान लेकर नाज़िल होते थे, इसी तरह हदीस भी लेकर उतरते थे।

(मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 69)

नोटः– दोनों वही में फ़र्क़ है कुरान वही ए मतलू व जली यानी तिलावत किये जाने वाली वही है और हदीस वही ए ग़ैर मतलू व ख़फ़ी है यानी न तिलावत की जाने वाली उस से कम दरजे की वही है।

सवाल – क्या ग़ैर नबी की तरफ़ भी वही हो सकती है?

जवाब – हाँ वही इलहाम के माना और सूरत में हो सकती है

जैसा कि कुरान मुक़द्दस में शहद की मक्खी और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ के बारे में है कि अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ वही की। (तकमीलुल ईमान पेज 41, उम्दतुलक़ारी 1 पेज 47)

सवाल – वही लिखने वाले कातिब कितने हैं?

जवाब – तेरह हैं, चारों खलीफ़ा (5)आमिर बिन फहीरा (6)अब्दुल्लाह बिन अरक़म (7)ओबय बिन कअ्ब (8)साबित बिन क़ैस (9)ख़ालिद बिन सईद (10)हन्ज़ला बिन रबीअ् (11)ज़ैद बिन साबित (12)मआविया बिन सुफ़यान (13)शरज़ील बिन हसन (अन्नाहि यह पेज 15)

सवाल – वही की कितनी सूरतें हैं?

जवाब – नबियों के हक़ में वही की तीन सूरतें हैं (1)बिना फ़रिश्ते के वास्ते से बज़ाते खुद अल्लाह के कलामे क़दीम को सुनना (2)फ़रिश्ते के वास्ते से अल्लाह के कलाम का आना (3)मुक़द्दस नबियों के दिलों में कलाम के माना का अल्लाह की तरफ़ से डाला जाना। फिर यह तीनों किस्में सात सूरतों में मुनहसिर (यानी घेरा हुआ) हैं (1)वही ख़्वाब में हो जैसा कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख्वाब में हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की क़ुर्बानी का हुक़्म हुआ। (2)दिल में इलक़ा हो (3)घन्टी की आवाज़ की सूरत में आऐ (4)फरिश्ता किसी इन्सान मर्द की शक्ल में आकर अल्लाह का कलाम पेश करे जैसा कि हज़रत जिब्राईल हज़रत दहय्या कलबी की शक्ल में हाज़िर होकर कलाम पेश करते (5)हज़रत जिब्राईल अपनी मलकूती यानी फ़रिश्तों वाली सूरत में हाज़िर होकर कलामे रब्बी पेश करते (6)हज़रत इस्राफ़ील वही लेकर हाज़िर हों (7)बिना फ़रिश्ते के वास्ते से अल्लाह के मुबारक क़दीम

कलाम को सुनना जैसे मेराज शरीफ़ की रात में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पर और तूर पहाड़ पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने सुना।

(उम्दतुलक़ारी 1 पेज 47, ज़ादुल मआद 1 पेज 18)

फ़रिश्तों का बयान

सवाल – फ़रिश्ते किसे कहते हैं?

जवाब – फ़रिश्ते लतीफ जिस्म रखते हैं, नूर से पैदा किये गए हैं उनको अल्लाह तआला ने यह कुदरत दी है कि जो शक्ल चाहें इख़्तियार कर लें। (तकमीलुल ईमान पेज 9)

सवाल – फ़रिश्ते मर्द हैं या औरत?

जवाब – न मर्द हैं न औरत। (तकमीलुल ईमान पेज 9)

सवाल – क्या फ़रिश्तों की पैदाइश आदमियों की तरह है?

जवाब – नहीं बल्कि फ़रिश्ते लफ़्ज़े "कुन" से पैदा किये गऐ हैं। (आलहिदायतुल मुबारकह पेज 4)

सवाल – फ़रिश्तों की तादाद कितनी है?

जवाब – सही तादाद तो अल्लाह व रसूल जानें अलबत्ता हदीस शरीफ़ में है कि आसमान व ज़मीन में कोई एक बालिश्त जगह खाली नहीं जहाँ फ़रिश्तों ने सजदे में पेशानी न रखी हो ज़मीन से सिदरतुल मुन्तहा तक पचास हज़ार साल की राह है उसके आगे मुस्तवी उसकी दूरी खुदा जाने, इससे आगे अरशे आज़म के सत्तर परदे हैं हर हिजाब (परदे) से दूसरे हिजाब तक पाँच सौ बरस का फासला है और उससे आगे अर्श इन तमाम वुस्अतों (ख़ाली मक़ाम) में फ़रिश्ते भरे हैं।

(मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 26, अलमलफूज 4 पेज 9)

सवाल – सारी मख़लूक़ात में किस की तादाद ज़्यादा है?

जवाब – फ़रिश्तों की तातादं ज़्यादा है हदीस शरीफ़ में है कि अगर सारी मख़लूक़ात को दस हिस्सों में तक़सीम किया जाऐ तो नौ हिस्से फ़रिश्तों के हैं और एक हिस्सा सारी मख़लूकात का। (तक़मीलुल ईमान पेज 9, तफ़सीर जुमल 4 पेज 534)

सवाल – क्या सब फ़रिश्ते एक ही बार में पैदा हो गये? या उनकी पैदाइश का सिलसिला जारी है?

जवाब – पैदाइश का सिलसिला जारी है। हदीस शरीफ़ में है कि अर्श की दाहनी तरफ़ नूर की एक नहर है, सातों आसमान और सातों ज़मीन और सातों समुन्द्रों के बराबर, इसमें हर सुबह हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम नहाते है। जिससे उनके नूर पर नूर और जमाल पर जमाल बढ़ता है, फिर पर झाड़ते हैं तो जो बूंद गिरती है तो अल्लाह तआला उस से उतने–उतने हज़ार फ़रिश्ते बनाता है। दूसरी हदीस में है कि चौथे आसमान में एक नहर है। जिसे नहरे हयात कहते हैं, हज़रत जिब्राईल हर रोज़ उसमें नहाकर पर झाड़ते हैं जिससे सत्तर हज़ार क़तरे झड़ते हैं और अल्लाह तआला हर कतरे से एक–एक फ़रिश्ता पैदा करता है।

(मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 26, अलहिदायतुल मुबारका पेज 9)

सवाल – क्या इसके इलावह कोई ओर भी सूरत है जिससे फ़रिश्ते पैदा होते हैं?

जवाब – हाँ एक फ़रिश्ता और है जिसका नाम रुह है यह फ़रिश्ता आसमान और ज़मीन और पहाड़ों से बड़ा है, क़यामत के दिन तमाम फ़रिश्ते एक सफ़ में खड़े होंगे और यह फ़रिश्ता तनहा एक सफ़ में खड़ा होगा तो इन सब के बराबर होगा। यह फ़रिश्ता चौथे आसमान में हर रोज़ बारह हज़ार तसबीहें पढ़ता है और हर

तसबीह से एक फ़रिश्ता बनता है, दूसरी हदीस में है कि रुह एक फ़रिश्ता है जिसके सत्तर हज़ार सर हैं और हर सर में सत्तर हज़ार चहरे और हर चहरे में सत्तर हज़ार मुँह और हर मुँह में सत्तर हज़ार ज़ुबानें और हर ज़ुबान में सत्तर हज़ार लुग़त यह उन सब लुग़तों से अल्लाह की तसबीह करता है और हर तसबीह से अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता पैदा करता है। इसी तरह हदीस में है कि हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जो मुझ पर मेरे हक़ की ताज़ीम के लिये दुरुद भेजे अल्लाह तआला उस दुरुद से एक फ़रिश्ता पैदा करता है जिसका एक पर पूरब और एक पश्चिम में होता है अल्लाह तआला उससे फ़रमाता है दुरुद भेज मेरे बन्दे पर जैसे उसने मेरे नबी पर दुरुद भेजी। पस वह फ़रिश्ता क़यामत तक उस पर दुरुद भेजता रहेगा। इसी तरह नेक कलाम, अच्छा काम फ़रिश्ता बनकर आसमान की तरफ़ बुलन्द होता है।

(ख़ाज़िन व मआलिम 4 पेज 148, जिल्द 7 पेज 169 उम्दतुलक़ारी जिल्द 9 पेज 16 अलहिदायतुल मुबारकह पेज 6 ता 11)

सवाल – क्या सारे फ़रिश्तों का मरतबा बराबर है?

जवाब – नहीं, बल्कि उनमें भी इन्सानों की तरह अवाम और ख्वास हैं और ख्वास फ़रिश्ते रुतबे में अवाम फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं। (मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 45 ता 46)

सवाल – ख्वास फ़रिश्ते कौन-कौन हैं?

जवाब – हज़रत जिब्राईल, हज़रत मीकाईल, हज़रत इसराफ़ील हज़रत इज़राईल, अर्श उठाने वाले, मुकर्रबीन, करोंबीन रुहानिय्यीन। (मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 45)

सवाल – क्या इन ख़ास फ़रिश्तों में भी कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत है?

जवाब – हाँ यह चार फ़रिश्ते हज़रत जिब्राईल, हज़रत मीकाईल, हज़रत इसराफ़ील, हज़रत इज़राईल बाक़ी तमाम फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं। (मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 45, तकमीलुल ईमान पेज 9)

सवाल – इन चार फ़रिश्तों में कौन अफ़ज़ल हैं?

जवाब – हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम।

(मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 45)

सवाल – इन्सान फ़रिश्तों से अफ़ज़ल है या फ़रिश्ते इन्सान से अफ़ज़ल हैं?

जवाब – जमहूर एहले सुन्नत के नज़दीक़ ख्वास इन्सान यानी नबी, रसूल ख्वास फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं और आम इनसान यानी औलियाऐ किराम आम फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं और ख़ास फ़रिश्ते आम इन्सानों से अफ़ज़ल हैं।

(मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 45,तफ़सीर कबीर 4 पेज 84)

सवाल – क्या फ़रिश्तों के पर होते हैं?

जवाब – हाँ दो-दो तीन-तीन चार-चार और बाज़ फ़रिश्तों के तो इससे भी ज़्यादा होते हैं। जैसा कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम के बारे में है कि उनके छः सौ पर हैं। (तकमीलुलईमान पेज 9)

सवाल – क्या फ़रिश्तों को लौहे महफूज़ का इल्म होता है?

जवाब – हाँ ख्वास फ़रिश्ते लौहे महफूज़ पर मुत्तलअ हैं और आम फ़रिश्ते अपने ख्वास के ज़रीऐ लौहे महफूज़ की कुछ बातों पर मुत्तलअ् होते हैं। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 307)

सवाल – क्या फ़रिश्ते अंबियाऐ किराम से ज़्यादा इल्म रखते हैं?

जवाब – नहीं अंबियाए किराम उनसे ज़्यादा इल्म रखते हैं, इल्म ही ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को फ़रिश्तों से सजदा कराने का शर्फ बख़्शा। (ख़ाज़िन 1 पेज 40-277)

सवाल – अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को किस क़दर ताक़त व कुव्वत अता फ़रमाई है?

जवाब – इसकी पूरी हकीक़त तो ख़ुदा जाने अलबत्ता एक रिवायत में है कि एक फ़रिश्ता दुनिया वालों को हलाक करने के लिये काफ़ी है। (शरह शिफ़ा 1 पेज 735)

सवाल – क्या फ़रिश्ते भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की उम्मत हैं?

जवाब – हाँ उम्मत हैं आप उनकी तरफ़ भी रसूल बनाकर भेजे गऐ। (ज़रक़ानी 1 पेज 165) सावी 4 पेज 68

सवाल – फ़रिश्तों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को किस दिन सज्दा किया?

जवाब – जुमे के दिन ज़वाल से लेकर असर तक।

(मवाहिबलदुन्निया 1 पेज 10)

सवाल – सबसे पहले किस फ़रिश्ते ने सज्दा किया?

जवाब – हज़रत जिब्राईल ने फिर मीकाईल फिर इसराफ़ील फिर इज़राईल फिर मलाएका मुकर्रबीन ने।

(मवाहिबलदुन्निया जिल्द 1 पेज 10)

सवाल – क्या फ़रिश्तों के पीर होते हैं जिस तरह इन्सान और जिन्नात के लिये पीरो मुरशिद होते हैं?

जवाब – हाँ हुज़ूर गौसे आज़म फ़रमाते हैं कि मैं आदमियों और जिन्नों और फ़रिश्तों सब का पीर हूँ।

(बहजतुल असरार पेज 23, फ़तावा रिज़विया 9 पेज 141)

सवाल – क्या फ़रिश्तों को देखना मुमकिन है?

जवाब – हाँ देखना मुमकिन है। (फ़तावा हदीसिया पेज 145)

सवाल – क्या किसी ने देखा भी है?

जवाब – हाँ अंबिया ए किराम, सहाबए इज़ाम और औलियाए किराम अपनी बेदारी में फ़रिश्तों को देखते हैं। लेकिन उनकी असली सूरत में नहीं।

(ज़रक़ानी 1 पेज 425, तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 143)

सवाल – हज़रत जिब्राईल, हज़रत मीकाईल, हज़रत इसराफ़ील, हज़रत इज़राईल का अस्ल नाम क्या है और कुन्नियत क्या है?

जवाब – हज़रत जिब्राईल का अस्ल नाम अब्दुल्लाह है लेकिन इमाम सुहैली फ़रमाते हैं कि जिब्राईल सुरयानी ज़ुबान का लफ़्ज़ है जिसके माना अब्दुर्रहमान या अब्दुल अज़ीज़ के हैं। एक क़ौल यह है कि अस्ल नाम अब्दुल जलील और कुन्नियत अबुलफ़तह है। हज़रत मीकाईल का अस्ल नाम अब्दुर्रज़्ज़ाक और कुन्नियत अबुल ग़नाइम है। हज़रत इस्राफ़ील का अस्ल नाम अब्दुल ख़ालिक और कुन्नियत अबुलमनाफ़िख है और हज़रत इज़राईल का अस्ल नाम अब्दुल जब्बार और कुन्नियत अबु यहया है। (उम्दतुलक़ारी 1 पेज 45, 84)

सवाल – क्या हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उनकी असली सूरत पर देखना मुमकिन है?

जवाब – हाँ देखना मुमकिन है लेकिन सिर्फ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने दो मरतबा देखा एक बार ग़ारे हिरा में, दूसरी बार सिदरतुल मुन्तहा पर। (सावी 2 पेज 5, ज़रक़ानी 1 पेज 57)

सवाल – क्या नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के सिवा किसी ने न देखा?

जवाब – हाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के सिवा किसी नबी ने उनको असली सूरत में नहीं देखा।

(सावी 4 पेज 115, सीरत हलबी 2 पेज 294)

सवाल – हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम किन बातों पर मामूर हैं?

जवाब – हवा चलाने, लश्करों को फतह व शिकस्त देने आज़ाब नाज़िल करने, काफ़िर और सरकश बादशाहों को हलाक करने, अल्लाह की बारगाह में हाजतें पेश करने, अम्बियाए किराम की बारगाहों में हाज़िर होने वही और अल्लाह के हुक्मों के पहुँचाने पर मामूर हैं। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 108)

सवाल – हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम की अस्ली सूरत क्या है?

जवाब – अस्ली सूरत यह है कि नूरी जिस्म है, उनके जिस्म में छः सौ पर हैं और हर पर इस क़दर फैला हुआ है कि उससे आसमान का किनारा छुप जाऐ, और उन सब परों पर ज़बुर जद व याकूत व मोती जड़े हुऐ हैं। एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने उनको देखा कि सर आसमान में है और पाँव ज़मीन में और मश्रिक़ व मग़रिब का फ़ासिला उस से पुर हो गया है।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 308) खाज़िन व मआलिम जिल्द 7 पेज 179

सवाल – अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्राईल को किस क़दर ताक़त दी है?

जवाब – अल्लाह तआला ने उन्हें इतनी ताक़त व कुव्वत अता फ़रमाई है कि आसमान से ज़मीन तक बावजूद इस क़दर फ़ासले के पलक मारने की देर में उतर भी आते हैं और चढ़ भी जाते हैं। (खाज़िन वमआलिम 7 पेज 179)

सवाल – हज़रत जिब्राईल अमीन किस नबी की बारगाह में कितनी बार हाज़िर हुऐ?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की बारगाह में बारह मर्तबा, हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में चार बार हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पचास मर्तबा, हज़रत

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में बयालीस मर्तबा, हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में चार बार, हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में तीन मर्तबा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में चार सौ मर्तबा, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में दस बार और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में चौबीस हज़ार मर्तबा हाज़िर हुऐ। (मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 234, ज़रक़ानी 1 पेज 234)

सवाल – क्या अब भी हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ज़मीन के ऊपर आते हैं?

जवाब – हाँ हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम उस बन्दऐ मौमिन की मौत के वक़्त हाज़िर होते हैं जिसकी मौत पाकी पर हो। (फ़तावा हदीसिया पेज 129)

सवाल – हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम किन बातों पर मामूर हैं?

जवाब – सूर फूकनें, इन्सानों और जानवरों में रुह फूकने और लौहे महफूज़ पर मामूर (मुक़र्रर) हैं। और हज़रत जिब्राईल व मीकाईल और इज़राईल अलैहिमुस्सलाम को अल्लाह के हुक्म भी पहुँचाते हैं। कुछ रिवायतों में है कि रात की बारह घड़ियों में बारह अज़ाने कहते हैं। हर घड़ी की अज़ान अलग है, उनकी अज़ानों को इन्सान और जिन्नों के इलावा सातों आसमानों और सातों ज़मीनों के तामाम फ़रिश्ते सुनते हैं।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 310 पारा 30 पेज 26)

सवाल – क्या हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम लौहे महफूज़ की बातों को भी जानते हैं?

जवाब – हाँ हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम को लौहे महफूज़

की पोशीदा बातों पर भी इत्तेलाअ है। वह साहिबे लौह कहलाते हैं। उनके मुतअल्लिक यह फ़ज़ीलत आई है कि जब ज़मीन और आसमान में किसी चीज़ के मुतअल्लिक अल्लाह का इरादा होता है, तो लौहे महफ़ूज़ खुद बुलन्द होकर उनके सामने हो जाती है यह उस वक़्त उसमें नज़र करते हैं और उस मुकद्दर (लिखी हुई) बात में गौर करते हैं अगर वह आमाल की जिन्स (किस्म) से होती है तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उसका हुक्म फ़रमाते हैं और अगर वह हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम के कामों से तअल्लुक रखती है तो उसपर हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम को मामुर कर देते हैं और अगर हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम की ख़िदमत से तअल्लुक रखती है तो हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम को उसपर बाख़बर कर देते हैं। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरए बक़र पेज 307)

सवाल – हज़रत इस्राफील अलैहिस्सलाम की लम्बाई चौड़ाई कितनी है?

जवाब – उसकी हकीकत तो खुदा जाने, अल्बत्ता बाज़ रिवायतों से इस क़दर साबित होता है कि उनका एक पर पूरब के किनारे में और एक पश्चिम के किनारे में और अर्शे आज़म उनके काँधे पर है लेकिन कभी अल्लाह की अज़मत की तजल्ली से इतने सिमट जाते हैं कि छोटी चिड़या की मानिन्द हो जाते हैं।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 309)

सवाल – क्या हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम भी किसी नबी की ख़िदमत में हाज़िर हुऐ?

जवाब – नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के इलावा किसी नबी की ख़िदमत में हाज़िर नहीं हुऐ और न होंगे।

(मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 405)

सवाल - हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम किस जगह से सूर फूकेंगे?

जवाब - बैतुल मुक़द्दस की एक चट्टान पर खड़े होकर सूर फूकेंगे। (सावी 3 पेज 54)

सवाल - हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम किन बातों पर मुक़र्रर हैं?

जवाब - बारिश बरसाने, ज़मीन से हरयाली उगाने, हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम की मदद करने और मख़लूक़ का रिज़्क (रोज़ी) मुअय्यन करने पर मामूर हैं।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 308) तकमीलुल ईमान पेज 9

सवाल - हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम के फ़ज़ाइल क्या हैं?

जवाब - हदीस शरीफ़ में है कि बैते मामूर जो ख़ान-ए-काबा के ऊपर सातवें आसमान में फ़रिश्तों का क़िबला है आसमान के फ़रिश्ते उसमें जमा होकर जमाअत का इन्तेज़ार करते हैं हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम इमाम बनते हैं और सब फ़रिश्तों को नमाज़ पढ़ाते हैं। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 310)

सवाल - हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम किन बातों पर मुक़र्रर हैं?

जवाब - रूहों को खींचने और बीमारियों और आफ़तों पर मुक़र्रर हैं। (तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 पेज 26, तकमीलुल ईमान पेज 10)

सवाल - क्या हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम तन्हा रुहों को क़ब्ज़ करते यानी खींचते हैं?

जवाब - कुछ की रुह तनहा खींचते हैं, लेकिन ज़्यादातर अपने मातहत फ़रिश्तों के साथ मिलकर रूह क़ब्ज़ करते हैं। उनके मातहत बहुत से फ़रिश्ते हैं यह उनके सरदार हैं। (शरहुस्सुदूर पेज 23)

सवाल - हज़रत इज़राईल अलैहिस्साम एक ही आन और घड़ी में कितनी रूहें क़ब्ज़ फ़रमा सकतें हैं?

जवाब - एक लाख रुहें क़ब्ज़ कर लेते हैं, हज़रत मलकुल मौत की ताक़त व क़ुदरत तमाम पूरब वालों और पश्चिम वालों और तमाम दरयाओं और हवाओं के रहने वालों पर ऐसी है जैसे किसी शख़्स के सामने दस्तर ख़्वान हो अब वह जो चाहे उठाले। ख्वाह मरने वाला पूरब में हो या पश्चिम में हो। और इतनी रुहें क़ब्ज़ करने के बावजूद अल्लाह की इबादत में भी मश्गूल रहते हैं। (शरहुस्सुदूर पेज 19, मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 389,)

सवाल - क्या हज़रत मलकुल मौत रुह क़ब्ज़ करने के बाद खुद लेकर जाते हैं या दूसरे फ़रिश्तों के हवाले कर देते हैं?

जवाब - मोमिन की रुह रहमत के फ़रिश्ते ओर काफ़िर की रुह अज़ाब के फ़रिश्ते के हवाले कर देते हैं। (सावी 2 पेज 19)

सवाल - हज़रत मलकुल मौत के साथ कितने फ़रिश्ते होते हैं?

जवाब - चौदह फ़रिश्ते होते है, सात रहमत के और सात अज़ाब के और कुछ के नज़दीक पाँच सौ होते हैं।

(सावी 2 पेज 19) (शरहुस्सुदूर पेज 23)

सवाल - क्या हज़रत मलकुल मौत सिर्फ इन्सानों की रुह कब्ज़ करते हैं या हर जानदार की?

जवाब - हक़ीक़त तो खुदा को मालूम अलबत्ता हदीस शरीफ़ में है कि जानवरों और कीड़ों मकोड़ों की रुहें तसबीह में हैं। जब उनकी तसबीह ख़त्म हो जाती हे तो उनपर मौत तारी हो जाती है। उनकी मौत मलकुल मौत के क़ब्ज़े में नहीं। यानी अल्लाह तआला उन जानवरों की ज़िन्दगी बिला वास्ता मलकुल मौत ख़त्म कर देता है। बाज़ रिवायत में है कि मलकुल मौत सिर्फ इन्सानों की रुह क़ब्ज़ करते हैं। बाक़ी एक फ़रिश्ता जिन्नात की और एक फ़रिश्ता शैतानों की और एक फ़रिश्ता चरिन्दों, परिन्दों

दरिन्दों, मछलियों, कीड़ों मकोड़ों की रुह क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर है। बाज़ रिवायत में है कि मलकुल मौत हर जानदार यानी इन्सान और जिन और तमाम जानवरों की रुहें कब्ज़ करते हैं।

(शरहुस्सुदूर पेज 21, फ़तावा हदीसिया पेज 20, ज़रक़ानी 1 पेज 51)

सवाल - क्या यह रिवायत सही है कि पहले मलकुल मौत लोगों के पास खुल्लम खुल्ला आते थे लेकिन जबसे हज़रत मूसा अलैस्सिलाम ने आपकी आँख फ़ोड़ दी तब से पोशीदा तौर पर आने लगे?

जवाब - हाँ यह दुरुस्त है। (शरहुस्सुदूर पेज 20, अलइत्तेहाफ़ पेज 117)

सवाल - हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम को रुह कब्ज़ करने पर मुक़र्रर करने की क्या वजह है?

जवाब - यह और फ़रिश्तों के ऐतेबार से ज़्यादा सख़्त हैं इसलिये इन्हें रुह क़ब्ज़ करने पर मामूर किया गया। (खाज़िन 1 पेज 39)

सवाल - किरामन कातेबीन कौनसे फ़रिश्ते हैं?

जवाब - वह फ़रिश्ते हैं जो बनी आदम की बातों और कामों और अच्छाई और बुराई लिखते हैं। बन्दा जब कोई नेकी करता है तो दाहनी तरफ़ का फ़रिश्ता फ़ौरन दस गुना करके लिखता है और यह फ़रिश्ता बाईं तरफ़ के बुराई लिखने वाले फ़रिश्ते पर अमीन भी है। और जब कोई बुराई करता है तो दाहनी तरफ़ वाला फ़रिश्ता बाई तरफ़ वाले से कहता है अभी न लिख शायद कि वह बन्दा तौबा कर ले और अगर तौबा नहीं करता है तो बाई तरफ़ वाला फ़रिश्ता उसके नाम-ए-आमाल में एक गुनाह लिख देता है। (खाज़िन 2 पेज 117, खज़िन 6 पेज196, ज़रक़ानी 6 पेज 82)

सवाल - हर आदमी के साथ कितने फ़रिश्ते होते हैं?

जवाब - चार फ़रिश्ते होते हैं, दो फ़रिश्ते दिन और दो फ़रिश्ते

रात में रहते हैं और रात दिन के आमाल के दफ़्तर भी अलग-अलग होते हैं।

(तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 पेज 88)

सवाल – क्या यह फ़रिश्ते हर वक़्त आदमी के साथ रहते हैं? या किसी वक़्त अलग भी हो जाते हैं?

जवाब – सही क़ौल यह है कि पेशाब, व पाख़ाना, और हमबिस्तरी यानी औरत से मिलते वक़्त दूर हो जाते हैं।

(रद्दुल महतार 1 पेज 370, ख़ाज़िन वमआलिम 7 पेज 195)

सवाल – क्या किरामन कातेबीन हमारे साथ महरबानी करते हैं?

जवाब – हाँ उनकी महरबानी और उनका करम यह है कि इन्सान के तमाम बुरे कामों और पोशीदा बातों पर आगाह और वाकिफ़ होते हैं लेकिन किसी के सामने ज़ाहिर नहीं करते और न किसी को रुसवा करते हैं। इसी तरह अगर कोई एक नेकी करता है तो इसका सवाब दस गुना लिखते हैं और अगर कोई नेकी का इरादा करता है मगर किसी रुकावट की वजह से न कर सका तो उसके नामए आमाल में एक नेकी का सवाब लिख देते हैं और अगर कोई गुनाह का इरादा करता है लेकिन ख़ौफ़े ख़ुदा से न किया तो उसको भी नेकी के हिसाब में शुमार करके एक नेकी का सवाब उसके हिसाब में लिखते हैं। इसी तरह अगर किसी से कोई गुनाह हो जाता है तो छः घण्टे तक मुहलत देते हैं, नामए आमाल में कुछ नहीं लिखते शायद कि वह बन्दा नादिम शर्मिन्दा होकर तौबा कर ले, या कोई ऐसा नेक काम कर ले जो उस गुनाह को मिटा दे। अगर इतनी देर तक भी बन्दा तौबा नहीं करता और न ही कोई नेक काम करता है तो उसके नाम ए आमाल में एक गुनाह लिख देते हैं फिर जब कभी वह तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है या कोई अच्छा काम बजालाता है तो उस

लिखे हुऐ गुनाह को मिटा देते हैं। (तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 पेज 88)

सवाल – इन्सान के मरने के बाद फिर वह किरामन कातिबीन कहाँ जाते हैं?

जवाब – जब इन्सान मर जाता है तो किरामन कातेबीन अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ करते हैं ऐ रब अब हमारा काम ख़त्म हो गया, तेरा बन्दा अमल करने की दुनिया से निकल गया, इजाज़त दे कि हम आसमान पर आऐं और तेरी इबादत करें। रब तआ़ला फ़रमाता है कि मेरा आसमान मेरी इबादत करने वालों से भरा है तुम्हारी कुछ ज़रुरत नहीं फिर अर्ज़ करते हैं इलाही हमें ज़मीन में जगह दे, इरशाद होता है मेरी ज़मीन इबादत करने वालों से भरी हे तुम्हारी कुछ ज़रुरत नहीं, अर्ज़ करते हैं ऐ अल्लाह अब हम क्या करें। इरशाद होता है मेरे बन्दे की क़ब्र पर खड़े होकर क़यामत तक तसबीह व तहलील और तकबीर पढ़ो और उसका सवाब मेरे बन्दे के लिये लिखते रहो। और काफ़िर के फ़रिश्ते को हुक्म होता है कि उसकी क़ब्र पर वापस जाओ और क़यामत तक उस पर लानत करो। (रद्दुल मोहतार जिल्द 1 पेज 370, शरहुस्सुदूर पेज 370, अलहिदाया अलमुबारका पेज 17)

सवाल – हफ़ज़ह कौन से फ़रिश्ते हैं?

जवाब – वह फ़रिश्ते हैं जो इन्सानों की जिसमानी बलाओं आफ़तों की हिफ़ाज़त करते हैं और उनके रिज़्क़ और कामों की हिफ़ाज़त करते हैं। यह फ़रिश्ते दिन के अलग और रात के अलग होते हैं इनका इज्तेमाअ् (यानी इकटठा) नमाज़े फज्र व अस्र में होता है रात के फ़रिश्ते नमाज़े फज्र तक अपना काम करते हैं और बाद नमाज़े फज्र चले जाते हैं और दिन के फ़रिश्ते उस वक़्त से नमाज़े असर तक हिफ़ाज़त व देखभाल करते हैं

और असर की नमाज़ के बाद रवाना हो जाते हैं। [illegible] रात के फ़रिश्ते उस वक़्त से नमाज़े फज्र तक निगह बानी करते हैं। जब यह फ़रिश्ते ऊपर जाते हैं तो अल्लाह तआला बवजूद अपने इल्मे ज़ाती के उन फ़रिश्तों से पूछता है कि तुम ने मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़ा हे, फ़रिश्ते जवाब देते हैं ऐ परवरदिगार हमने उनको नमाज़ पढ़ते हुऐ छोड़ा है और जब हम उसके पास गऐ थे उस वक़्त भी वह नमाज़ में मशगूल थे।

(ख़ाज़िन व मआलिम 4 पेज 6, सावी 2 पेज 19)

सवाल – हर बन्दे के साथ कितने होते हैं?

जवाब – इस बारे में बहुत से क़ोल हैं दो, चार, पाँच, दस, एक सौ साठ तीन सौ साठ। (रद्दुल मुहतार 1 पेज 370, ज़रकानी 6 पेज 82)

सवाल – इतने फ़रिश्ते किन–किन चीज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं?

जवाब – दो फ़रिश्ते तो आमाल की हिफ़ाज़त करते हैं, जो किरामन कातेबीन कहलाते हैं जिनका बयान गुज़र चुका बाकी एक फ़रिश्ता आँखों की हिफ़ाज़त के लिये मुक़र्रर है कि आँखों को तकलीफ़ की चीज़ों से बचाता है और एक फ़रिश्ता पेशानी की निगरानी करता है कि वह अगर खुदा का ज़िक्र करे तो उसको बुलन्द करे और सरकशी करे तो उसको झुकाऐ और एक फ़रिश्ता मुँह की हिफ़ाज़त करता है कि उसमें कोई तकलीफ़ देने वाला जानवर दाख़िल नहीं और एक फ़रिश्ता बन्दे के सोने–जागने में जिन और इन्सान और हैवानात से हिफ़ाज़त करता है और जो चीज़ तकलीफ़ देने के लिये आती है तो यह फ़रिश्ता उससे कहता है पीछे हट, और दो फ़रिश्ते दोनों होंटों पर मुक़र्रर हें कि जब इन्सान दुरुद शरीफ़ पढ़ता है तो उसकी हिफ़ाज़त करते हैं। (तफ़सीर इब्न जरीर 3 पेज 77 ता 79) जरकानी 6 पेज 82 खाजिन व मआलिम 4 पेज 6

सवाल – ज़बानिया कौनसे फ़रिश्ते हैं?

जवाब – वह फ़रिश्ते हैं जिनको अल्लाह तआला ने दोज़खियों पर अज़ाब देने के लिये मुक़र्रर किया है यह निहायत सख़्त और ताकतवर हैं इनमें ख़ुदा ने नरमी ओर रहम पैदा ही नहीं किया उनमें से एक फ़रिश्ता सत्तर हज़ार दो जखियों को एक दफ़ा जहन्नम में झोंक देगा, उनकी उन्नीस है और इन सब के सरदार मालिक हैं जो दोज़ख़ के ख़ाज़िन (दरोगा) हैं फिर हर एक के मातहत इतने फ़रिश्ते हैं जिनका शुमार अल्लाह ही जानता है।

(ख़ाज़िन व मआलिम 7 पेज 101, दकाइकुल अख़बार पेज 36)

सवाल – कर्रो-बीन कौनसे फ़रिश्ते हैं?

जवाब – यह ख़ास फ़रिश्तों में से है, अर्शे बरी के ईर्द-गिर्द सफ़ बनाए हुऐ तसबीह व तकबीर में मशगूल हैं। अर्शे आज़म के इर्द-गिर्द फ़रिश्तों की सत्तर हज़ार सफ़ें हैं कुछ सफ़ आगे ओर कुछ सफ़ पीछे यह आर्श का तवाफ़ करते हैं, एक सफ आती है तो दूसरी जाती है जब आपस में बाज़ से बाज़ मिलते हैं तो एक सफ़ वाले "*लाइला-ह-इल्लल्लाह*" तो दूसरी वाले अल्लाहु अकबर कहते हैं। (ख़ाज़िन वमाआलिम 6 पेज 75)

सवाल – क्या कर्रो बीन और अर्शे आज़म को उठाने वाले फ़रिश्ते सिर्फ़ ज़िक्रे इलाही करते हैं?

जवाब – नहीं, उनके मुतआल्लिक़ यह भी आया है कि यह मुसलमानों के लिये इस्तिगफ़ार चाहते हैं (बख्शिश) और यह दुआ माँगते हैं कि ऐ हमारे रब तेरी रहमत व इल्म में हर चीज़ समाई है तू उन्हें बख़्शदे जिन्होंने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा और जन्नत में दाख़िल कर जिसका तूने उनसे वादा फ़रमाया है।

(कुरान सूरए मौमिन, ख़ाज़िन वमआलिम 6 पेज 75)

सहाबा का बयान

सवाल – सहाबी किसे कहते हैं?

जवाब – उन हज़रात को कहते हैं जिन्हें इस्लाम की हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की मुलाक़ात का शर्फ़ हासिल हुआ और वह इस्लाम ही पर इन्तेक़ाल कर गए जैसे वरक़ह बिन नौफ़ल, या मुलाक़ात का शर्फ़ नुबूव्वत के ज़माने से पहले हासिल हुआ हो और ज़मानए नुबुव्वत से पहले ही हज़रत इब्राहीम की मिल्लत पर इन्तेक़ाल फ़रमा गऐ हों जैसे ज़ैद बिन अमर बिन नुफ़ैल या इस्लाम की हालत में मुलाकात का शर्फ हासिल होने के बाद इस्लाम से फिर गऐ और फिर आपकी मुबारक ज़िन्दगी में ही इस्लाम क़ुबूल कर लिया जैसे अब्दुल्लाह बिन सअद रदियल्लाहु अन्हु।

(रद्दुल मुहतार 1 पेज 10, बशीरुलक़ारी पेज 127 ता 132)

सवाल – कुल सहाबा कितने हैं?

जवाब – एक लाख चौबीस हज़ार।

(ज़रक़ानी 8 पेज 288, अलमलफ़ूज़ 3 पेज 59)

सवाल – अब तक कितने सहाबा के नाम मालूम हो सके हैं?

जवाब – जिनके नाम मालूम हो सके हैं सात हज़ार हैं।

(अल मलफुज 3 पेज 59)

सवाल – क्या सहाबी होने के लिये बालिग़ होना शर्त है?

जवाब – नहीं, बल्कि ग़ैर अक़लमन्द बच्चा भी सहाबी हो सकता है अगर उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से मुलाक़ात का शर्फ हासिल हो, जैसे इमाम हसन व इमाम हुसैन और अबदुल्लाह बिन ज़ुबेर और मो० बिन अबु बकर रदियल्लाहु अनहुम सहाबी हैं। (बशीरुल कारी पेज 127)

सवाल – क्या इन्सान की तरह जिन्नात और फ़रिश्तों को भी सहाबी होने का शर्फ़ हासिल है?

जवाब – हाँ, यह हज़रात भी सहाबी की तारीफ़ में दाख़िल हैं और उन्हें भी सहाबी होने का शर्फ़ हासिल है। (ज़रकानी 1 पेज 302 जिल्द 7 पेज 28, तकमीलुलईमान पेज 9, बशीरुल क़ारी पेज125)

सवाल – क्या कुछ पैग़म्बर भी सहाबी हैं जिनको देखने वाले ताबेई होंगे?

जवाब – हाँ, वह नबी जिन्होंने अपनी दुनयवी ज़िन्दगी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम को ज़मीन पर देखा जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत इलयास अलैहिस्सलाम कि उन्होंने बैतुल मुक़द्दस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम को देखा था वह सहाबी हैं, इसी तरह हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम सहाबी हैं उनको देखने वाले ताबेई होंगे।

(सावी 3 पेज 287, अलमलफ़ूज़ 4 पेज 47)

सवाल – तमाम सहाबा में सबसे अफ़ज़ल कौन हैं?

जवाब – हज़रत अबुबक़र सिद्दीक़, फिर हज़रत उमर फ़ारुक, फिर उसमाने ग़नी, फिर हज़रत अली मुश्किल कुशा रदियल्लाहु अनहुम। (मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 414)

सवाल – ख़िलाफ़ते राशिदह किसे कहते हैं और उनके मिसदाक़ (मुसातहिक़) कौन-कौन हुऐ?

जवाब – ख़िलाफ़ते राशिदा उस ख़िलाफ़त को कहते हैं जो नुबुव्वत के तरीक़े पर हो। जैसे चारों ख़लीफ़ा और इमाम हसन मुजतबा और अमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की ख़िलाफ़त और आख़ीर ज़माने में हज़रत इमाम महदी रदियल्लाहु अन्हुम ऐसी ख़िलाफ़त कायम फ़रमाऐंगे। (अलमलफ़ूज़ 3 पेज 59)

सवाल – ख़िलाफ़ते राशिदा कितने सालों तक रही?

जवाब – पहले तीस साल फिर बाद में हज़रत अमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ की ख़िलाफ़ते राशिदह ढाई साल तक रही।

(शरह फ़िक्हे अकबर लिअलीक़ारी पेज 68, निबरास पेज 504)

सवाल – खुलफ़ाऐ राशिदीन में किन की ख़िलाफ़त कितने साल रही?

जवाब – हज़रत अबु बक्र की ख़िलाफ़त ढाई साल, हज़रत उमर फ़ारुक़ की साढ़े दस साल, हज़रत उसमाने ग़नी की बारह साल, हज़रत अली की खिलाफ़त चार साल नौ महीने रही फिर हज़रत इमाम हसन छः महीने ख़लीफ़ा रहे।

(शरह फ़िक्हे अकबर लिअली क़ारी पेज 68, निबरास 504)

सवाल – खुलफाऐ राशेदीन में से किन-किन की उमर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की उमर शरीफ़ के बराबर हुई?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़ और हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहु अन्हुम की हुई।

(मसनद इमाम आज़म पेज 113, अलमलफूज़ 1 पेज 9)

सवाल – वह दस सहाबी कौन हें जिनके बारे में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने जन्नती होने की खुशख़बरी दी?

जवाब – हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ हज़रत उमर फ़ारुक़, हज़रत उसमान ग़नी, हज़रत अली, हज़रत जुबेर, हज़रत तलहा, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत अबु उबेदा बिन अलजर्राह, हज़रत सईद बिन ज़ेद और हज़रत सअद बिन वक़्क़ास रदियल्लाहु अन्हुम। (इब्ने माजा 1 पेज 61, शरह फ़िक्हे अकबर लिअली कारी पेज 119)

सवाल – क्या जन्नती होने की खुशख़बरी उन्हीं के साथ ख़ास हे या उनके इलावा भी किसी के लिये जन्नती होने की बशारत है?

जवाब – हाँ उनके इलावा भी कुछ हज़रात के लिये जन्नती होने की बशारत है, जैसे हज़रत फतिमा ज़ुहरा, हज़रत इमाम हसन व हुसैन, हज़रत ख़दीजतुल कुबरा, हज़रत आयशा सिद्दीक़ा, हज़रत हमज़ा, हज़रत अब्बास, हज़रत सलमान फारसी, हज़रत सुहैब रुमी, हज़रत, अम्मार बिन यासर, हज़रत जअफ़र तय्यार तमाम एहले बदर व एहले हुदैबिया, और एहले बैते रिज़वान।

(तकमीलुल ईमान पेज 65, शरह फ़िकहे अकबर बहरुलउलूम पेज 52)

सवाल – वह कौनसे मुक़द्दस सहाबी हैं जिनके हाथ पर अशरऐ मुबश्शरह में से पाँच सहाबी ईमान लाऐ?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ हैं जिनके हाथ पर हज़रत उसमान हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत सअद बिन वक्क़स हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ईमान लाऐ। (सीरतहलबी 1पेज 314)

सवाल – वह कौनसे सहाबी हैं जिनको अल्लाह तआला ने अपना सलाम कहलवाया?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़।

(तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 तीस पेज 208)

सवाल – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ की पैदाइश किस सन् में हुई?

जवाब – आम्मुल फ़ील (हाथी वाले वाक़िए) के तीन साल बाद। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 25)

सवाल – वह कौनसे सहाबी हैं। जिनसे मैदाने महशर में कोई हिसाब नहीं लिया जाऐगा?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़। (नूरुल अबसार पेज 54)

सवाल – वह कौनसे सहाबी हैं जो अपने माँ बाप की ज़िन्दगी में ख़लीफ़ा बने।

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 57)

सवाल – वह कौनसे सहाबी हैं जो इस उम्मत पर सबसे ज़्यादा महरबान हैं?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़। (अश्शारफुल मौबिद पेज 114)

सवाल – वह कौनसे सहाबी हैं जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की ज़िन्दगी में लोगों को नमाज़ें पढ़ाईं?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ हैं कि तीन दिन में सत्तरह वक़्त की नमाज़ें पढ़ाईं।

(मदरिजुन्नुबुव्वत 2 पेज 571, नुज़हतुल क़ारी 3 पेज 143)

सवाल – वह कौन सहाबी हैं जिनके पीछे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने नमाज़ें पढ़ीं?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु अनहु हैं कि मरज़े वफ़ात में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने उनके पीछे तीन वक़्त की नमाज़ें पढ़ीं और सफ़र की हालत में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ के पीछे फजर की नमाज़ पढ़ी।

(मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 73)

सवाल – आपका इन्तेकाल किस सन् में हुआ?

जवाब – सन् 13 हिजरी में। (तारीख़ुल ख़लफ़ा पेज 60)

सवाल – आपकी नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाब – हज़रत उमर ने। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 62)

सवाल – वह कौन सहाबी हैं जो दीन के मामले में सबसे ज़्यादा सख़्त हैं?

जवाब – हज़रत उमर फ़ारुक। (अश्शारफुलमौबिद पेज 114)

सवाल – वह कौनसे सहाबी हैं जिनके मुसलमान होने पर आसमान के फ़रिश्तों में खुशी की लहर दोड़ गई?

जवाब – हज़रत उमर फ़ारुक। (ज़रक़ानी 1 पेज 277)

सवाल - जिस वक़्त हज़रत उमर फ़ारुक ने इस्लाम क़ुबूल किया तो मुसलमानों की तादाद कितनी पहुँच गई थी?

जवाब - उस वक़्त 39 मर्द और 21 ओरतें इस्लाम ला चुकी थीं, हज़रत उमर से चालीस मर्दों की तादाद पूरी हुई।

(ज़रकानी 1 पेज 273, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 78)

सवाल - आपकी पैदाइश किस सन् में हुई?

जवाब - आम्मुल फील के 13 साल बाद। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 78)

सवाल - आपको किसने शहीद किया?

जवाब - अबु लुअलुअ् मजूसी ने। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 95)

सवाल - आपकी नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाब - हज़रत सुहैबरुमी ने। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 97)

सवाल - आपकी उमर शरीफ़ कितनी हुई?

जवाब - 63 साल। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 97)

सवाल - वह कौनसे सहाबी हैं जिनकी सख़ावत (दानशीलता) मशहूर है।

जवाब - हज़रत उसमाने ग़नी। (अश्शार फुलमोबिद पेज 114)

सवाल - वह कौनसे सहाबी हैं जिनकी शफ़ाअ़त से ऐसे सत्तर हज़ार आदमी बिना हिसाब किताब के जन्नत में जाऐंगे जो जहन्नम के मुसतहिक़ हो चुके होंगे?

जवाब - हज़रत उसमाने ग़नी रदियल्लाहु अन्हु। (ज़रकानी 3 पेज 315)

सवाल - आपकी पैदाइश किस सन् में हुई?

जवाब - आम्मुल फ़ील के छः साल बाद। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 105)

सवाल - आपकी उमर कितनी हुई?

जवाब - बयासी साल। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 114)

सवाल - आपको किसने शहीद किया?

जवाब – मिश्र के एक आदमी ने जिसका नाम हम्मार था या असवद अलतजीबी ने। (तारीखुल खुलफ़ा पेज 114) तब सेरतुददेराया 43

सवाल – आपकी नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाब – हज़रत जुबैर ने। (तारीखुल खुलफ़ा पेज 115)

सवाल – आपको कहाँ दफ़न किया गया?

जवाब – जन्नतुल बक़ी शरीफ़ में। (तारीखुल खुलफ़ा पेज 114)

सवाल – वह कौनसे सहाबी हैं, जिनकी तरफ़ देखना इबादत है?

जवाब – हज़रत अली मुरतज़ा। (अश्शरफुल मौबिद पेज 114)

सवाल – वह कौन से सहाबी हैं जो सबसे बेहतर फैसला करने वाले हैं?

जवाब – हज़रत अली मुश्किलकुशा (अश्शरफुल मौबिद पेज 114)

सवाल – आपका लक़ब कर्रार किसने रखा और क्यों रखा?

जवाब – आपका यह लक़ब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने रखा, क्योंकि कर्रार के माना बार-बार हमला करने वाले के हैं और हज़रत अली भी दुश्मन पर बार-बार हमला करने वाले थे, इसलिये आपका यह लक़ब रखा गया। (ग़यासुल्लुग़ात पेज 358)

सवाल – आपकी पेदाइश कब और कहाँ हुई?

जवाब – आपकी पैदाइश आम्मुल फील के तीस साल बाद खानाऐ काबा में हुई। (सीरत हल्बी 1 पेज 165)

सवाल – आपको किसने शहीद किया?

जवाब – अब्दुर्रहमान बिन मुलजम ने। (तारीखुल खुलफ़ा पेज 123)

सवाल – नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई?

जवाब – हज़रत हसन ने पढ़ाई और कूफ़े के दारुल इमारत में दफ़न किये गऐ। (तारीखुल खुलफ़ा पेज 123)

सवाल – आपकी उमर मुबारक कितनी हुई?

जवाब - 63 साल। (मसनद इमाम आज़म पेज 113)

सवाल - वह कौन-कौन से सहाबी हैं जिनके लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने अपने माँ-बाप को जमा फ़रमाया यानी फ़िदा-क अबी व उम्मी यानी मेरे माँ-बाप आप पर कुरबान फ़रमाया?

जवाब - हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम, हज़रत सअद बिन वक्क़ास, और हज़रत तलहा। (इब्ने माजा 1 पेज 59 ता 60 नुज़हतुल क़ारी 1 पेज 282)

सवाल - वह कौनसे सहाबी हैं जिनकी शक्ल में हज़रत जिब्राईल तशरीफ़ लाते थे?

जवाब - हज़रत दहय्या कलबी। (मदारिजुन्नुबुव्वत 2 पेज 44)

सवाल - वह कौनसे सहाबी हैं। जिनको हज़रत जिब्राईल ने सलाम कहा?

जवाब - हज़रत तलहा रदियल्लाहु अन्हु। (ज़रकानी 3 पेज 318)

सवाल - वह कौनसे सहाबी हैं जिनकी तनहा गवाही दो मर्दों के बराबर है?

जवाब - हज़रत खुज़ैमा। (बुख़ारी शरीफ़ 1 पेज 394)

सवाल - वह कौनसे मुक़द्दस सहाबी हैं जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने अपना बेटा बना लिया था?

जवाब - हज़रत ज़ैद बिन हारिसह। (जलालैन शरीफ़ पेज 355)

सवाल - वह कौनसे सहाबी हैं, जिन को क़यामत के दिन उलमा का इमाम बनाया जाऐगा?

जवाब - हज़रत मआज़ बिन जबल हैं कि क़यामत के दिन सब आलिमों के आगे होंगे। (कन्ज़ुल उम्माल 7 पेज 87)

सवाल - वह कौनसे सहाबी हैं जिनके जनाज़े पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हाज़िर हुऐ?

जवाब – हज़रत सअ़द इब्ने मआज़। (ज़रक़ानी 2 पेज139)

सवाल – वह कौनसे सहाबी हैं जिनकी उमर सबसे ज़्यादा लम्बी हुई?

जवाब – हज़रत सलमान, फ़ारसी हैं कि आपकी उमर ढाई सौ साल हुई और बाज़ ने साढ़े तीन सौ साल बयान की। हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहलवी फ़रमाते हैं कि उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़माना भी पाया है।

(मिश्कात असमाउर्रिजाल पेज 597)

सवाल – वह कौनसे सहाबी हैं जिनका इन्तिकाल सबसे बाद में हुआ?

जवाब – हज़रत अबु तुफ़ैल आमिर बिन वासिला।

(मिशक़ात असमाउर्रिजाल पेज 601) अल जवांहरूल मुजिया 2 पेज 426

सवाल – वह कौनसे ताबेई हें जिनके हाथ पर सहाबी मुसलमान हुऐ?

जवाब – शहंशाहे हबशा नजाशी हैं जिनके हाथ पर अमर बिन आसी सहाबी मुसलमान हुऐ। (ज़रक़ानी 3 पेज 302)

सवाल – वह कौनसी सहेबिया हैं जिनको अल्लाह ने अपना सलाम भिजवाया?

जवाब – हज़रत ख़दीजतुल कुबरा। (शरह सफ़रुस्सआदह पेज 411)

सवाल – वह कौनसी सहीबिया हैं जिनको हज़रत जिब्राईल ने सलाम कहलवाया?

जवाब – हज़रत आयशा सिद्दीक़ा। (शरह सफ़रूससआदह पेज 411)

सवाल – वह कौनसी सहाबिया हैं जिनकी क़ब्र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम कुछ देर के लिये लेट गऐ फिर उस सहाबिया को उसमें दफ़्न किया गया?

जवाब – फ़ातिमा बिन्त असद वालदह ए हज़रत अली करमल्लाहु वजहहु हैं। (जज़बुल कुलूब पेज 171)

इन्सान की पैदाइश का बयान

सवाल – इन्सान की पैदाइश का तरीक़ा क्या है?

जवाब – हज़रत आदम और बनी आदम (यानी औलादे आदम) दोनों की पैदाइश के तरीक़े अलग-अलग हैं।

हज़रत आदम की पैदाइश का तरीक़ा यह है कि पहले मिट्टी का ख़मीर हुआ, फिर सूरत बनी, फिर उसमें रुह डाली गई। और औलादे आदम का तरीक़ा यह है कि पहले नुतफ़ा था, फिर वह खून की बूँद बना, फिर गोश्त का टुकड़ा हुआ, फिर अअ्ज़ा (अंग) की कलियाँ फूटीं, फिर सूरत बनी फिर उसमें रुहें डाली गईं। (अलहिदायह अलमुबारकह पेज 2)

सवाल – आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश में कितना वक़्त लगा?

जवाब – एक सौ बीस साल। तफ़सील यह है कि हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम पूरी रुऐ ज़मीन से एक मुठ्ठी ख़ाक उठाकर ले गऐ, फ़रिश्तों ने बहुक्म खुदा वन्दी उस मुठ्ठी ख़ाक में पानी मिलाकर गारा बनाया वह गारा चालीस साल तक यूँही रहा, फिर वह बदबूदार काला हो गया। और चालीस साल तक ऐसा ही रहा उसके बाद खुदा वन्द कुद्दूस ने अपने दस्ते कुदरत से हज़रत आदम के जिस्म को तैयार किया और उसकी सूरत बनाई, यहाँ तक कि वह खुश्क होकर खनखनाने लगी, फिर उसपर उन्तालीस साल ग़म की बारिश और एक साल राहत व सुरुर की बारिश हुई उसके बाद उसमें रुह डाली गई तो वह

एक इन्सान हो गया। (रुहुल बयान 1 पेज 68, तफ़सीर अज़ीज़ी सूरए बक़र पेज 146, ख़ाज़िन वमआलिम 7 पेज 157)

सवाल – हज़रत आदम अलेहिस्सलाम की पैदाइश कहाँ हुई?

जवाब – अकसर मुफ़ास्सिरीन फ़रमाते हैं कि जन्नते अद्न में हुई। (रुहुल बयान 1 पेज 68)

और कुछ हज़रात फ़रमाते हैं कि मक्का मुअज़्ज़मा और ताइफ़ के बीच वादिऐ नोमान में·हुई।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरए बक़र पेज 146) अशीअतुल लमआत 4 पेज 445

सवाल – हज़रत हव्वा कैसे और कहाँ पैदा हुई?

जवाब – इस बारे में दो रिवायतें हें एक रिवायत में है कि दुनिया में ही हज़रत आदम की बाई पसली से पैदा हुई, दूसरी रिवायत यह है कि जन्नते अद्न में पैदा हुई।

(सावी 3 पेज 78, तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 158)

सवाल – माँ के पेट में नुतफ़ा (पानी की बूँद) ठहरने के कितने दिन बाद उसमें रुह फूँकी जाती है?

जवाब – चार महीने बाद। हदीस शरीफ़ में है कि पैदाइश का माद्दा माँ के पेट में चालीस दिन तक नुतफा ही रहता है उतनी ही मुद्दत जमे खून की तरह, फिर इतनी ही मुद्दत गोश्त के लोथड़े की तरह फिर उसमें रुह डाली जाती है। (सावी 3 पेज 75)

सवाल – क्या बच्चे की पैदाइश मर्द और औरत दोनों की मनी से होती है?

जवाब – हाँ बच्चे की पैदाइश में मर्द और औरत दोनों के नुत्फ़े शामिल होते हैं। (ख़ाज़िन 7 पेज 157)

सवाल – फिर बच्चा कभी माँ के और कभी बाप की तरह क्यो होता है?

जवाब - माँ-बाप में से जिसकी मनी ताक़तवर हो या जिसकी मनी पेट में पहले पहुँचे बच्चा उसकी तरह होगा। यानी यह दोनों बातें अगर मर्द की मनी में पाई जाऐं तो बच्चा बाप या बाप के खान्दान की तरह होगा और अगर यह दोनों बातें औरत की मनी में पाई जाऐं तो बच्चा औरत या औरत के ख़ानदान की तरह होगा। (बुख़ारी शरीफ़ 1 पेज 469, तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 302)

सवाल - क्या औलादे आदम की पैदाइश में भी मिट्टी की मिलावट होती है?

जवाब - हाँ नुतफ़ा जब माँ के पेट में जगह पाता हे तो जो फ़रिश्ता रहम (गर्भ) पर मुवक्किल है उसकी क़ब्र की मिट्टी (यानी जहाँ उसको दफ़न होना है) लाकर नुतफा पर छिड़कता है फिर उस नुत्फ़े और मिट्टी से इन्सान की पैदाइश होती है। हदीस शरीफ़ में है कि कोई बच्चा पैदा नहीं होता जिनकी नाफ़ में वहाँ की मिट्टी न हो जहाँ वह मरेगा।

(ख़ाज़िन व मआलिम 4 पेज 220, फ़तावा अफ्रीका पेज 85)

सवाल - क्या अम्बिया किराम की पैदाइश उसी नापाक नुतफ़े से हुई?

जवाब - नहीं। अम्बियाए किराम की पैदाइश जिन नुत्फ़ों से हुई वह नुत्फ़ा पाक है और खुद अम्बियाऐ किराम के नुत्फ़े और पेशाब बल्कि तमाम फुज़लात (जिस्म से निकलने वाली चीज़) पाक हैं। (फ़तावा रिज़विया 2 पेज 161)

सवाल - क्या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी हज़रत मरयम के नुत्फ़े से पैदा हुऐ?

जवाब - नहीं। आप सिर्फ़ कलमऐ कुन से पैदा हुऐ यानी हज़रत जिब्राईल के हज़रत मरयम के गिरेबान या बग़ल में फूँक

मारने से पैदा हुऐ। (ख़ाज़िन 1 पेज 301)

सवाल – हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हज़रत मरयम के नुत्फ़े से नहीं तो फिर इब्ने मरयम क्यों कहते हैं?

जवाब – सिर्फ़ इसलिये कहते हैं कि उनके पेट से पैदा हुऐ और उनके हमशक्ल थे न आप की पैदाइश उनके नुत्फ़े से हुई न ही माँ के पेट में माहवारी के खून से परवरिश हुई।

(तफ़सीर नईमी पारा 3 पेज 563)

सवाल – हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम माँ के पेट में कितने दिन रहे?

जवाब – आठ महीने। (तफ़सीर जुमल 3 पेज 57)

सवाल – वह कौनसे बच्चे हैं जो ख़ानऐ काबा में पैदा हुऐ?

जवाब – हकीम बिन हिज़ाम और हज़रत अली।

(शरह शिफ़ा 1 पेज 151)

सवाल – हज़रत हव्वा कितनी बार हामला हुई और उनके कितने बच्चे पैदा हुऐ?

जवाब – बीस बार हामला हुई और हर बार में जोड़े बच्चे पैदा होकर चालीस बच्चे हुऐ। (ज़रक़ानी 1 पेज 64, सावी 1 पेज 242)

सवाल – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के इन्तेक़ाल के वक़्त उनकी औलाद कितनी थी?

जवाब – इस बारे में चन्द रिवायतें हैं कुछ ने चालीस हज़ार बताया है। (तबक़ात इब्ने सअद 1 पेज 20, ख़ाज़िन 2 पेज 32) और कुछ ने एक लाख से ज़्यादा (सावी 1 पेज 176) और कुछ ने कहा चार लाख। (अलबिदाया वन्निहाया 1 पेज 96)

सवाल – वह कौनसे इन्सान हैं जो आदम की औलाद नहीं?

जवाब – जिन्हें अल्लाह तआला जन्नत भरने के लिये पैदा

फ़रमाऐगा कि यह इन्सान तो होंगे मगर औलादे आदम नहीं जैसे हज़रत हव्वा इन्सान हैं मगर औलादे आदम नहीं।

(मरअतुल मनाज़ीह 7 पेज 557)

सवाल – तूफ़ाने नूह के बाद फिर दुनिया में इन्सानी नस्लें किनसे चली?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बेटे साम, हाम, याफिस से इसलिये अब पूरी दुनिया आपही की औलाद से आबाद है, इसी बिना पर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को दूसरा आदम कहा जाता है। (फ़तावा रिज़्विया 6 पेज 179, ख़ज़ाइन पेज 450)

सवाल – किस बेटे से कौनसी नस्ल चली?

जवाब – अरब, फ़ारस, रुम यह साम की औलाद हैं। हब्शी सिन्धी, और हिन्दुस्तानी हाम की औलाद हैं। और याजूज, माजूज, तुर्क क़ौम और सक़लाब याफिस की औलाद हैं। (सावी 3 पेज 23)

सवाल – ज़ाहरी शक्ल व सूरत में कितने आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के माशाबे पैदा हुऐ?

जवाब – अब तक दस आदमी ऐसे हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के मुशाबे थे। (1)इमाम हसन (2)इमाम हुसैन (3)जाफ़र बिन अबुतालिब (4)अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (5)कुसम बिन अब्बास (6)अबुसुफ़्यान बिन हारिस (7)मुस्लिम बिन अक़ील (8)साइब बिन यज़ीद (9)अब्दुल्लाह बिन आमिर (10)काबिस बिन रबीआ़ और अख़ीर ज़माने में हज़रत इमाम महदी सरसे पाँव तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के मुशाबे होंगें। (मवहिबेलदुन्निया 2 पेज 125 अलमलफ़ूज़ हिस्सा 3 पेज 42)

सवाल – वह कौनसे बच्चे हैं जिन्होंने गहवारे (पालने में) में कलाम किया?

जवाब – अब तक ग्यारह बच्चों ने कलाम किया। (1)हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम (2)हज़रत यहया अलेहिस्सलाम (3)हज़रत मरयम (4)हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम (5)नबीए-करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम (6)हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की गवाही देने वाला बच्चा (7)हज़रत जुरैज राहिब की गवाही देने वाला बच्चा। (8)खाई वालों का बच्चा (9)उस लौन्डी (ख़ादिमा) का बच्चा जिस पर बनी इसराईल के ज़माने में ज़िना की तोहमत लगाई गई थी (10)हज़रत आसिया की ख़ादिमा का वह बच्चा जिसे खौलते हुऐ तेल में डाला गया (11)यहुद का वह बच्चा जो अपने माँ बाप के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुआ और सलातो सलाम पेश किया। (ज़रकानी 1 पेज 147, शरह शिफ़ा 1 पेज 226)

ख़तना का बयान

सवाल – ख़तना करना कैसा है?

जवाब – ख़तना करना सुन्नत हे और शिआरे इस्लाम (निशानी) है। (दुर्रे मुख़्तार मअ रद्दुलमुहतार 5 पेज 495)

सवाल – ख़तना का मुसतहब (अच्छा) वक़्त क्या है?

जवाब – सात साल से बारह साल तक, बाज़ हज़रात पैदाइश के सातवें दिन सुन्नत कहते हैं।

(आलमगीरी 4 पेज 112, अलकलामुल औज़ह पेज 138)

सवाल – सबसे पहले ख़तना किसने किया?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने किया फिर हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने हज़रत इसहाक़ अलेहिस्सलाम का उनकी पैदाइश के सातवें दिन और हज़रत इस्माईल अलेहिस्सलाम का तेरहवीं बरस में ख़तना किया, इसी तरह

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने हज़रत हसनैन क़ारीमैन का उनकी पैदाइश के सातवें दिन ख़त्ना किया।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 373, ख़ाज़िन 1 पेज 89)

सवाल - हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने किस उमर मे अपना ख़तना किया?

जवाब - अस्सी साल की उमर में।

(ख़ाज़िन 1 पेज 89)

सवाल - क्या इससे पहले ख़तना का हुक्म नहीं था?

जवाब - नहीं। (ख़ाज़िन 1 पेज 89, तफ़सीर इब्ने जरीर 1 पेज 441)

सवाल - तो क्या हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पहले अमबियाए किराम बिना ख़तना रहे?

जवाब - नहीं वह ख़तना किये हुऐ पैदा हुऐ थे।

(सीरत हलबी 1 पेज 63, तफ़सीर अज़ीज़ी सूरए बक़र पेज 373)

सवाल - कितने नबी ख़तना किये हुऐ पैदा हुऐ?

जवाब - 17 सत्तरह नबी ख़तना किये हुऐ पैदा हुऐ (1)हज़रत आदम अलैहिस्सलाम (2)हज़रत शीश (3)हज़रत इदरीस (4)हज़रत नूह (5)हज़रत यूसुफ़ (6)हजरत मूसा (7)हज़रत शुऐब (8)हज़रत जक़रया (9)हज़रत यहया (10)हज़रत सालेह (11)हज़रत लूत (12)हज़रत हूद (13)हज़रत सुलैमान (14)हज़रत हन्ज़ला (15)हज़रत साम (16)हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलातु वस्लाम (17)आख़री नबी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम। (ज़रकानी 1 पेज 126, दुर्रे मुख़्तार मअ् रद्दुल मुहतार 5 पेज 496, सीरत हलवी 1 पेज 63)

ज़बानों का बयान

सवाल – तमाम ज़ुबानों में कौनसी ज़ुबान अफ़ज़ल है?

जवाब – तमाम ज़ुबानों में अरबी ज़ुबान अफ़ज़ल है।

(आलमगीरी 4 पेज 123)

सवाल – जन्नत में कौनसी ज़ुबान बोली जाएगी?

जवाब – अरबी ज़ुबान। (आलमगीरी 4 पेज 123)

सवाल – कितने नबियों की ज़ुबान अरबी थी?

जवाब – सिर्फ पाँच नबियों की ज़ुबान अरबी थी। (1)हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम (2)हज़रत हूद अलैहिस्सलाम (3)हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम (4)हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम (5)हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम। (बुस्तानुल आरेफ़ीन पेज 170)

सवाल – क़ब्र में मुन्कर नकीर का सवाल किस ज़ुबान में होगा?

जवाब – सुरयानी ज़ुबान में होगा।

(अलइबरीज़ पेज 128, अलमलफ़ूज़ 4 पेज 14)

बाज़ लोगों ने कहा है अरबी ज़ुबान में होगा। (फ़तावा हदीसिया पेज 7)

सवाल – मुर्दे किस ज़ुबान में जवाब देंगे?

जवाब – सुरयानी ज़ुबान में ही जवाब देंगे। (अलइबरीज़ पेज 128)

सवाल – अरबी ज़ुबान की इब्तिदा किस से हुई?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हुई वह जन्नत में अरबी बोलते थे, ज़मीन पर तशरीफ़ लाने के बाद सुरयानी बोलने लगे, फिर कुबूले तौबा के बाद अरबी ज़ुबान हो गई। अगरचे आम तौर पर मशहूर यह है कि अरबी ज़ुबान हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से ज़ाहिर हुई, और उन्होंने यह ज़ुबान

जुरहम और उसके भाई कतूरा से सीखी यह हज़रत अरबी बोलते थे। (तफ़सीर अज़ीज़ी 1 पेज 164, अलबिदायावन्निहाया 1 पेज 120)

सवाल – सुरयानी ज़ुबान की इब्तिदा किससे हुई?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हुई, आपकी और आपकी औलाद और ज़्यादा तर नबियों की ज़ुबान सुरयानी ही थी। अल्लाह तआला ने हज़रत आदम को तमाम चीज़ों के नाम सुरयानी ज़ुबान ही में सिखाए थे ताकि फ़रिश्ते समझ न सकें। (अलइबरीज़ पेज 127)

सवाल – अल्लाह तआला ने हज़रत आदम को कितनी ज़ुबानों का इल्म दिया था?

जवाब – सात लाख ज़ुबानों का इल्म दिया था आप तमाम ज़ुबानें जानते थे, मसलन, अरबी, फारसी, रुमी, सुरयानी यूनानी वग़ैरह। (रुहुलबयान 1 पेज 69)

सवाल – तूफ़ाने नूह के बाद फिर अरबी ज़ुबान की इब्तिदा किन से हुई?

जवाब – साम बिन नूह की औलाद ने अल्लाह तआला के इलहाम से इस ज़ुबान को ईजाद किया, उन्हीं से इसकी इब्तिदा हुई। (जज़बुल कुलूब पेज 51)

सवाल – इबरानी ज़ुबान की इब्तिदा किससे हुई?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हुई, वाक़ेआ यह हुआ कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ज़ुबान सुरयानी थी, जब आप नमरुद के शर की वजह से बहुक्मे इलाही दरयाऐ फुरात पार करके मुल्के शाम तशरीफ़ लाऐ तो नमरुद ने हज़रत की तलाश में सिपाही भेज दिये, कि जो शख़्स भी सुरयानी ज़ुबान में बात करता हुआ मिले उसे गिरफ़्तार करलें,

जब नमरुद के आदमी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास पहुँचे तो अल्लाह की कुदरत से आपकी ज़ुबान बदल गई और आप सुरयानी के बजाए इबरानी बोलने लगे उन्होंने जब देखा कि आप इबरानी बोल रहे हैं तो कोई बात न की। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इस ज़ुबान की तालीम चूँकि दरयाऐ फुरात पार करने के बाद हुई थी इसलिये इसको इबरानी कहते हैं। (शरह शिफ़ा 1 पेज 497, तबक़ात इब्ने सअद 1 पेज 28)

सवाल – हज़रत यूसुफ़ अलहिस्सलाम कितनी ज़ुबाने जानते थे?

जवाब – छत्तीस सौ ज़ुबाने जानते थे नौ सौ ज़मीन की, नौ सौ आसमान की, नौ सौ परिन्दों की और नौ सौ कीड़ों मकोड़ों की।

(तफ़सीर नईमी पारा 12 पेज 428)

सवाल – अल्लाह तआला ने हज़रत मूसाा अलैहिस्सलाम से किस ज़ाबन में कलाम फ़रमाया?

जवाब – पहले तमाम ज़ुबानों में कलाम फ़रमाया, फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया मेरे मौला मैं उन ज़ुबानों को नहीं समझता, तब अल्लाह तआला ने उनकी ज़ुबान में कलाम फ़रमाया। (तफ़सीर नईमी पारा 6 पेज 98)

सवाल – हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने रब से कितने कलिमात सुने?

जवाब – बारह सौ कलिमात और आपने पूरे जिस्म के साथ कान लगाकर बदन के हर हर रूगँटे से यह कलिमात समाअत फ़रमाऐ। (ख़ाज़िन 4 पेज 214, तफ़सीर नईमी पारा 9 पेज 20)

सवाल – फ़ारसी ज़ुबान की इब्तिदा किस से हुई?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पर पोते फारस बिन

आमूर बिन याफ़िस, बिन नूह अलैहिस्सलाम से इस की इब्तिदा हुई। (उम्दतुलक़ारी 7 पेज 105)

नोटः- तूफ़ाने नूह के बाद आपकी औलाद में 72 ज़ुबानें बोली जाती थीं। (जज़बुल कुलूब पेज 51)

सवाल - उर्दू ज़ुबान की इब्तिदा कब से हुई?

जवाब - 1027 ई० से हुई, लाहौर में पैदा हुई पुरानी पंजाबी ज़ुबान इसकी माँ है। कुछ ने कहा है 1100 ई० से हुई।

(दास्ताने ज़ुबाने उर्दू पेज 96)

जिन्नात का बयान

सवाल - जिन्नात की हक़ीक़त क्या है?

जवाब - वह आग से पैदा किये गऐ हैं, उनमें कुछ को यह ताक़त दी गई है कि जो शक्ल चाहें इख़्तियार कर लें, इन्सान की तरह अक़्ल वाले, रुह वाले और जिस्म वाले हैं, उनमें पैदाइशी सिलसिला, और नस्ल की बढ़ोतरी भी होती है, खाते-पीते, मरते जीते भी हैं।

(फ़तावा हदीसिया पेज 46, बहारे शरीअत 1 पेज 24)

सवाल - क्या उनमें मोमिन व काफ़िर दोनों होते हैं?

जवाब - हाँ दोनों होते हैं, लेकिन काफ़िरों की तादाद ज़्यादा है।

(बहारे शरीअत 1 पेज 24)

सवाल - क्या उनमें भी बहुत से मज़हब के मानने वाले होते हैं?

जवाब - हाँ इन्सान की तरह उनमें भी मुसलमान, यहूदी, नसरानी, मजूसी, मुश्रिक वग़ैरा होते हैं इसी तरह सुन्नी, राफ़ज़ी, ख़ारजी, जबरिया, कदरिया, बिदअती, वग़ैरा भी होते हैं।

(ख़ाज़िन 6 पेज 140, जिल्द 7 पेज 133)

सवाल – क्या जिन्नों में भी कोई नबी हुआ है?

जवाब – नहीं नुबुव्वत सिर्फ़ इन्सान ही के साथ ख़ास है कोई जिन्न नबी नहीं हुआ। (उम्दतुल क़ारी 7 पेज 287)

सवाल – क्या इन्सान की तरह जिन्न को भी सहाबी होने का शर्फ़ हासिल है?

जवाब – हाँ, इन्सान की तरह जिन्नों को भी सहाबी होने का शर्फ़ हासिल है। (तकमीलुल ईमान पेज 9)

सवाल – क्या जिन्नात को भी जन्नत नसीब होगी?

जवाब – इस सिलसिले में चन्द क़ौल हैं, इमामे आज़म फ़रमाते हैं कि नहीं, जन्नत सिर्फ़ इन्सानों के लिये है। सहिबैन फ़रमाते हैं कि नसीब होगी। (शरह फिक्हे अकबर बहरुल उलूम पेज 67, उम्दतुलक़ारी 7 पेज 287) एक कौल यह है कि जिन्नात में से जो मोमिन है वह जन्नत के आस पास मकानों मं रहेंगे, जन्नत में सिर्फ़ सैर करने आया करेंगे। (उम्दतुलक़ारी 7 पेज 287, अलमलफ़ूज़ 4 पेज 80)

शयातीन का बयान

सवाल – शयातीन की हक़ीक़त क्या है?

जवाब – वह आग से पैदा किये गऐ हैं उनको अल्लाह तआला ने यह ताक़त दी है कि जो शक्ल चाहें इख्तियार कर लें, शरीर जिन्नों को शयातीन कहते हैं। (ख़ाज़िन 2 पेज 176)

सवाल – क्या इबलीस कौमे जिन्न में से है?

जवाब – हाँ यही मशहूर और हक़ है।

(कुरान मुक़द्दस, तकमीलुल ईमान पेज 10)

सवाल – इबलीस का अस्ल नाम क्या था?

जवाब – पहले आसमान में उसका नाम आबिद, दूसरे में

ज़ाहिद, तीसरे में आरिफ़ चौथे में वली, पांचवे में तक़ी, छटे में ख़ाज़िन, सातवें में अज़ाज़ील और लोहे महफ़ूज़ में इबलीस था। (सावी 1 पेज 22)

सवाल – इबलीस जन्नत में ख़ज़ानची कितने साल रहा?

जवाब – चालीस हज़ार साल। (सावी 1 पेज 22)

सवाल – इबलीस ने अर्शे आज़म का तवाफ़ कितने साल तक किया?

जवाब – चौदह हज़ार साल। (सावी 1 पेज 22)

सवाल – इबलीस फ़रिश्तों के साथ कितने दिनों तक रहा?

जवाब – अस्सी हज़ार साल। और बीस हज़ार साल तक फ़रिश्तों को वाज़ व नसीहत करता रहा और तीस हज़ार साल तक करोंबीन फ़रिश्तों का सरदार रहा और एक हज़ार साल तक रुहानीन फ़रिश्तों का सरदार रहा। (सावी 1 पेज 22)

सवाल – फिर इबलीस मरदूदे बारगाह क्यों हुआ जबकि वह मुंआल्लिमुल मलकूत (फ़रिश्तों का उस्ताद) था?

जवाब – हज़रत आदम को सजदा न करने की वजह से।

(ख़ाज़िन 2 पेज 176)

सवाल – इबलीस ने मरदूद बारगाह होने से पहले कितने दिनों तक अल्लाह की इबादत व रियाज़त की?

जवाब – पचास हज़ार साल तक, यहाँ तक कि अगर उसके सजदों को फैला दिया जाऐ तो ज़मीन आसमान में कोई जगह बाक़ी न रहे। (ज़रक़ानी 1 पेज 59)

सवाल – क्या इबलीस की तौबा क़ुबूल हो सकती है?

जवाब – हाँ अगर हज़रत आदम को सज्दा कर ले। रिवायत में है कि एक दिन इबलीस हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास

आकर कहने लगा कि हुज़ूर मैं बहुत बड़ा गुनाहगार हूँ, अल्लाह तआला ने आपको कलीम बनाया है, मैं चाहता हूँ कि खुदा की बारगाह में तौबा कर लूँ, आप मेरे लिये खुदा की बारगाह में सिफ़ारिश करें ताकि अल्लाह तआला मेरी तौबा कुबूल फ़रमाले हज़रत मूसा ने दुआ की तो हक़ तआला की तरफ़ से आवाज़ आई ऐ मूसा इबलीस की तोबा तुम्हारी सिफ़ारिश से कुबूल करुगाँ लेकिन शर्त यह है कि इबलीस हज़रत आदम की क़ब्र को सज्दा कर ले, इबलीस ने सुनकर कहा जब आदम की ज़िन्दगी में सज्दा न किया तो अब मरने के बाद क्या सज्दा करुँ। दूसरी रिवायत में है कि इबलीस के एक लाख साल तक दोज़ख़ में जलने के बाद अल्लाह तआला उसको दोज़ख़ से निकालेगा और मैदाने क़यामत में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के सामने खड़ा करेगा और उससे कहा जाऐगा कि हज़रत आदम को सज्दा करले तेरी ख़ता माफ़ है, तब भी वह सज्दा करने से इन्कार करेगा, फिर अल्लाह तआला उसको हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख में डाल देगा।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 158, रुहुलबयान 1 पेज 72)

सवाल – क्या शयातीन अब भी आसमान पर जाते हैं?

जवाब – नहीं पहले शयातीन आसमानों में दाख़िल हो जाते थे और वहाँ की ख़बरें नजूमियों, काहिनों के पास पहुँचाते थे जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुऐ तो तीन आसमानों पर जाने से रोक दिया गया, फिर जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की पेदाइश हुई तो सारे आसमानों पर जाने से रोक दिये गये।

(मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 398)

सवाल – क्या शयातीन आपस में शादी बयाह करते हैं?

जवाब – हाँ शादी बियाह करते हैं और उनमें औलाद पैदा होने और नस्ल बढ़ने का सिलसिला भी जारी है।

(ख़ाज़िन 4 पेज 176, उम्दतुलक़ारी 7 पेज 271)

(हैवानात) जानवरों का बयान

सवाल – अल्लाह तआला ने सबसे पहले किस जानवर को पैदा किया?

जवाब – सबसे पहले मछली को पैदा फ़रमाया।

(हयातुल हैवान 2 पेज 372)

सवाल – जानवरों में बाज़ घरेलू और बाज़ जंगली कैसे हुऐ?

जवाब – जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तमाम रुऐ ज़मीन के ख़लीफ़ा बनाऐ गऐ तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ज़मीन पर तशरीफ़ लाऐ और आपने तमाम रुऐ ज़मीन के जानवरों को आवाज़ दी कि अल्लाह ने तुम पर ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया है उनके हुकम की इताअत व फरमाँबरदारी करो, इस आवाज़ पर तमाम दरयाई जानवरों ने अपना अपना सर पानी से निकालकर इताअत व फ़रमाबरदारी का इज़हार किया और खुश्की के तमाम जानवर हज़रत आदम के पास जमा हो गऐ फिर हज़रत आदम ने हर जानवर को क़रीब बुलाकर उसपर अपना हाथ रखना शुरु कर दिया जो जानवर हज़रत आदम के क़रीब आऐ और उनपर आपका हाथ पहुँचा वह अहली (यानी घरेलू, पाले जाने वाले) हुऐ जैसे घोड़ा, बकरी, कुत्ता, ऊँट, बिल्ली वग़ैरा। और जो जानवर दूर रहे, उन पर आपका हाथ नहीं पहुँचा वह जंगली हुऐ, जैसे नील गाय, हिरन, ख़रगोश वग़ैरा।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरए बक़र पेज 171)

(नोट) घरों में रहने वाले जानवरों को अहली और आदमियों से दूर भागने वाले जानवरों को वहशी कहते हैं।

सवाल – किन जानवरों की कुरबानी जाइज़ है?

जवाब – तीन किस्म के जानवरों की कुरबानी जाइज़ है (1)ऊँट (2)गाय (3)बकरी। भैंस गाय में दाख़िल और भेड़ और दुम्बा बकरी में दाख़िल हैं, उनकी भी कुर्बानी हो सकती है।

(फ़तावा आलमगीरी 4 पेज 80)

सवाल – वह कौनसा जानवर है जिसका गोश्त खाने के बाद वुज़ु करना मुस्तहब है?

जवाब – ऊँट कि उसका गोश्त खा लेने के बाद वुज़ु करना मुस्तहब है। (दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मुहतार 1 पेज 63)

सवाल – जानवरों में आदतन हमल की मुद्दत क्या है?

जवाब – हाथी में हमल की मुद्दत ग्यारह महीने और ऊँट घोड़े, गधे में एक साल, और गाय भैंस में नौ महीने ओर बकरी में पाँच महीने, बिल्ली में दो महीने, कुत्ते में चालीस दिन और तमाम परिन्दों के लिये इक्कीस दिन है। (रद्दुल मोहतार 5 पेज 432)

सवाल – क्या जानवरों को भी माहवारी का खून आता है?

जवाब – हाँ तीन जानवरों को आता है। (1)खरगोश (2)बिज्जू (3)चम्गादड़। (हयातुल हैवान 1 पेज 101 हाशिया कन्ज़ुद्दकाइक़ पेज 13)

सवाल – किन जानवरों का गोश्त खाना हराम व ममनूअ् है?

जवाब – सब की तफ़सील तो दुश्वार है अलबत्ता कुछ उसूल बयान किये जाते हैं जिनसे ज़ुज़इय्यात मालूम हो सकते हैं। (1)हर वह जानवर जो कीले से शिकार करता हो उसका खाना हराम है जैसे शेर, गीदड़, लोमड़ी, बिज्जू वग़ैरा (2)हर वह परिन्दा जो पन्जे से शिकार करता हो उसका खाना हराम है

जैसे, शिकरा, बाज़, चील, हशरातुल अर्द वग़ैरा। (3)इसी तरह वह सारे जानवर हराम व ममनूअ् हैं जिनके गोश्त से इन्सानी जिस्म को नुक़सान पहुँचे, या वह जानवर ऐसा हो कि खुद उनकी ग़िज़ा नापाकी और गन्दगी हो और शरीफ़ तबीअ्त को उनके खाने से क़ब्ज़ हो इस उसूल के तहत तमाम हशरातुलअर्द, ज़हरीले जानवर, गन्दे और मुर्दार खाने वाले चरिन्दे और परिन्दे सब हराम व ममनूअ् हैं। (4)इसी तरह वह जानवर जो जिस्म में किसी हिस्सी ख़राबी का सबब तो नहीं बनते मगर वह ख़बीसुन्नफ़्स और मूज़ी सिफ़त वाले हैं उनके खाने से भी मना किया गया है, जैसे साँप, बिच्छू कछुआ वग़ैरा। (अबुदाऊद शरीफ़ 2 पेज 177) मुक़द्दमा फ़तावा रिज़विया व फ़तावा रिज़विया 8 पेज 316

सवाल – जिन जानवरों को बुतों के नाम पर छोड़ा गया हो उनका गोश्त खाना कैसा है?

जवाब – अगर मुसलमान ख़रीदकर उसको ज़िबह करे तो उसका खाना हलाल है। (फ़तावा रिज़विया 8 पेज 338)

सवाल – वह कौनसा जानवर है जिसके पालने पर नामऐ आमाल से दस नेकियाँ कम हो जाती हैं?

जवाब – कुत्ता है, हदीस शरीफ़ में है जो कुत्ता पाले रोज़ उसकी नेकियों में से दो क़ीरात कम हों। सिर्फ़ दो क़िस्म के कुत्तों की इजाज़त है एक शिकारी कुत्ता उसके लिये जिसे खाने या दवा वग़ैरा सही फ़ायदे के लिये शिकार की हाजत हो। दूसरा वह कुत्ता जो खेती या घर वग़ैरा की हिफ़ाज़त के लिये हो और हिफ़ाज़त की वाक़ई ज़रुरत भी हो। (मिशकात शरीफ़ 2 पेज 359, फ़तावा रिज़विया जिल्द 10 निस्फ़ अव्वल पेज 196)

सवाल – वह कौनसा जानवर है जिसके मारने पर सवाब है?

जवाब – छिपकली या गिरगट। हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स गिरगट या छिपकली को पहली बार में मारेगा तो उसके नामए आमाल में सौ नेकियाँ लिखी जाऐंगी, और दूसरी बार में उससे कम और तीसरी बार में उससे भी कम। (मुस्लिम शरीफ़ 2 पेज 358)

सवाल – किन जानवरों को मारने से मना किया गया है?

जवाब – चूँटी, शहद की मक्खी, मेंडक, लटूरा, हुदहुद।

(अबुदाऊद शरीफ़ 2 पेज 358, हयातुल हैवान 2 पेज 86)

सवाल – हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने कितने जानवरों को मारने की ताकीद फ़रमाई है?

जवाब – छः किस्म के जानवरों को मारने की ताकीद फ़रमाई है (1)काटखाने वाला कुत्ता (2)चूहा (3)बिच्छू (4)चील (5)कव्वा (6)सांप। (फ़तावा रिज़विया जिल्द 10 निस्फ़ अव्वल पेज 100)

सवाल – क्या जानवरों में भी फ़ासिक होते हैं?

जवाब – हाँ, हदीस शरीफ़ में कुछ जानवरों को फ़ासिक कहा गया है, जैसे कव्वा, चील, चूहा, बिच्छू, कटखना कुत्ता, छपकली वग़ैरा। (मुसलिम शरीफ़ 1 पेज 318)

सवाल – वह कौनसा परिन्दा है जिसकी उमर एक हज़ार साल तक होती है?

जवाब – गिद्ध। (हयातुल हैवान जिल्द 2 पेज 349)

सवाल – वह कौनसा जानवर है जो नमरुद की आग को (जिस में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम डाले गये थे) अपने मुँह में पानी लेकर बुझा रहा था?

जवाब – मेंडक। (हयातुल हैवान 2 पेज 86)

सवाल – वह कौनसा परिन्दा है जो आतिशे नमरुद में अपनी चोंच से पानी का कतरा डाल रहा था ताकि आग बुझ जाऐ और

अल्लाह के ख़लील को नुक़सान न पहुँचे?

जवाब – हुद हुद। (कससुल अम्बिया पेज 8 पेज 199)

सवाल – वह कौनसा परिन्दा है जो ज़मीन के अन्दर का पानी ऊपर से देखकर बता देता है कि यहाँ पानी इतने फिट पर निकलेगा?

जवाब – हुद हुद। (कुरान मुक़द्दस सूरऐ नमल)

सवाल – वह कौनसा परिन्दा है जो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास ख़बर लाया था कि यमन की हुकमराँ एक औरत है?

जवाब – हुद हुद। (कुरान सूरऐ नमल)

सवाल – वह कौनसा जानवर है जो आतिशे नमरुद में फूंक मार रहा था ताकि अल्लाह के ख़लील के लिये आग भड़क उठे और आपको तकलीफ़ पहुँचे?

जवाब – वह जानवर गिरगट या छिपकला है। (खाज़िन 4 पेज 244)

सवाल – वह कौनसा परिन्दा है जो आदमी को नमाज़ के लिये बेदार करता है और अल्लाह के रसूल ने उसे बुरा कहने से मना फ़रमाया?

जवाब – वह परिन्दा मुर्ग़ है। (मिश्कात शरीफ़ 2 पेज 361)

सवाल – वह कौनसा जानवर है जो कभी पानी नहीं पीता?

जवाब – शुतर मुर्ग़ और गोह। (हयातुल हैवान 2 पेज 357)

सवाल – कौनसा परिन्दा अल्लाह का लश्कर है?

जवाब – टिड्डी अल्लाह का लश्कर है, उसके सीने पर यह इबारत लिखी हुई है "नहनु जुन्दल्लाहिल आज़म" (हम अल्लाह का अज़ीम लश्कर हैं।) (हयातुल हैवान 1 पेज 234)

सवाल – क्या जन्नत में जानवर भी दाख़िल होंगे?

जवाब – हाँ जन्नत में दस जानवर दाख़िल होंगे। (1)हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम का बुराक (2)हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी (3)हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बछड़ा (4)हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम का मेंढा (5)हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की गाय (6)हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की मछली (7)हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम का खच्चर (8)हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की चूँटी (9)बिलक़ीस का हुद हुद (10)असहाबेकहफ़ का कुत्ता।

(अलइश्बाह वन्नज़ाइर व हमवी शरह इश्बाह पेज 583)

सवाल – क्या इन जानवरों के इलावा भी कुछ जानवर जन्नत में दाख़िल होंगे?

जवाब – हाँ जैसे मोर, घोड़ा, और वह जानवर जो देखने में खूबसूरत है या वह परिन्दा जिसकी आवाज़ सुरीली और अच्छी है या वह जानवर जिनका गोश्त जन्नतियों को पसन्द होगा, एहले जन्नत की ग़िज़ा के वास्ते जन्नत में जाऐंगे।

(तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 पेज 63)

सवाल – क्या कुछ जानवर जहन्नम में भी जाऐंगे?

जवाब – हाँ वह जानवर जो मूज़ी हैं जैसे साँप बिच्छू वग़ैरा जहन्नम में काफ़िरों को अज़ाब देने के लिये जाऐंगे उनको खुद कोई तक़लीफ़ न होगी जिस तरह अज़ाब के फ़रिश्तों को कोई तक़लीफ़ न होगी। (तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 पेज 63, अलमलफ़ूज़ 4 पेज 80)

सवाल – बाक़ी जानवर कहाँ जाऐंगे?

जवाब – मिट्टी कर दिये जाऐंगे उनको मिट्टी होता देखकर काफ़िर कहेंगे काश हम भी उन्हीं की तरह मिट्टी हो जाते।

(अलमफ़ूज़ 4 पेज 80)

ज़मीन का बयान

सवाल – सबसे पहले ज़मीन का कौनसा हिस्सा बना?

जवाब – वह हिस्सा बना जहाँ अभी खानऐ काबा है जिसे अल्लाह तआला ने ज़मीन की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले बनाया फिर वहीं से सारी ज़मीन फैलाई गई। (खाज़िन 1 पेज 94)

सवाल – ज़मीन का वह कौनसा हिस्सा है जो सारी ज़मीन से अफ़ज़ल है?

जवाब – हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के मज़ारे पाक यानी ज़मीन का वह हिस्सा जो आपके जिस्मे अनवर से मिला हुआ है, खानऐ काबा, बल्कि अर्शे आज़म से भी अफ़ज़ल है। (रद्दुल मोहतार 2 पेज 263, ज़रक़ानी 1 पेज 324, जज़्बुल कुलूब पेज 18)

सवाल – ज़मीन व आसमान में पहले कौन पैदा हुआ?

जवाब – ज़मीन। (फतावा हदीसिया पेज 19, ज़रक़ानी 1 पेज 47)

सवाल – ज़मीन और आसमान में कौन अफ़ज़ल है?

जवाब – ज़मीन अफ़ज़ल है क्योंकि आसमान अगरचे फ़रिश्तों के रहने की जगह है और गुनाहों की जगह नहीं लेकिन ज़मीन हज़राते अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम खुसूसन हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम का मसकन यानी ठहरने की जगह और दफ़न होने की जगह है। (जज़्बुल कुलूब पेज 18)

सवाल – ज़मीन और आसमान किस दिन पैदा हुऐ?

जवाब – इतवार के दिन ज़मीन और आसमान के माद्दे बनाऐ गये, पीर के दिन सातों तबक ज़मीन बनी, मंगल के दिन पहाड़ों को पैदा किया गया, दरया और चश्में जारी किये गये, बुध के दिन तमाम दरख़्त और जंगली जानवर बनाऐ गये, फिर जुमेरात

के दिन सातों आसमान पैदा हुऐ और जुमे के दिन चाँद, सूरज सितारे बनाऐ गये, और जुमे ही के दिन हर आसमान पर फ़रिश्ते भी मुक़र्रर किये गये, इसी दिन असर व मग़रिब के दरमयान हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की भी तख़लीक़ हुई।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 136, ख़ाज़िन 6 पेज 88)

बाज़ रिवायतों में आता है कि अल्लाह तआला ने इतवार और पीर के दिन ज़मीन के माद्दे को पैदा किया, फिर दो दिन में आसमान ओर आसमान की सारी चीज़ों को पैदा किया फिर दो दिन में ज़मीन को फैलाया और ज़मीन की सारी चीज़ें पैदा की इस तरह कुल छः दिन हुऐ। (जुमल 1 पेज 36, सावी 4 पेज 17)

सवाल – ज़मीन के तबक़ात कितने हैं?

जवाब – सात हैं। (ख़ाज़िन 7 पेज 26)

सवाल – क्या इन तबक़ात के दरमयान फ़ासला है?

जवाब – नहीं बल्कि बाज़ बाज़ के ऊपर है उनके दरमयान कोई ख़ला नहीं है। (गराइबुल कुरआन पारा 28 पेज 95)

सवाल – हर तबक़े की मोटाई कितनी है?

जवाब – पाँच सौ वर्ष की राह। (तफ़सीर इब्ने जरीर पारा 28 पेज 99)

सवाल – ज़मीन का फैलाओ कितना है?

जवाब – कुल रुए ज़मीन का फैलाव पाँच सौ साल की दूरी है जिसके तीन सौ हिस्सों में पानी ही पानी है और एक सौ नव्वे हिस्सों में याजूज माजूज आबाद हैं, बाक़ी रह गऐ दस हिस्से जिनके सात हिस्सों में हब्शी लोग आबाद हैं और तीन हिस्सों में उनके इलावा बाक़ी मख़लूक़ आबाद है। (सावी 3 पेज 23)

सवाल – क्या ज़मीन मुतहर्रिक (हरकत करने वाली) है?

जवाब – नहीं ज़मीन और आसमान दोनों साकिन यानी एक

जगह जमे हुऐ हैं अलबत्ता सितारे मुतहर्रिक हैं।

(फ़तावा रिज़विया 9 पेज 177)

सवाल – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से पहले ज़मीन में कौनसी मख़लूक़ आबाद थी?

जवाब – जिन्नता। (रुहुल बयान 1 पेज 64, अल मलफूज़ 1 पेज 74)

सवाल – यह आदम की पैदाइश से कितने साल पहले आबाद थे?

जवाब – दौ हज़ार साल पहले आबाद थे, जब उन्होंने ज़मीन में नाहक क़त्लो ग़ारत गरी शुरु की और फ़ितना व फ़साद फैलाया तो अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों की एक जमाअत भेजी जिन्होंने मार पीट कर उन्हें पहाड़ों और जज़ीरों की तरफ़ भगा दिया। (अलबिदाया वन्निहाया 1 पेज 71, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान पेज 10)

सवाल – यह कितना अरसा ज़मीन पर रहे?

जवाब – साठ हज़ार बरस। (अलमफूज़ 1 पेज 74)

सवाल – अब तक पूरी रुऐ ज़मीन पर कितने बादशाहों ने हुकूमत की?

जवाब – अब तक चार ऐसे बादशाह गुज़रे हैं जो पूरी दुनिया पर हुकमिराँ थे दो मोमिन (1)हज़रत सिकन्दर ज़ुल्करनैन (2)हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और दो काफ़िर (1)नमरुद (2)बख़्ते नसर। फिर अनक़रीब पाचवें बादशाह इस उम्मत में होने वाले हैं जिनका नाम महदी है, उनकी हुकूमत भी तमाम रुऐ ज़मीन पर होगी। (ख़ाज़िन 1 पेज 230, तकमीलुल ईमान पेज 40)

सवाल – वह कौन हज़रात हैं जिनके मरने के बाद उन्हें मिट्टी नहीं खाती?

जवाब – वहं आठ क़िस्म के लोग हैं (1)अम्बियाए किराम (2)शुहादाऐ इज़ाम (3)आलिमे दीन (4)औलियाऐ किराम

(5)हुफ़्फ़ाज़े किराम बशर्ते के कुरान के मुताबिक अमल करते हों। (6)वह लोग जो कसरत से दुरुद शरीफ़ पढ़ते रहे (7)वह जिस्म जिन्होंने कभी अल्लाह की ना फ़रमानी न की हो (8)वह मुआज़्ज़िनीन जो बिला उजरत अज़ान दिया करते हों उनके बदन को ज़मीन नहीं खाती। (अलमलफ़ूज़ 4 पेज 60)

सवाल - क्या वजह है कि ज़मीन पानी, तेल, ओर सय्याल बहने वाली चीज़ों को जज़्ब कर लेती है, लेकिन खून को जज़्ब नहीं करती?

जवाब – एक रिवायत में है कि जब काबील ने हाबील के क़त्ल से इन्कार किया और यह कहा कि अगर हमने क़त्ल किया है तो उसका खून कहाँ है तो उसके बाद ही से अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन पर खून का जज़्ब करना हराम कर दिया ताकि क़ातिल इनकार न कर सके। (रुहुलबयान 1 पेज 556, सावी 1 पेज 243)

सवाल – ज़मीन में ज़लज़ला कैसे होता है?

जवाब – जब ज़मीन में कसरत से गुनाह होने लगते हैं तो रब तआला ग़ाफ़िल बन्दों को आगाह करने के लिये फ़रिश्तों को ज़मीन में हरकत देने का हुक्म देता है तो फ़रिश्ते तेज़ और ताक़तवर हवा ज़मीन में दाख़िल कर देते हैं जिसकी हरकत से ज़मीन हिलने लगती है उसी को ज़लज़ला कहते हैं।

(फ़तावा अज़ीज़िया 2 पेज 128)

इमाम एहले सुन्नत फ़ाज़िले बरेलवी फ़रमाते हैं असलीं सबब गुनाह है। पैदा यूँ होता है कि एक पहाड़ जिसका नाम काफ़ है तमाम ज़मीन को घेरे है और उसके रेशे ज़मीन के अन्दर सब जगह फैले हुऐ हैं जैसे बड़े दरख़्त की जड़ें दूर तक अन्दर अन्दर फैलती हैं। जिस ज़मीन में ज़लज़ले का हुक्म होता है वह पहाड़

अपनी उस जगह के रेशो को जुंबिश देता है, फिर ज़मीन हिलने लगती है। (फ़तावा रिज़विया जिल्द 12 पेज 189)

पानी का बयान

सवाल – दुनिया के तमाम पानियों में अफ़ज़ल कौनसा पानी है?

जवाब – वह पानी जो हुजूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की मुबारक उंगलियों से निकला वह दुनिया के तमाम पानियों से अफ़ज़ल है यहाँ तक कि आबे ज़म-ज़म और आबे कौसर से भी अफ़ज़ल है। (अलइश्बाह वन्नज़ाइर पेज 394, फ़तावा रिज़विया 1 पेज 593)

सवाल – आबे कौसर अफ़ज़ल है या आबे ज़मज़म?

जवाब – आबे कौसर। (फ़तावा रिज़विया 1 पेज 595)

सवाल – वह कौनसा पानी है जिसे मुनाफ़िक कभी शिकम सैर होकर नहीं पी सकता?

जवाब – वह आबे ज़म-ज़म है जिसे अल्लाह तआला ने मोमिन और मुनाफ़िक़ के दरमयान निशानी करार दिया है कि मुनाफ़िक कभी शिकम सैर होकर नहीं पी सकता।

(उम्दुतल क़ारी 4 पेज 646)

सवाल – वह कौनसा पानी है जिससे गन्दगी दूर करना गुनाह है?

जवाब – आबे ज़म-ज़म। (रद्दुल मोहतार 2 पेज 263)

सवाल – वह कौनसा पानी है जो क़यामत के दिन नेकियों के पल्ले में तोला जाऐगा?

जवाब – वुज़ु का पानी। (तिरमिज़ी शरीफ़ 1 पेज 18)

सवाल – पानी का रंग कैसा है?

जवाब – मैला माइल बयक गूना सवादे ख़फ़ीफ़।

(फ़तावा रिज़विया 1 पेज 593)

सवाल – क्या अम्बियाए किराम के वुज़ु या गुस्ले जनाबत के पानी से पाकी हासिल करना जाइज़ है?

जवाब – हाँ हमारे हक़ में दोनों ताहिर व मुतहहिर हैं (पाक और पाक करने वाले) इनसे वुज़ु ओर गुस्ल दोनो हो जाऐगा।

(फ़तावा रिज़विया 1 पेज 279)

सवाल – किस पानी को खड़े होकर पीने का हुक्म है?

जवाब – आबे ज़म-ज़म शरीफ़ और वुज़ु का बचा हुआ पानी।

(रद्दुल मोहतार 1 पेज 91)

सवाल – वह कौनसा पानी है जो खाने की जगह खाना और दवा की जगह दवा का काम करता है?

जवाब – ज़म-ज़म शरीफ़है कि उसके पीने के बाद न किसी ग़िज़ा की ज़रुरत न दवा की। (उम्दतुल क़ारी पेज 645 जिल्द 4)

सवाल – समुन्दर कितने हैं?

जवाब – सात समुन्दर मशहूर हैं मगर उनमें पाँच ज़्यादा बड़े हैं (1)बहरे हिन्द (2)बहरे औक़्यानूस (3)बहरे शाम (4)बहरे नीतस (5)बहरे जरजान (तफ़सीर कबीर 2 पेज 66)

सवाल – तूफ़ाने नूह किस जगह आया था?

जवाब – तमाम रुए ज़मीन पर। (तफ़सीर नईमी पारा 11 पेज 430)

सवाल – इस तूफ़ान में पानी ज़मीन की सतह से कितना ऊँचा था?

जवाब – ज़मीन के ऊँचे पहाड़ से तीस गज़ ऊपर था।

(अलमलफ़ूज़ 1 पेज 73)

सवाल – क्या समुन्दर के नीचे आग है?

जवाब – हाँ समुन्दर के नीचे आग है इसलिये बग़ैर सही हाजत के समन्दर में सवार होना मना है। (फ़तावा रिज़विया 1 पेज 443)

सवाल – क्या क़यामत के दिन समुन्दर को आग बना दिया जाऐगा?

जवाब – हाँ क़यामत के दिन अल्लाह तबारक व तआला तमाम समन्दरों को आग कर देगा जिससे जहन्नम की आग में और भी ज़्यादती हो जाऐगी। (खज़ाइन पेज 757)

आसमान का बयान

सवाल – आसमान कितने हैं?

जवाब – सात हैं। (कुरान मुक़द्दस सूरऐ तलाक़)

सवाल – उनके ऊपर क्या है?

जवाब – उनके ऊपर कुर्सी और कुर्सी के ऊपर अर्शे आज़म है। (खज़ाइन पेज 63)

सवाल – हर आसमान की मोटाई कितनी है?

जवाब – पाँच सौ बरस की राह। (शरह शिफ़ा 1 पेज 132)

सवाल – क्या हर दो आसमान के बीच में फ़ासला है या एक दूसरे से आपस में मिले हुऐ हैं?

जवाब – नहीं एक दूसरे से अलहदा हैं और हर एक के दरमयान पाँच सौ बरस की दूरी है। (शरह शिफ़ा 1 पेज 132)

सवाल – आसमान की शक्ल कैसी है?

जवाब – नील गूँ कुब्बे (गुम्बद) की तरह।

(इस्लाम और चाँद का सफ़र पेज 75)

सवाल – क्या आसमान मुतहर्रिक (हिलने वाला) है?

जवाब – नहीं आसमान व ज़मीन दोनों साकिन, ठहरे हुऐ हैं उनमे से कोई भी मुतहर्रिक नहीं। (कुरान मुक़द्दस सूरऐ फ़ातिर)

सवाल – ज़मीन और आसमान के दरमयान कितना फ़ासला है?

जवाब – पाँच सौ बरस की दूरी का फासला है।

(उम्दतुल क़ारी 2 पेज 200)

सवाल – क्या ज़मीन की तरह आसमान में भी रात होती है?
जवाब – नहीं रात का आना ज़मीन वालों के साथ ख़ास है।
(फ़तावा हदीसिया पेज 19)

सवाल – आसमान को किस चीज़ से बनाया गया?
जवाब – बाज़ रिवायत में है कि आसमान के पैदा होने से पहले पानी मौजूद था और हवा भी हवा पानी से टकराई जिससे पानी में धुवाँ ज़ाहिर हुआ और वह धुवाँ ऊपर की तरफ़ उठा तो यही आसमान का माद्दा बना और इसी से सातों आसमान बनाऐ गये। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 136)

सवाल – क्या यह सातों आसमान नाम और बनावट के एतेबार से मुख़्तलिफ़ हैं?
जवाब – हाँ मुख़्तलिफ़ हैं, पहले आसमान का नाम रक़ी, है जो सब्ज़ ज़मुर्रद का है दूसरे का नाम अरक़लून है जो सफ़ेद चाँदी का है, तीसरे का नाम कैदूम है जो सुर्ख़ याकूत का है, चौथे का नाम माऊन है जो सफ़ेद मोतियों का है, पाँचवे का नाम वबक़ा है जो सुर्ख सोने का है छटे का नाम वफ़्ना है जो ज़रद याकूत का है, सातवें का नाम अरुबा है जो नूर से चमक रहा है। (रुहुल बयान 1 पेज 62)

सवाल – बिजली क्या चीज़ है?
जवाब – अल्लाह तआला ने बादलों के चलाने पर एक फ़रिश्ता मुकर्रर फ़रमाया है। जिसका नाम रअ़द है उसका क़द बहुत छोटा है और उसके हाथ में एक बहुत बड़ा कोड़ा है जब वह कोड़ा बादल को मारता है तो उसकी तर्री से आग झड़ती है उस आग का नाम बिजली है। (फ़तावा रिज़्विया 12 पेज 189)

सवाल – बादल कैसे बनता है?

जवाब – बादल बुख़रात से बनते हैं जब रतूबत में हरारत अमल करती है भाप पैदा होती है, अल्लाह तआला हवा को भेजता है कि वह उसको जमा करती है फिर तह-ब-तह उसके बादल बनाती है फिर जहाँ हुक्म होता है उसे ले जाती है और बहुक्मे इलाही हरारत के अमल से वह पिघल कर पानी होकर गिरती है। (फ़तावा रिज़विया 12 पेज 193)

चाँद सूरज और सितारों का बयान

सवाल – चाँद और सूरज कहाँ हैं?

जवाब – तहक़ीक़ यह है कि चाँद और सूरज ज़मीन और आसमान के दरमयान एक घेरे में हैं।

(तफ़सीर नसफ़ी 3 पेज 78, इस्लाम और चाँद का सफ़र 58)

सवाल – सितारे कहाँ हैं?

जवाब – ज़मीन और आसमान के बीच में नूरानी जन्ज़ीरों में लटकी हुई कन्दीलों के अन्दर हैं और यह ज़न्जीरें फ़रिश्तों के हाथों में हैं। तफ़सीरे कबीर 8 पेज 338 (तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 पेज 61)

सवाल – क्या चाँद, सूरज और सितारे मुतहर्रिक हैं?

जवाब – हाँ यह तीनों मुतहर्रिक हैं इन तीनों की हरकत नस्से कत्ई से साबित है, इरशादे रब्बानी है कुल्लु फी फल किनयसबहून। हर एक एक घेरे में तैर रहा है। यहाँ लफ़्ज़े कुल अपने उमूम के ऐतेबार से चाँद, सूरज, और सितारे सबको शामिल है। (जलालैन शरीफ पेज 272)

सवाल – क्या चाँद और सूरज बिज़्ज़ात रौशन हैं?

जवाब – सूरज की रोशनी तो बिज़्ज़ात है और वह बिज़्ज़ात ही रौशन है, मगर चाँद की रौशनी बिज़्ज़ात नहीं बल्कि चाँद की

रौशनी सूरज की रौशनी से फ़ायदा हासिल करके पैदा होती है।

(सावी जिल्द 2 पेज 152, फ़तावा रिज़विया 4 पेज 650)

सवाल – चाँद और सूरज का रुख किस तरफ़ है?

जवाब – रुख़ आसमान की तरफ़ और पीठ ज़मीन की तरफ़ है।

(ख़ाज़िन व मआलिम 7 पेज 129)

सवाल – क्या चाँद ज़मीन से बड़ा है?

जवाब – नहीं बल्कि ज़मीन चाँद से चौगुनी बड़ी है।

(इस्लाम और चाँद का सफ़र पेज 55)

सवाल – क्या सूरज ज़मीन से बड़ा है?

जवाब – हाँ तक़रीबन तेरह लाख गुना बड़ा है।

(इसलाम और चाँद का सफ़र पेज 51)

सवाल – चाँद ज़मीन से कितनी दूरी पर है?

जवाब – दो लाख मील से कुछ ज़्यादा दूरी पर है।

(इस्लाम और चाँद का सफ़र पेज 54)

सवाल – सूरज ज़मीन से कितनी दूरी पर है?

जवाब – नौ करोड़ तीस लाख मील की दूरी पर है।

(इस्लाम और चाँद का सफ़र पेज 51)

सवाल – सूरज का ठहरना या लौटना कितनी मरतबा हुआ?

जवाब – सात बार हुआ चार मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहे वसल्लम के लिये और तीन बार दूसरे नबियों के लिये। (1)हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिये जब आप जिहाद के लिये घोड़ों का मुआयना फ़रमा रहे थे कि सूरज गुरुब हो गया और असर की नमाज़ कज़ा हो गई तो आपने दुआ की तो सूरज लौट आया फिर आपने असर की नमाज़ अदा की। (2)हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिये जब अल्लाह तबारक व तआला ने

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बनी इस्राईल को साथ लेकर चलने का हुक्म दिया तो यह भी फ़रमाया था कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का ताबूत साथ लेते जाना। इधर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इसराईल से कह दिया कि फज्र के वक़्त निकलेंगे और ताबूत के तलाश करने में लग गऐ यहाँ तक कि फज्र तुलूअ् होने के क़रीब हो गया लेकिन ताबूत का पता न चला तो आपने खुदा की बारगाह में दुआ की ऐ अल्लाह तुलूअ् आफ़ताब को मुअख्खर फ़रमादे, इसलिये सूरज आपके लिये ठहरा रहा यहाँ तक कि ताबूत हासिल हो गया।

(3) हज़रत यूशअ् बिन नून के लिये जब आप बैतुल मुक़द्दस के महाज़ पर कौमे जब्बारीन से जिहाद फ़रमा रहे थे जुमे का दिन था अभी जंग फ़तह होने में देर थी यहाँ तक कि सूरज डूबने लगा अगला दिन सनीचर का था जिसमें जंग करना हज़रत मूसा की शरीअ़त में जाइज़ न था आपने दुआ फ़रमाई और सूरज आपकी दुआ से ठहर गया जब जंग फ़तह हो गई और ज़ालिमों को हार हुई तो गुरुब हो गया।

(4) जंगे ख़न्दक़ के मौके पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के लियें जब आप की अस्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई।

(5) हज़रत जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने एक बार सूरज को हुक्म दिया तो थोड़ी देर तक ठहरा रहा।

(6) मेराज की रात वापसी मे आपने मक्के वालों को ख़बर दी थी कि तुम्हारा क़ाफ़िला जो तिजारत के लिये गया हुआ है सूरज निकलने से पहले पहुँचने वाला है हुस्ने इत्तेफ़ाक़ के क़ाफ़िले के पहुँचने में देर हो गई और सूरज निकलने वाला ही था कि

आपने दुआ फ़रमाई और सूरज ठहर गया।

(7) मन्ज़िले सहबा पर हज़रत अली के लिये आपके हुक्म से सूरज लौट आया। (रुहुल बयान 3 पेज 347, सीरत हलबी 1 पेज 422 ता 426, उम्दतुलक़ारी 7 पेज 146, अलअम्नु वल उला पेज 103)

सिदरतुल मन्तहा और वैतेमामूर का बयान

सवाल – सिदरतुल मुन्तहा क्या चीज़ है?

जवाब – एक दरख़्त है जिसकी जड़ छटे आसमान में और उसकी शाखें सातवे आसमान में फैली हुई हैं ओर बुलन्दी सातवें आसमान से भी ज़्यादा है उसके फल मटके की तरह और पत्ते हाथी के कान की तरह हैं उसमें रंग बिरंग के फल हैं उस पर निहायत खूबसूरत सजावट है उसका एक पत्ता अगर ज़मीन पर रख दिया जाऐ तो पूरे एहले ज़मीन को रौशन कर दे। और उसके हर पत्ते पर एक फ़रिश्ता है।

(ख़ाज़िन व मालिम जिल्द 6 पेज 215, अशिअअतुललमआत 4 पेज 418)

सवाल – सिदरतुल मुन्तहा कितना बड़ा दरख़्त है?

जवाब – इतना बड़ा दरख़्त है कि सवार उसकी टहनी के साए में सौ बरस तक चले या उसका साया एक लाख सवारों को किफ़ायत करे। (ख़ाज़िन व मआलिम जिल्द 6 पेज 215)

सवाल – उसको सिदरतुल मुन्तहा क्यों कहते हैं?

जवाब – इसलिये कहते हैं कि बन्दों के अमल, और मख़्लूक के इल्म वहाँ तक मुन्तहा (आख़री मन्ज़िल में) हो जाते हैं जो चीज़ नीचे से चढ़ती है उसकी भी यह आख़री हद है और जो चीज़ ऊपर से उतरती है उसकी भी मुन्तहा (आख़री हद) है और फ़रिश्ते भी यहीं ठहर जाते हैं इसलिये सिदरतुल मुन्तहा

कहते हैं। (मवाहिबल दुन्निया 2 पेज 25, ख़ाज़िन व मआलिम 6 पेज 215)

सवाल – क्या इससे ऊपर कोई जा सकता है?

जवाब – हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के इलावा कोई न जा सका। (मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 25)

सवाल – ज़मीन से सिदरतुल मुन्तहा तक कितनी दूरी है?

जवाब – पच्चास हज़ार बरस की राह (अलमलफ़ूज़ 4 पेज 9)

सवाल – बैते मामूर कहाँ है?

जवाब – सातवें आसमान में अर्शे आज़म के सामने काबा शरीफ़ के ठीक ऊपर फ़रिश्तों की मख़्सूस इबादत गाह और उनका किबला है हर रोज़ उसमें ऐसे सत्तर हज़ार फ़रिश्ते तवाफ़ व नमाज़ के लिये हाज़िर होते हैं कि फिर उन्हें दोबारा नमाज़ व तवाफ़ का मौका नहीं मिलता।

(उम्दतुल कारी 2 पेज 201, ख़ाज़िन वमआलिम 6 पेज 206)

सवाल – क्या फ़रिश्ते उसमें अज़ान व जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ते हैं?

जवाब – हाँ हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम अज़ान देते हैं जिनकी आवाज़ सातों आसमान और सातों ज़मीन के फ़रिश्ते सुन लेते हैं और हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम सबके इमाम होते हैं। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 310)

सवाल – क्या बत मामूर में फ़रिश्तों के इलावा भी किसी ने नमाज़ पढ़ी है?

जवाब – हाँ शबे मेराज में तमाम नबियों और उम्मते मरहूमा ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ी और आपने सबकी इमामत फ़रमाई। (अलमलफ़ूज़ 4 पेज 47)

अर्श व कुर्सी का बयान

सवाल – क्या अर्शे आज़म कोई जिस्म हैं?

जवाब – हाँ मख़लूकात में सबसे बड़ा जिस्म है जो हरकत व सुकून कुबूल करता है। (मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 118)

सवाल – उसकी लम्बाई चौड़ाई कितनी है?

जवाब – हदीस शरीफ़ में है कि सातों आसमान और ज़मीन कुर्सी के आगे इस तरह हैं जैसे एक चटयल मैदान में एक छल्ला पड़ा हो। और कुर्सी अर्श के किनारे ऐसी है जैसे एक चटयल मैदान में एक छल्ला पड़ा हो।

(ख़ाज़िन 1 पेज 228, अलमलफ़ूज़ 4 पेज 64)

सवाल – क्या अर्श भी अल्लाह तआला से ख़ौफ़ खाता है?

जवाब – हाँ तमाम मख़लुक़ात से ज़्यादा ख़ौफ़ खाता है यहाँ तक कि जब अल्लाह ने उसको पैदा किया तो उसकी अज़मत व जलाल से कांपता था, फिर जब कुदरत ने उसपर "लाइलाह इल्लल्लाह" लिख़ दिया तो इस नाम शरीफ़ की हेबत से और ज़्यादा लरज़ने लगा फिर जब "उसपर मुहम्मदु रसूलुल्लाह" लिखा तो इस नाम पाक की बरकत से उसको सुकून हासिल हुआ और लरज़ना बन्द हो गया। (मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 34)

सवाल – अर्शे आज़म की क्या शान है? आया रखा हुआ है या उसको कोई उठाए हुऐ है?

जवाब – इस वक़्त तो चार फ़रिश्ते उसको काँधों पर उठाऐ हुऐ हैं और क़यामत के दिन आठ फ़रिश्ते उठाऐंगे।

(ज़रकानी 6 पेज 86, अलमलफ़ूज़ 4 पेज 64)

दूसरी रिवायत में है कि इस वक़्त आठ फ़रिश्ते उठाऐ हुऐ हैं।

(ख़ाज़िन 7 पेज 120)

सवाल – अर्श के उठाने वाले फ़रिश्ते कैसे हैं?

जवाब – पहाड़ी बकरों की शक्ल में हैं उनके पाँव के नीचे से घुटनों तक पाँच सौ बरस की राह है, एक रिवायत में है कि कान की एक लौ और काँधों के बीच सात सौ बरस की दूरी है। बाज़ रिवायत में है कि कोई इन्सान की शक्ल, कोई गिद्ध की शक्ल, कोई बैल की शक्ल और कोई शेर की शक्ल में है। (ख़ाज़िन 7 पेज 120)

सवाल – कुर्सी क्या है?

जवाब – कुर्सी से मुराद या तो इल्म व कुदरत है या खुद नफ्स कुर्सी जो सातवें आसमान के ऊपर है जिसे चार फ़रिश्ते उठाए हुऐ हैं। (सावी 1 पेज 107)

सवाल – कुर्सी के ऊपर क्या है?

जवाब – अर्शे आज़म। (ख़ज़ाइन पेज 63)

सवाल – सातवें आसमान से कुर्सी तक कितना फ़ासला है?

जवाब – पाँच सौ बरस की राह। (ख़ाज़िन जिल्द 7 पेज 120)

सवाल – अर्श व कुर्सी के दरमयान किस क़दर फ़ासला है?

जवाब – अर्श के उठाने वाले फ़रिश्तों और कुर्सी के उठाने वाले फ़रिश्तों के दरमयान में सत्तर हिजाबात (परदे) तारीकी के और सत्तर हिजाबात नूर के हैं और हर हिजाब की मोटाई पाँच सौ बरस की राह है और अगर इस क़दर फ़ासला न होता तो कुर्सी के उठाने वाले फ़रिश्ते अर्श के उठाने वाले फ़रिश्तों के नूर से जल जाते। (ख़ाज़िन 1 पेज 228)

सवाल – कुर्सी के उठाने वाले फ़रिश्ते कैसे हैं?

जवाब – उन फ़रिश्तों में से हर एक के चार मुँह हैं और उनके कदम उस पत्थर पर हैं जो सातवीं ज़मीन के नीचे है, एक फ़रिश्ता हज़रत आदम की शक्ल में है वह एक साल से दूसरे साल तक आदम की औलाद के लिये रिज़्क और बारिश का

सवाल करता है। और एक फ़रिश्ता गिद्ध की शक्ल में है जो परिन्दों के लिये एक साल से दूसरे साल तक रिज़्क का सवाल करता है। और एक फ़रिश्ता बैल की शक्ल में है जो चौपायों के लिये एक साल से दूसरे साल तक रिज़्क का सवाल करता है और एक फ़रिश्ता शेर की तरह है वह वहशियों के लिये एक साल से दूसरे साल तक रिज़्क का सवाल करता है। (ख़ाज़िन 1 पेज 228)

लौहे महफ़ूज़ और क़लम का बयान

सवाल – लौहे महफ़ूज़ किस चीज़ का है?

जवाब – सफ़ेद मोती का है उसके दोनों किनारे मोती और याकूत के हैं और उसके दोनों तरफ़ सुर्ख़ याकूत के हैं।

(ख़ाज़िन व मआलिम 7 पेज 193)

सवाल – लौहे महफ़ूज़ कहाँ है?

जवाब – अर्श की दाहनी तरफ़ ऊपर का हिस्सा अर्श से मिला हुआ है और नीचे का हिस्सा एक फ़रिश्ते की गोद में है।

(ख़ाज़िन व मआलिम 7 पेज 193)

सवाल – लौहे महफ़ूज़ कितना बड़ा है?

जवाब – इतना बड़ा है जितना ज़मीन व आसमान के दरमयान फ़ासला है यानी पाँच सौ बरस की दूरी बराबर और उसका अर्ज़ इस क़दर है जितना मश्रिक व मग़रिब के दरमयान फ़ासला है। (ख़ाज़िन व मआलिम 7 पेज 193)

सवाल – लौहे महफ़ूज़ को लौहे महफ़ूज़ क्यों कहा जाता है?

जवाब – इसलिये कहते हैं कि ज़्यादती व नुक़सान और शैतानी तसर्रुफ़ात (दख़ल) से पाक है। (ख़ाज़िन व मआलिम 7 पेज 193)

सवाल – लौहे महफ़ूज़ में क्या लिखा है?

जवाब – उसके शुरु में लिखा है "*लाइला-ह-इल्लल्लाहु वहदहु दीनुहुल इस्लाम व मुहम्मदुन अब्दुहु वरसूलुहु फ़मन आम-न-बिल्लाहि अज़्ज व जल-ल व सद्दक बि-वअ्दिही व इत्तब-अ् रसूलुहू अदख़लहुल जन्नता* अल्लाह वहदहू के सिवा कोई मआबूद नहीं, अल्लाह का दीन इस्लाम है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम उसके ख़ास बन्दें और रसूल हैं तो जो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल पर ईमान लाऐगा और उसके वअदे की तसदीक़ और उसके रसूलों की पैरवी करेगा तो अल्लाह तआला उसको जन्नत में दाख़िल फ़रमाऐगा।

(ख़ाज़िन वमाअलिम 7 पेज 193, तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 पेज 133)

सवाल – इसके इलावा और उसमें क्या लिखा है?

जवाब – उसमें सारी मख़्लूक़ात का हाल है हर शै की तफ़सील है, हर छोटी बड़ी चीज़ लिखी हुई है, पैदाइश की शुरुआत से लेकर क़यामत तक जो कुछ हो गया और जो कुछ हो रहा है और जो कुछ होने वाला है सब ज़मीन और आसमान के पैदा होने से पहले लिख दिया गया है।

(ख़ाज़िन 2 पेज 195, जिल्द 3 पेज 73 जुमल 2 पेज 39)

सवाल – क्या लौहे महफ़ूज़ की लिखी हुई बातों में तग़य्युर और रद्दो बदल मुमकिन है?

जवाब – सही यह है कि लौह तग़य्युर से महफ़ूज़ है, तग़य्युर सिर्फ़ दफ़तेन और सुहुफ़े मलाइका में है। (अहकामे शरीअ्त 3 पेज 254)

सवाल – क्या लौहे महफ़ूज़ का इल्म ख़ुदा के सिवा और किसी को भी हासिल है?

जवाब – हाँ अल्लाह तआला की तालीम और उसकी इत्तेलाअ् से ग़ैरे ख़ुदा को भी हासिल है जैसे हमारे नबी सल्लल्लाहु

अलैहे वसल्लम और दूसरे अम्बियाए किराम और मलाइका मुकर्रबीन को हासिल है बल्कि लौह व कलम के तमाम इल्म माकान वमा यकून हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के उलूमे बे मिसाल का एक कतरा है। (अलमलफूज़ 1 पेज 66)

सवाल – क्या लौहे महफूज़ का इल्म औलियाए किराम को भी हासिल है?

जवाब – हाँ औलियाए किराम को भी अता किया जाता है, हज़रत ग़ौसे आज़म फ़रमाते हैं ऐनी फ़िल्लौहिल महफूज़ (मेरी आँख लौहे महफूज़ में लगी रहती है) (बहजतुल असरार पेज 22)

मौलाना रुम फ़रमाते हैं

लौहे महफूज़ अस्त पेशे औलिया।
हर चे महफूज़ अस्त महफूज़ अज़ ख़ता।।

सवाल – क़लम किस चीज़ का है?

जवाब – नूर का है। (ख़ाज़िन व मआलिम 7 पेज 107)

सवाल – कलम की लम्बाई कितनी है?

जवाब – जितना ज़मीन व आसमान के दरमयान फ़ासला है। (ख़ाज़िन व मआलिम 7 पेज 107)

सवाल – क़लम ने सबसे पहले क्या लिखा?

जवाब – बिसमिल्लाह शरीफ़। (रुहुलबयान 1 पेज 5)

सवाल – किस चीज़ पर लिखा?

जवाब – लौहे महफूज़ पर। (अलइत्तेहाफ पेज 105)

सवाल – फिर क़लम ने क्या लिखा?

जवाब – अल्लाह तआला का ज़िक्र और उसकी तौहीद को लिखा और क़यामत तक जो कुछ होने वाला है सब कुछ तफ़सील के साथ लिख दिया हदीस शरीफ़ में है कि जब

अल्लाह तआला ने क़लम को पैदा किया तो उसको हुक्म दिया लिख। क़लम इस ख़िताब की हैबत से हज़ार बरस तक कांपता रहा फिर अर्ज़ किया कि ऐ परवरदिगार में क्या लिखूं रब ने फ़रमाया कि मेरी तौहीद लिख क़लम ने लौहे महफ़ूज़ पे "*लाइला-ह इल्ललल्लाह*" लिखा फिर इरशाद हुआ कि क़यामत तक जो कुछ होने वाला है हर एक की मिक़दार लिख दे।

(ख़ाज़िन व मआलिम 7 पेज 107, मवाहिबु लदुन्निया 2 पेज 28, अलकलामुल ओज़ह पेज 77 अलइत्तेहाफ़ पेज 106)

सवाल – क्या दुनिया की तरह लौह व क़लम और अर्श व कुर्सी सब फ़ना हो जाऐंगे?

जवाब – नहीं, सात चीज़ें हैं जिन्हें फ़ना नहीं है अर्श, कुर्सी, लौह, क़लम, रुह, जन्नत, और उसमें रहने वाले, दोज़ख़ और उसमें रहने वाले। यह सब चीज़ें-कुल्लु शैइन हालिकुन से अलग हैं।(शरह फ़िकहे अकबर बहरुल उलूम पेज 76 शरहुस्सुदूर पेज 133)

वुजु का बयान

सवाल – वुज़ु कहाँ फ़र्ज़ हुआ?

जवाब – मक्का में। (तहतावी अला मराकियुल फ़लाह पेज 33)

सवाल – किन-किन सूरतों में वुज़ु करना फ़र्ज़ है?

जवाब – मुहदिस को हर किस्म की नमाज़, नमाज़े जनाज़ा, सज्दऐ तिलावत, और कुरान मुक़द्दस छूने के लिये वुज़ु करना फ़र्ज़ है। (बहरुर्राइक़ 1 पेज 16, फ़तावा रिज़विया जिल्द 1 पेज 206)

सवाल – किस सूरत में वुज़ु करना वाजिब है?

जवाब – ख़ान ऐ काबा का तवाफ़ करने के लिये वुज़ु करना वाजिब है। (बहरुर्राइक़ 1 पेज 16)

सवाल – किन सूरतों में वुज़ु करना सुन्नत है?

जवाब – अज़ान व इक़ामत, खुत्बऐ जुमा व ईदैन और हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के रोज़ऐ मुबारक की ज़ियारत व वुकूफ़े अरफ़ा और सफ़ा व मरवा के दरमयान दोड़ने वग़ैरा के लिये वुज़ु करना सुन्नत है। (बहारे शरीअत 2 पेज 23)

सवाल – किन सूरतों में वुज़ु करना मुस्तहब है?

जवाब – सोने के लिये और सोन के बाद, मय्यित को नहलाने के लिये, हमबिस्तरी से पहले, ज़ुबानी कुरान मजीद पढ़ने के लिये, हदीस और इल्मे दीन पढ़ने और पढ़ाने के लिये हालते जिनाबत में खाने पीने के लिये वुज़ु करना मुस्तहब है।

(बहारे शरीअत 2 पेज 23)

सवाल – किन सूरतों में नया वुज़ु करना मुस्तहब है?

जवाब – कहक़हा लगाने, ग़ीबत करने, चुग़ली खाने, किसी को गाली देने कोई फुहश लफ़्ज़ ज़ुबान से निकलने झूठी बात सादिर होने, कोई दुनयावी शेर पढ़ने गुस्सा आने, ग़ैर महरम औरत के हुस्न पर नज़र करने, किसी काफ़िर से बदन मस होने, (अगरचे वह कलमा पढ़ता हो और अपने आपको मुसलमान कहलाता हो) ज़कर (पेशाब के आले) को छू लेने से नया वुज़ु करना मुस्तहब है दर अस्ल ज़ाबता यह है कि जिस बात से किसी और इमाम मुजतहिद के मज़हब मे वुज़ु जाता रहे उसके वाक़े होने से हमारे मज़हब में वुज़ु का लौटाना मुस्तहब है।

(फ़तावा रिज़विया 1 पेज 208)

सवाल – क्या वुज़ु से गुनाह सग़ीरा और कबीरा दोनों धुल जाते हैं?

जवाब – हाँ सग़ीरा और कबीरा दोनों धुल जाते हैं।

(फ़तावा रिज़विया 1 पेज 167)

सवाल – वह कौन लोग हैं जिनकी नींद वुज़ु को नहीं तोड़ती?

जवाब – अम्बिाए किराम हैं।

(दुर्रे मुख़्तार मअ रद्दुल मोहतार 1 पेज 101)

सवाल – वुज़ु के फ़र्ज़ कितने हैं?

जवाब – चार हैं (1)मुँह धोना (2)कुहनियों समीत दोनों हाथ धोना (3)चौथाई सर का मसह करना (4)टख़नों समीत दोनों पाँव का धोना। (बहारे शरीअ़त 2 पेज 13)

सवाल – वुज़ु में सुन्नतें कितनी हैं?

जवाब – 15 सुन्नतें हैं (1)नियत करना (2)बिस्मिल्लाह से शुरु करना (3)दोनों हाथों को गट्टों तक तीन बार धोना (4)मिसवाक करना (5)दाहने हाथ से तीन कुल्लियाँ करना (6)दाहने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढ़ाना (7)बायें हाथ से नाक साफ़ करना (8)दाढ़ी का ख़िलाल करना (9)हाथ पाँव की उंगलियों का खिलाल करना (10)हर उज़्व को तीन-तीन बार धोना (11)पूरे सरका मसह एक बार करना (12)कानों का मसह करना (13)तरतीब से वुज़ु करना (14)दाढ़ी के जो बाल मुँह के दायरे के नीचे हैं उनका मसह करना (15)आज़ा को पे दर पे धोना। (बहारे शरीअ़त 2 पेज 16 ता 19)

सवाल – मिसवाक करना वुज़ु की सुन्नत है या नमाज़ की?

जवाब – वुज़ु की सुन्नत है, लिहाज़ा जो एक वुज़ु से चन्द नमाज़ें पढ़े हर नमाज़ के लिये उससे मिसवाक का मुतालबा नहीं, जब तक मुँह में किसी वजह से तग़य्युर न आ गया हो।

(फ़तावा रिज़विया 1 पेज 146)

अज़ान का बयान

सवाल – अज़ान की मशरुइयत कहाँ हुई?

जवाब – हिजरत के बाद मदीना मुनव्वरा में। (रद्दुल मोहतार 1 पेज 268)

र मशरुईयत किस तरह हुई?

जवाब – मशहूर यह है कि वक़्त के तअय्युन के सिलसिले में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने सहाबए किराम से मशवरा फ़रमाया कि कोई सूरत इख़्तियार की जाऐ कि लोग नमाज़ के लिये जमा हो जाऐं किसी ने कहा कि नाकूस बजाया जाऐ, किसी ने कहा संख फूँका जाऐ किसी ने कहा बुलन्द जगह आग रौशन की जाऐ, अभी सहाबऐ किराम किसी राए पर मुत्तफ़िक़ भी न होने पाये थे कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने ज़ैद ने ख़्वाब में देखा कि एक मर्द आसमान से नीचे आया उसके हाथ में नाकूस है, अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने कहा कि ऐ बन्दऐ ख़ुदा क्या तुम इस नाकूस को फ़रोख़्त करोगे उसने कहा तुम ख़रीदकर क्या करोगे। उन्होंने जवाब दिया इससे लोगों को नमाज़ के लिये बुलाऊँगा, उसने कहा में तुमको इससे बहतर चीज़ सिखाता हूँ कि जब नमाज़ का वक़्त हो जाऐ तो इन कलमात को अदा करो बस उसने आख़ीर तक अज़ान एक मख़्सूस कैफ़ियत के साथ सिखाई, फिर थोड़ी देर बाद इक़ामत का तरीक़ा बताया, जब सुबह हुई तो अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने अपना ख़्वाब हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से बयान किया, आपने सुनकर फ़रमाया यह ख़्वाब हक़ है जाओ हज़रत बिलाल को बताओ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद कहते हैं कि हम हज़रत बिलाल को बता रहे थे और वह बुलन्द आवाज़ से अज़ान दे

रहे थे। हज़रत फ़ारुके आज़म ने जब अज़ान की आवाज़ सुनी तो फ़ौरन अपनी चादर घसीटते हुऐ बारगाहे मुस्तफ़ा में हाज़िर हुऐ और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मैंने भी यही ख्वाब देखा है जो उन्होंने कहा। उसपर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया फ़लिल्लाहिल हम्द। बाज़ रिवायत में है कि इस सिलसिले में आप पर वही भी आ गई थी।

(मदारिजुननुबुव्वत 1 पेज 397, अबुदाऊद शरीफ 1 पेज 72)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले अज़ान किसने पढ़ी?

जवाब – हज़रत बिलाल हबशी ने। (अलजवाहिरुल मुज़िय्या 1 पेज 23)

सवाल – क्या इससे पहले भी किसी ने अज़ान पढ़ी?

जवाब – हाँ हज़रत जिब्राईल ने पढ़ी, हदीस शरीफ़ में है कि जब हज़रत आदम अलैहिस्स्लाम ज़मीने हिन्द में उतरे तो आप पर तनहाई की वजह से वहशत तारी हुई तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाऐ और अज़ान पढ़ी जिससे आपकी वहशत दूर हो गई।

(मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 47, तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने भी कभी अज़ान पढ़ी?

जवाब – हाँ एक बार सफ़र की हालत में ज़ुहर की अज़ान पढ़ी और आपने "*अशहदु अनन मुहम्मदर्रसूलुल्लाह*" की जगह "*अश्हदु इन्नी रसूलुल्लाह*" पढ़ा। (दुर्रे मुख्तार मअ रद्दुल मोहतार 1 पेज 280, जद्दुल मुम्तार अला रद्दिल मोहतार 1 पेज 212)

सवाल – अज़ान के लिये सबसे पहले मिनारह किसने बनवाया?

जवाब – हज़रत अमीर मआविया ने। (रद्दुल मोहतार 1 पेज 271)

सवाल – मिनारह पर सबसे पहले अज़ान किसने दी?

जवाब – शुर हबील बिन हसना ने (रद्दुल मोहतार 1 पेज 271)

सवाल – अज़ान के बाद तसवीब यानी अस्सलातु वस्सलामु अलैका या रसूलल्लाह पढ़ना कबसे राइज हुआ?

जवाब – रबीउल अख़िर के महीने में 781 हिजरी से राइज हुआ। (दुर्रे मुख़्तार मअ रद्दुल मोहतार 1 पेज 273)

सवाल – अज़ान देना कब सुन्नत है?

जवाब – नमाज़ पंजगाना व जुमे के लिये जब जमाअत मुस्तहब्बा के साथ मस्जिद में वक़्त पर अदा की जाऐ तो उनके लिये अज़ान देना सुन्नते मुअक्किदा है। (बहारे शरीअत 3 पेज 31)

सवाल – किन सूरतों में अज़ान कहना मुस्तहब है?

जवाब – बच्चे और ग़म वाले के कान में और मिरगी वाले और ग़ज़बनाक व बदमिज़ाज़ आदमी या जानवर के कान में इसी तरह जंग की शिद्दत और आग लगने के वक़्त, और मय्यित के दफ़न करने के बाद और जिन्नों की सर्कशी के वक़्त, मुसाफ़िर के पीछे और जंगल में जब रास्ता भूल जाऐ और कोई बताने वाला न हो, इसी तरह वबा के ज़माने में अज़ान कहना मुस्तहब है। (बहारे शरीअत 3 पेज 31)

सवाल – नबी-ए करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के मखसूस मुअज़्ज़िन कितने थे?

जवाब – चार थे। (1)हज़रत बिलाल हबशी (2)हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मकतूम मदीना मुनव्वरा में मसजिदे नबवी के मुअज़्ज़िन थे। (3)हज़रत सअद बिन आइज़ मसजिदे कुबा के मुआज़्ज़िन थे। (4)हज़रत अबु महज़ूरह मक्का मुकर्रमा में मस्जिदे हराम के मुआज़्ज़िम थे।

(ज़रकानी 3 पेज 369 ता 371, नूरुल अबसार पेज49)

सवाल – क्या अज़ान व इक़ामत का हुक्म सिर्फ़ इसी उम्मत के साथ ख़ास है?

जवाब – हाँ इसी उम्मत के साथ ख़ास है। (ज़रकानी 5 पेज 370)

नमाज़ का बयान

सवाल – कौनसी नमाज़ किस नबी ने सबसे पहले पढ़ी?

जवाब – सबसे पहले फज़र की नमाज़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम,
ज़ुहर की नमाज़ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम,
अ़सर की नमाज़ हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम,
मग़रिब की नमाज़ हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम,
और इशा की नमाज़ हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने पढ़ी।

(सीरत हलबी 1 पेज 458, फ़तावा रिज़विया 2 पेज 208)

सवाल – वही नाज़िल होने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने पहली नमाज़ किस दिन पढ़ी?

जवाब – पीर के दिन अव्वल हिस्से में पढ़ी।

(ज़रकानी 1 पेज 241, फ़तावा रिज़विया 2 पेज 215)

सवाल – इस उम्मत में सबसे पहले नमाज़ किसने पढ़ी?

जवाब – हज़रत ख़दीजतुल कुबरा ने पढ़ी फिर अली मुर्तज़ा ने। (ज़रकानी 1 पेज 241)

सवाल – पाँचों वक्त की नमाज़ फ़र्ज़ होने से पहले भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम और सहाबऐ किराम नमाज़ पढ़ते थे?

जवाब – हाँ मेराज से पहले भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम और सहाबऐ किराम नमाज़ें पढ़ते थे रात की नमाज़ की फ़रज़ियत तो खुद सूरऐ मुज़म्मिल से साबित और उसके

सिवा वक़्तों में भी नमाज़ें पढ़ना आया है आम अज़ीं कि फ़र्ज़ हो या नफ़ल। हदीस शरीफ़ में है कि नमाज़ पंजगाना की फ़रज़ियत से पहले मुसलमान चाश्त और असर पढ़ा करते थे।

(ज़रक़ानी 1 पेज 235, फ़तावा रिज़विया 2 पेज 213)

सवाल – यह नमाज़ें किस तरह अदा फ़रमाते थे क्या उनमें भी शराइत व अरकान का इल्तेज़ाम फ़रमाते थे?

जवाब – हाँ उनमें भी शराइत व अरकान को ज़रुरी अदा करते थे अलबत्ता रुकूअ् में इख़्तिलाफ़ है।

(फ़तावा रिज़विया 2 पेज 215 ता216)

सवाल – क्या यह पाँच वक़्त की नमाज़ इखटठा किसी और नबी पर भी फ़र्ज़ हुई?

जवाब – नहीं यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के साथ ख़ास है। (तहतावी पेज 98)

सवाल – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम मक्का शरीफ़ में किस तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ते थे?

जवाब – मेराज से पहले अपने कश्फ़ से ख़ानऐ काबा की तरफ़ रुख करके पढ़ते थे और मेराज के बाद जब तक मक्के में क्याम रहा बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ रुख करके इसतरह पढ़ते कि काबा मुअज़्ज़मा भी सामने होता।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 433, ज़रक़ानी 1 पेज 402)

सवाल – क्या नबी की इक्तेदा (पीछे) में नमाज़ पढ़ने से गुनाह कबीरा भी माफ़ हो जाता है?

जवाब – हाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ने से गुनाह कबीरा माफ़ हो जाता है।

(अशिअ़अतुललमआ़त 1 पेज 279)

सवाल – वह कौनसी नमाज़ है कि आदमी नमाज़ से निकल जाऐ और बात चीत भी करे फिर भी नमाज़ बातिल नहीं होती?

जवाब – वह नमाज़ है कि नमाज़ी रसूल की पुकार का जवाब दे हाज़िरे बारगाह होकर बात-चीत करे और हुक्म भी बजा लाऐ फिर भी नमाज़ बातिल नहीं होती।

(मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 414, उम्दतुलक़ारी 3, पेज 716)

सवाल – वह कौनसी नमाज़ है जिसमें इमाम के बाई तरफ़ खड़े होने में ज़्यादा फ़ज़ीलत है?

जवाब – जो नामज़ मस्जिदे नबवी मे अदा की जाऐ कि वहाँ इमाम के बाई तरफ़ खड़े होने में ज़्यादा फ़ज़ीलत है कि आपका रोज़ऐ पाक बाई जानिब ही है। (अशिअ़अ़ुतुललमाआत 1 पेज 476)

सवाल – क्या यह सही है कि अम्बिाऐ किराम अपनी-अपनी कब्रों में नमाज़ पढ़ते है?

जवाब – हाँ सभी अम्बियाऐ किराम पढ़ते हैं।

(मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 420)

सवाल – क्या वह नमाज़ अज़ान व इक़ामत के साथ होती है?

जवाब – हाँ अज़ान व इक़ामत के साथ होती है यहाँ तक कि बाज़ सहाब ऐ किराम ने नमाज़ के वक़्त रोज़ऐ मुक़द्दस से अज़ान व इक़ामत की आवाज़ें भी सुनी हैं।

(मवाहिब लदुन्निया जिल्द 1 पेज420)

सवाल – शबे मेराज बेतुल मुक़द्दस में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने अम्बिाए किराम को कितनी रकात नमाज़ पढ़ाई?

जवाब – दो रकात। (मुस्लिम शरीफ 1 पेज 91)

सवाल – उसमें कितनी सफ़ें थीं?

जवाब – सात सफ़ें थीं तीन में रसूलाने इज़ाम और चार सफ़ों

में बाक़ी अम्बियाए किराम थे, नबी-ए, अकरम सल्लल्लाहु अलेहे वसल्लम की पीठ के क़रीब हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम खड़े थे और दाहनी तरफ़ हज़रत इस्माईल अलेहिस्सलाम और बाईं तरफ़ हज़रत इसहाक़ अलेहिस्सलाम, फिर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम फिर तमाम अम्बियाऐ किराम व रसूलाने इज़ाम।

(तफ़सीर जुमल 4 पेज 88)

सवाल – दुनिया की वह कौनसी जगह है जहाँ नमाज़ पढ़ने का सवाब सबसे ज़्यादा है?

जवाब – मस्जिदे हराम है, हदीस शरीफ़ में है कि मस्जिदे हराम में एक नमाज़ दूसरी मस्जिदों की लाख नमाज़ों से अफ़ज़ल है।

(जज़्बुल कुलूब पेज 19)

सवाल – क्या इसके इलावा भी कोई ऐसी जगह है जहाँ नमाज़ पढ़ना मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल हो?

जवाब – हाँ अय्यामे मिना में मिना के अन्दर, अरफ़े के दिन में अरफ़ात के अन्दर मुज़दलफ़े की रात में मुज़दलफ़े के अन्दर नमाज़ पढ़ना मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है।

(जज़्बुल कुलूब पेज 19, फ़तावा हदीसिया पेज 79)

सवाल – क्या तहज्जुद की नमाज़ पहले सब पर फ़र्ज़ थी?

जवाब – हाँ सब पर फ़र्ज़ थी, बाद में उम्मत से उसकी फ़रज़ियत मन्सूख़ हो गई और हुजूर सल्लल्लाहु अलेहे वसल्लम पर आख़िर उमर तक फ़र्ज़ रही। (अशिअ़तुललमआ़त 1 पेज 506)

सवाल – किसी नमाज़ में दो रकात किसी में तीन किसी में चार फ़र्ज़ होने की क्या हिकमत है?

जवाब – उसकी पूरी हिकमत तो खुदा को मालूम है अलबत्ता बाज़ रिवायत में आता है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलेहे वसल्लम

ने मेराज की रात में बाज़ फ़रिश्तों को देखा कि बाज़ दो पर बाज़ तीन पर और बाज़ चार पर वाले हैं तो अल्लाह तआला ने उनकी हैयत को नमाज़ की शक्ल में ज़ाहिर फ़रमा दिया, ताकि नमाज़ी भी उनके ज़रीऐ फ़रिश्तों की तरह हो जाऐ और बुलन्द दरजों की तरफ़ परवाज़ करके अल्लाह का कुर्ब हासिल करे।

(रुहुलबयान 1 पेज 24)

सवाल – क्या पहले नबियों की उम्मत पर भी जुमा फ़र्ज़ था?

जवाब – नहीं जुमे की फ़रज़ियत इस उम्मत के साथ ख़ास है।

(मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 428)

सवाल – क्या कुछ सहाबा जुमा फ़र्ज़ होने से पहले भी जुमा पढ़ते थे?

जवाब – हाँ जैसे हज़रत असअद बिन जरारह वग़ैरा अन्सार एहले मदीना रदियल्लाहु अन्हुम का जुमा फ़र्ज़ होने से पहले जुमा पढ़ना साबित है। (फ़तावा रिज़विया 4 पेज 39)

सवाल – किन लोगों के लिये जमाअ़त में ताख़ीर करना जाइज़ है?

जवाब – इमामे मुअय्यन, आलिमे दीन, हाकिमे इस्लाम, पाबन्दे जमाअत अगर बाज़ वक़्त उज़्र की वजह से ताख़ीर हो जाऐ, सर बर आवुरदह शर पसन्द जिसका इन्तेज़ार न करने से तक़लीफ़ पहुँचने का ख़ौफ़ हो। (फ़तावा रिज़विया 2 पेज 433)

सवाल – सज्दऐ मशरुआ की कितनी किस्में हैं?

जवाब – चार किस्में हैं (1)सज्दऐ नमाज़ (2)सज्दऐ तिलावत (3)सज्दऐ शुक्र (4)सज्दऐ सहू। (अलमलफ़ूज़ 1 पेज 89)

सवाल – कौनसा सज्दा हराम और कौनसा सज्दा कुफ्र है?

जवाब – सज्दऐ इबादत ग़ैरे खुदा के लिये कुफ्र और सज्दऐ ताज़ीमी हराम व गुनाहे कबीरा है। (फ़तावा रिज़विया 12 पेज 292)

बिस्मिल्लाह का बयान

सवाल – बिस्मिल्लाह पढ़ना कब फ़र्ज है?

जवाब – जानवर ज़िबह करते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना फ़र्ज़ है अगरचे लफ़्ज़ "*अर्रहमानिर्रहीम*" पढ़ना फ़र्ज़ नहीं। (तहतावी पेज 2)

सवाल – बिस्मिल्लाह पढ़ना कब सुन्नत है?

जवाब – वुज़ु के शुरु में और नमाज़ के बाहर किसी सूरत की तिलावत शुरु करते वक़्त और हर अहम काम करते वक़्त जैसे खाने-पीने और बीवी से हम बिस्तरी करते वक़्त शुरु में बिस्मिल्लाह पढ़ना सुन्न्त है, इसी तरह नमाज़ की हर रकअ़त के शुरु में बिस्मिल्लाह पढ़ना सुन्नत है। (तहतावी पेज 3, बहारे शरीअ़त 3 पेज 101)

सवाल – बिस्मिल्लाह पढ़ना कब मुस्तहब है?

जवाब – नमाज़ के बाहर दरमयान सूरत से तिलावत की इब्तिदा के वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना मुस्तहब है।

(बहारे शरीअ़त 3 पेज 101)

सवाल – बिस्मिल्लाह पढ़ना कब कुफ़्र है?

जवाब – शराब पीने, ज़िना करने, चोरी करने, जुआ खेलने के वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना कुफ़्र है, जब कि पढ़ने को हलाल समझे। (आलमगीरी 2 पेज 286, शरह फ़िक़्हे अकबर लिअली क़ारी, पेज 169)

सवाल – बिस्मिल्लाह पढ़ना कब हराम है?

जवाब – हराम कतई को करते और चोरी वग़ैरा का नाजाइज़ माल इस्तेमाल करने के वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना हराम है, इसी तरह ज़िना करते वक़्त और शराब पीने और हैज़ वाली औरत से हम बिस्तरी करते वक़्त भी बिस्मिल्लाह पढ़ना हराम है जबकि पढ़ने को हलाल न समझे वरना काफ़िर हो जाऐगा।

(तहतावी पेज 3)

सवाल – बिस्मिल्लाह पढ़ना कब मकरुह है?

जवाब – सूरऐ बरात के शुरु में बिस्मिल्लाह पढ़ना मकरुह है जबकि सूरऐ अनफ़ाल से मिलाकर पढ़े, इसी तरह हुक्का, बीड़ी, सिग्रेट पीने, और लहसन व प्याज़ जैसी चीज़ खाने के वक़्त नापाकी की जगहों में और शर्म गाह खोलते वक़्त बिमिस्मल्लाह पढ़ना मकरुह है। (तहतावी पेज 3, रद्दुल मोहतार 1 पेज 7)

सवाल – बिस्मिल्लाह पढ़ना कब जाइज़ व मुस्तहसन है?

जवाब – उठते बेठते और नमाज़ में सूरऐ फ़ातिहा और सूरत के दरमयान बिस्मिल्लाह पढ़ना जाइज़ व मुस्तहसन है।

(तहतावी पेज 3)

सवाल – बिस्मिल्लाह शरीफ़ सबसे पहले किस नबी पर नाज़िल हुई?

जवाब – हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम पर नाज़िल हुई।

(कन्जुल उम्माल 1 पेज 493)

सवाल – क्या उनके इलावा किसी और नबी पर नाज़िल नहीं हुई?

जवाब – हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के इलावा किसी नबी पर नाज़िल नहीं हुई। फिर बाद में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलेहे वसल्लम पर नाज़िल हुई। (कन्जुल उम्माल 1 पेज 556)

सवाल – इस्लाम में "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रिहीम" लिखने का दस्तूर कब से शुरु हुआ?

जवाब – इस्लाम के शुरु ज़माने में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलेहे वसल्लम कुरैश के मुताबिक "*बिइस्मिक अल्लाहुम-म*" लिखते थे जब कुरान की आयत "*इरकबू फ़ीहा बिस्मिललाहि मजरेहा व मुरसहा*" नाज़िल हुई तो आपने "*बिस्मिल्लाह* लिखना

शुरु कर दिया" फिर जब आयत "*कुलिदउल्ला-ह अविदउर्रहमान*"नाज़िल हुई तो आप ने "*बिस्मिल्लाहिर्रहमान*" लिखना शुरु किया, फिर जब आयत इन्नहु मिन सुलैमा-न व इन्नहु बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम नाज़िल हुई तो आपने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखना शुरु किया।

(तबक़ात इब्ने सअ़द 2 पेज 28)

दुरूद शरीफ़ का बयान

सवाल – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पर दुरुद शरीफ़ पढ़ने की कितनी सूरतें हैं?

जवाब – छः सूरतें हैं (1)फ़र्ज़ (2)वाजिब (3)सुन्नत (4)मुस्तहब (5)मकरुह (6)हराम। (तहतावी पेज 157)

सवाल – किस सूरत में दुरुद पढ़ना फ़र्ज़ है?

जवाब – पूरी ज़िन्दगी में एक बार पढ़ना फ़र्ज़ है।

(तहतावी पेज 157)

सवाल – किस सूरत में दुरुद पढ़ना वाजिब है?

जवाब – अल्लामा तहावी के नज़दीक जब-जब हुज़ूर का नाम लिया जाए हर बार पढ़ना वाजिब है लेकिन सही कौल यह है कि एक बार वाजिब और हर बार मुस्तहब है।

(तहतावी पेज 157, दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मोहतार 1 पेज 363)

सवाल – क्या पूरा दुरुद शरीफ़ पढ़ना वाजिब है?

जवाब – नहीं सिर्फ़ "*अल्लाहुम-म-सल्लि अला मुहम्मद*" तक वाजिब है इस पर ज़्यादा करना सुन्नत है।

(ख़ाज़िन 5 पेज 225)

सवाल – किन सूरतों में दुरुद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है?

जवाब – नमाज़ के आख़री क़ायदे में और नमाज़ जनाज़ा की दूसरी तकबीर के बाद दुरुद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है।

(तहतावी पेज 157, रद्दुल मोहतार 1 पेज 363)

सवाल – किन सूरतों में दुरुद शरीफ़ पढ़ना मुस्तहब है?

जवाब – रात और दिन में जब-जब मौका मिले पढ़ना मुस्तहब है। इसी तरह जुमे के दिन और रात में, मस्जिद में जाते वक़्त या मस्जिद से निकलते वक़्त, दुआऐ कुनूत के बाद, वुज़ु करते वक़्त दुरुद पढ़ना मुस्तहब है। (रद्दुल मोहतार 1 पेज 363)

सवाल – किन सूरतों में दुरुद पढ़ना मकरूह है?

जवाब – आख़री क़ायदे और दुआए कुनूत के इलावा नमाज़ के किसी रुक्न में दुरुद पढ़ना मकरूह है इसी तरह ताजिर का ख़रीदार को सामान दिखाते वक़्त इस गर्ज़ से दुरुद शरीफ़ पढ़ना कि उस चीज़ की अच्छाई ख़रीदार पर ज़ाहिर हो दुरुद पढ़ना मकरुह है।

सवाल – क्या हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम को भी अपने ऊपर दुरुद भेजना वाजिब था?

जवाब – नहीं। (तहतावी पेज 158)

सवाल – तमाम दुरुदों में अफ़ज़ल कौनसा दुरुद है?

जवाब – सब दुरुदों में अफ़ज़ल दुरुद वह है जिसे नमाज़ में मुकर्रर किया गया है यानी दुरुदे इब्राहीमी। (फ़तावा रिज़विया 3 पेज 84)

सवाल – दुरुद शरीफ़ की जगह "सलअम या अम या सोद का सिरा लिखना कैसा है?

जवाब - नाजाइज़ व सख़्त हराम है, इमाम जलालुद्दीन सयूती रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं पहला वह शख़्स जिसने दुरुद शरीफ़ का ऐसा इख़्तेसार किया उसका हाथ काटा गया।

(फ़तावा अफ़रीक़ा पेज 45)

मस्जिदों का बयान

सवाल – दुनिया की तमाम मस्जिदों में सबसे अफ़ज़ल कोनसी मस्जिद है?

जवाब – सब मस्जिदों से अफ़ज़ल मस्जिदे हराम है, फिर मस्जिदे नबवी, फिर मस्जिदे अक्सा, फिर मस्जिदे कुबा, फिर मस्जिदे जामा, फिर मस्जिदे मुहल्ला, फिर मस्जिदे शारेअ्।

(दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मोहतार 1 पेज 462)

सवाल – मस्जिदे हराम, मस्जिदे नबवी और मस्जिदे अक्सा में नमाज़ पढ़ने का कितना सवाब है?

जवाब – मस्जिदे हराम में एक नमाज़ लाख नमाज़ों के बराबर और मस्जिदे नब्वी में एक नमाज़ हज़ार नमाज़ों के बराबर और मस्जिदे अक्सा में एक नमाज़ पाँच सौ नमाज़ों के बराबर है।

(जज़्बुल कुलूब पेज 128)

सवाल – सबसे पहल रुऐ ज़मीन पर किस मस्जिद की तामीर हुई?

जवाब – मस्जिदे हराम की। (बुख़ारी शरीफ़ 1 पेज 477)

सवाल – फिर उसके बाद किस मस्जिद की तामीर हुई?

जवाब – मस्जिदे अक्सा की। (बुख़ारी शरीफ़ 1 पेज 477)

सवाल – मस्जिदे हराम की तामीर किसने की?

जवाब – फ़रिश्तों ने या हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने।

(उम्दतुल कारी 1 पेज 615, तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 398)

सवाल – मस्जिदे अक्सा की तामीर किसने की?

जवाब – बुन्याद हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने रखी फिर उसकी तक्मील हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाई।

(जज़्बुल कुलूब पेज 115)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले किस मस्जिद की तामीर हुई?

जवाब – मस्जिदे कुबा की। (मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 67)

सवाल – वह कोनसी मस्जिदें हैं जिनमें नमाज़ पढ़ने के लिये सफ़र करना जाइज़ है?

जवाब – तीन मस्जिदें हैं जिनमें नमाज़ पढ़ने के लिये सफ़र करना जाइज़ है। (1)मस्जिदे हराम (2)मस्जिदे नबवी (3)मस्जिदे अक़्सा। (बुख़ारी शरीफ़ 1 पेज 215)

दोनों क़िबलों का बयान

सवाल – ख़ानऐ काबा की तामीर कितनी बार हुई? और किस किस ने कराई?

जवाब – मशहूर यह है कि दस बार हुई। (1)सबसे पहले फ़रिश्तों ने की, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले (2)दूसरी बार हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने की (3)तीसरी बार हज़रत शीष अलीहिस्सलाम ने की (4)चौथी मर्तबा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने की (5)पांचवी बार क़ौमे इमालका ने की (6)छटी बार क़बील ए जुरहम ने की (7)सातवीं बार हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के जद्दे आला कुसई बिन किलाव ने की (8)आठवीं बार कुरैश ने तामीर की जिसमें हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने भी शिरकत फ़रमाई (9)नवीं बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रदियल्लाहु अन्हु ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में तामीर की जो नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के तजवीज़ करदा नक़्शे के मुताबिक़ थी, यानी आपने हतीम को ख़ानऐ काबा में दाख़िल कर दिया और उसके दो दरवाज़े बनाऐ एक मश्रिक (पूरब) की

तरफ़ और दूसरा मग़रिब (पश्चिम) की तरफ़ (10)दसवीं बार हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़्फ़ी ने की। (सावी 3 पेज 83, ज़रक़ानी 1 पेज 206, रुहुल बयान 1 पेज 157, ख़ाज़िन 1 पेज 321, जुमल 1 पेज 106) लेकिन अल्लामा ऐनी शारेह बुख़ारी फ़रमाते हैं कि ख़ानऐ काबा की तामीर सिर्फ़ पाँच बार हुई (1)फ़रिश्तों ने की (2)हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने (3)क़ुरैश ने की (4)हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने की (5)हज्जाज बिन यूसुफ़ ने की। (उम्दतुल क़ारी 1 पेज 615)

इस पर तरक़्क़ी करते हुऐ अल्लामा हलबी अपनी किताब में लिखते हैं कि दर हक़ीक़त ख़ानऐ काबा की तामीरे जदीद सिर्फ़ तीन बार हुई (1)हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तामीर (2)ज़मानऐ जाहिलयत में क़ुरैश की तामीर, इन दोनों तामीरों में दो हज़ार सात सौ पैंतीस बरस का फ़ासला रहा (3)हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की तामीर जो क़ुरैश की तामीर के 82 साल बाद हुई। बाक़ी फ़रिश्तों और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और उनके फ़रज़िन्दों की तामीर यह सही रवायतों से साबित नहीं और उनके इलावा दूसरों ने सिर्फ़ टूट फूट की मरम्मत कराई या मामूली तरमीम की, अज़ सरे नो तामीर नहीं की। (सीरते हलबी 1 पेज 204)

सवाल – ख़ानऐ काबा की तामीर कितने पहाड़ों के पत्थरों से हुई?

जवाब – पाँच पहाड़ों के पत्थरों से हुई (1)तूरे सीना (2)तूरे ज़ैता (3)जूदी (4)लबनान (5)हिरा। (सीरत हलबी 1 पेज 88)

सवाल – ख़ानऐ काबा की तामीर क्यों की गई?

जवाब – हक़ीक़ते हाल तो ख़ुदा को ही मालूम अलबत्ता एक रिवायत में है कि जब अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से फ़रमाया

कि मैं अपना ज़मीन में नाइब बनाने वाला हूँ तो फ़रिश्तों ने कहा ऐसे को नाइब बनाऐगा जो ज़मीन में फसाद फैलाऐगा और खूँरेज़ी करेगा हम तो तेरी तसबीह व तहलील और तकदीस बयान करते हैं फ़रिश्तों की इस बात से रब तआला को जलाल आ गया तो फ़रिश्तों ने रब तआला को राज़ी करने के लिय अर्शे आज़म का तवाफ़ करना शुरु कर दिया। यहाँ तक कि सात फेरे लगाऐ रब तआला को फ़रिश्तों की यह अदा पसन्द आ गई तो हुक्म दिया ज़मीन में मेरे लिये एक मकान बनाओ ताकि वह बन्दे जिनसे में नाराज़ हो जाऊँ वह अगर उस मकान की पनाह लें और उसका तवाफ़ करें तो मैं राज़ी हो जाऊँ जैसा कि तुमने अर्शे आज़म का तवाफ़ करके मुझे राज़ी किया है फिर फ़रिश्तों ने ख़ानऐ काबा की तामीर की। (शेखज़ादा 1 पेज 420)

सवाल – क्या ख़ानऐ काबा की तामीर में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने भी कुछ ख़िदमत अन्जाम दी?

जवाब – हाँ जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की मदद से ख़ानऐ काबा तामीर फ़रमा रहे थे तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने इन्जीनियरिंग की ख़िदमत अन्जाम दी। (खाज़िन 1 पेज 322)

सवाल – काबा शरीफ़ में सबसे पहले बुत किसने रखा?

जवाब – अमर बिन लिही ने। (ज़रकानी 1 पेज 183)

सवाल – ख़ानऐ काबा कितने सालों तक बुत खाना रहा?

जवाब – एक हज़ार साला तक। (रुहुल बयान 4 पेज 483)

सवाल – उसके इर्द-गिर्द कितने बुत नसब किये गऐ थे?

जवाब – तीन सौ साठ। (ज़रकानी 2 पेज 335)

सवाल – क्या यह बात सही है कि काबे शरीफ़ के ऊपर से

अगर बीमार परिन्दा गुज़र जाऐ तो उसे शिफ़ा मिल जाती है?

जवाब – हाँ वहाँ की हवा से उसकी बीमारी दूर हो जाती है।

(सावी 1 पेज 150)

सवाल – बैतुल मुक़द्दस की तामीर किसने की?

जवाब – बुन्याद हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने रखी फिर उसकी तकमील हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाई।

(जज़्बुल क़ुलूब पेज 115, फ़तावा रिज़विया 2 पेज 209)

सवाल – हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने बैतुल मुक़द्दस की बुनयाद किस जगह रखी?

जवाब – जहाँ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ख़ेमा नसब किया गया था। (नज़्हतुलक़ारी 7 पेज 558)

सवाल – हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने बैतुल मुक़द्दस की तामीर किन लोगों से कराई?

जवाब – जिन्नात और शयातीन से। (ख़ाज़िन व मआलिम 5 पेज 233)

सवाल – बैतुल मुक़द्दस कब से कब तक क़िबला रहा?

जवाब – हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 433)

एक रिवायत में है कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक क़िबला रहा। बाक़ी तमाम नबी बनी इसराईल वग़ैर बनी इसराईल सब का क़िबला ख़ानऐ काबा रहा। (तफ़सीर नईमी पारा 11 पेज 475)

सवाल – हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के लिये कब तक क़िबला रहा?

जवाब – तक़रीबन सोला महीने 15 दिन।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 433)

सवाल – फिर आपके लिये तहवीले क़िबला का हुक्म कहाँ हुआ?

जवाब – मदीना मुनव्वरा में हुआ जबकि आप बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ रुख़ करके दो रकात नमाज़ ज़ुहर अदा कर चुके थे।

(ख़ाज़िन 1 पेज 103)

सवाल–क्या हर एक की बन्दगी के लिये क़िबला अलग–अलग है?

जवाब – हाँ मुक़र्रबीन फ़रिश्तों का क़िबला अर्शे आज़म, रुहानिय्यीन का क़िबला, कुर्सी, करोंबीन का क़िबला बैते मअमूर मलाईकह ऐ ज़मीन का क़िबला हज़रत आदम का जिस्म, ज़्यादातर बनी इसराईल के नबियों का क़िबला बैतुल मुक़द्दस। हज़रत आदम व हज़रत इब्राहीम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम और आपकी उम्मत का क़िबला काबऐ मुअ़ज़्ज़मा और मोमिनों की रुहों का क़िबला सिदरतुल मुन्तहा है।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 455)

सवाल – रौज़ऐ अक़दस अफ़ज़ल है या काबऐ मुअ़ज़्ज़मा?

जवाब – रौज़ऐ अक़दस बल्कि तमाम नबियों के मज़ार।

(ज़रक़ानी 1 पेज 324)

रोज़े का बयान

सवाल – रमज़ान शरीफ़ का रोज़ा किस सन् में फ़र्ज़ हुआ?

जवाब – दस शव्वाल सन् 2 हिजरी में फ़र्ज़ हुआ।

(ख़ज़ाइन पेज 42)

सवाल – इस उम्मत पर सबसे पहले कौनसा रोज़ा फ़र्ज़ हुआ?

जवाब – यौमे आशूरा का रोज़ा फ़र्ज़ हुआ। फिर उसकी फ़रज़ियत अय्यामे बैज़ के रोज़े की फ़रज़ियत से मन्सूख़ हो गई। फिर जब रमज़ान का रोज़ा फ़र्ज़ हुआ तो उसकी फ़रज़ियत ने अय्यामे बैज़ के रोज़े की फ़रज़ियत को ख़त्म कर दिया।

(तफ़सीर अहमदी पेज 57)

सवाल – क्या पिछले अम्बिाऐ किराम भी रोज़े रखते थे?

जवाब – हाँ, हर नबी का रोज़ा मुख़्तलिफ़ दिनों में था। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अय्यामे बैज़ का रोज़ा और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम आशूरे का रोज़ा रखते थे। (तफ़सीर अहमदी पेज 57)
हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम हमेशा रोज़ा रखते थे।

(ख़ाज़िन 4 पेज 203)

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम यौमे फ़ित्र (ईद का दिन) और यौमे अज़हा (कुर्बानी का दिन) को छोड़कर हमेशा रोज़ा रखते थे।
हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़्तार करते थे।

और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हर महीने में तीन दिन रोज़ा रखते थे। (अलबिदाया वन्निहाया 1 पेज 118)
हज़रत जुलकिफ़्ल अलैहिस्सलाम तमाम दिन रोज़ा और पूरी रात इबादत करते थे। (जुमल 3 पेज 142)
हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम हर महीने के शुरु में तीन दिन और बीच में तीन दिन और आख़िर में तीन दिन रोज़ा रखते थे।
हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हमेशा रोज़ा दार रहते थे।

(अलबिदाया वन्निहाया 2 पेज 19)

सवाल – रोज़े की कितनी किसमें हैं?

जवाब – रोज़े की आठ किसमें हैं (1)फ़र्ज़े मुअय्यन जैसे रमज़ान के अदा रोज़े (2)फ़र्ज़े ग़ैर मुअय्यन जैसे रमज़ान के कज़ा रोज़े (3)वाजिब मुअय्यन जैसे नज़्रे मुअय्यन के रोज़े (4)वाजिब ग़ैर मुअय्यन जैसे नज़्रे मुतलक के रोज़े (5)नफ्ले मसनून जैसे नवीं तारीख़ के साथ आशूरे का रोज़ा (6)नफ़्ले मुस्तहब जैसे अय्यामे बैज़ ओर अरफ़े के दिन का रोज़ा (7)मकरुह

तन्ज़ीही जैसे हफ़्ते के दिन का रोज़ा या सौ मे दहर या सौमे विसाल के रोज़ा रखकर इफ़्तार न करे, फिर दूसरे दिन रखे (8)मकरुह तहरीमी जैसे ईद और अय्यामे तश्रीक़ के रोज़े।

(दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मोहतार 2 पेज 85, ता 86)

सवाल – तमाम नफ़्ली रोज़ों में कौनसा रोज़ा सबसे बेहतर है?

जवाब – अरफ़े के दिन का रोज़ा। (फ़तावा रिज़विया 8 पेज 442)

हज का बयान

सवाल – हज किस सन् में फ़र्ज़ हुआ?

जवाब – सन् 9 हिजरी के आख़िर में फ़र्ज़ हुआ।

(दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मोहतार 2 पेज 143)

सवाल – नबी-ए- करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने क़िस सन् में हज अदा फ़रमाया?

जवाब – सन् 10 हिजरी मे अदा फ़रमाया।

(दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मोहतार 2 पेज 143)

सवाल – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने कितनी बार हज अदा फ़रमाया?

जवाब – हिजरत से पहले दो या तीन हज अदा फ़रमाऐ और हिजरत के बाद मदीना मुनव्वरा से सिर्फ़ एक हज अदा फ़रमाया जो हज्जतुल वदाअ़ के नाम से मशहूर है। हज के इलावा आपने चार उमरे भी अदा किये। (इरशादुस्सारा पेज 11)

सवाल – क्या हज की फ़रज़ियत इसी उम्मत के साथ ख़ास है?

जवाब – हाँ इसी उम्मत के साथ ख़ास है किसी और नबी की उम्मत पर फ़र्ज़ नहीं हुआ।

(सीरत हलबी 1 पेज 190, शरह अलमसलकुल मुतक़स्सित पेज 3)

सवाल – क्या पिछले अम्बिाऐ किराम पर भी हज करना फ़र्ज़ था?

जवाब – मुल्ला अली क़ारी की किताब "*अलमसलकुल मुतकस्सित*" और अल्लामा हलबी की किताब सीरते हलबी की ज़ाहिर इबारत से पता चलता है कि अम्बियाऐ किराम पर भी हज करना फ़र्ज़ था। (सीरत हिलबी 1 पेज 190, शरह अलमसलकुल मुतकस्सित पेज 3) लेकिन आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी फ़रमाते हैं कि फ़रज़ियत का हाल तो खुदा जाने अलबत्ता अम्बियाऐ किराम हज करते रहे। (अलमलफ़ूज़ 1 पेज 74)

सवाल – क्या हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पर भी हज करना फ़र्ज़ था?

जवाब – हकीकते हाल तो खुदा को मालूम अल्बत्ता अल्लामा शामी और मुल्ला अली क़ारी की ज़ाहरी इबारत से मालूम होता है कि आप पर भी हज की फ़रज़ियत नाज़िल हुई।

(रद्दुल मोहतार 2 पेज 143, शरह अलमसलकुल मुतकस्सित पेज 3)

सवाल – किसी को एक हज या चन्द हज मयस्सर होते हैं और किसी को बिल्कुल नहीं इसकी वजह क्या है?

जवाब – हक़ीक़ते हाल का इल्म तो खुदा को है अलबत्ता रिवायत में है कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्स्लाम ने ख़ानऐ काबा की तामीर फ़रमाई तो रब्बुल इज़्ज़त ने हज़रत इब्राहीम से फ़रमाया कि ऐ इब्राहीम आवज़ दो कि तुम्हारे रब का घर तेयार हो गया है इस घर की ज़ियारत व तवाफ़ के लिये चले आओ। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आवाज़ दी तो अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम की उस आवाज़ को सारे जहान के लोगों तक और जो नसलें क़यामत तक माँ के पेटों में और बाप की रीढ़ की हड्डियों में थीं उनमें भी रुह डाल कर आवाज़

पहुँचाई गई, इस आवज़ पर जिसने जितनी बार लब्बैक कहा उसको उतने ही हज मयस्सर हुऐ, किसी ने एक मर्तबा किसी ने दो बार किसी ने तीन बार कहा इसी तरह और ज़्यादा। और जिसने बिल्कुल नहीं कहा उसको कोई हज मयस्सर नहीं हुआ।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 407, उम्दतुलक़ारी जिल्द 4 पेज 485)

सवाल – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आवाज़ पर सबसे पहले लब्बैक किन लोगों ने कहा?

जवाब – एहले यमन ने कहा। (सावी 3 पेज 83)

सवाल – हज वाजिब होने के लिये कितनी शर्तें हैं?

जवाब – आठ शर्तें हैं (1)इस्लाम (2)दारुल हरब में हो तो यह भी ज़रुरी है कि जानता हो कि हज इस्लाम के फ़राइज़ में से है। (3)बालिग़ होना (4)अक़लमन्द होना (5)आज़ाद होना (6)तन्दरुस्त हो कि हज को जा सके अअ़ज़ा सलामत हों अँखयारा हो अपाहिज और फालिज वाले जिसके पाँव कटे हों और बूढ़े पर कि सवारी पर खुद न बैठ सकता हो हज फ़र्ज़ नहीं (7)सफ़र खर्च का मालिक हो (8)वक़्त यानी हज के महीनों में तमाम शर्तें पाई जाऐं। (बहारे शरीअ़त 6 पेज 8 ता 13)

सवाल – हज में कितनी चीज़ें फ़र्ज़ हैं?

जवाब – सात चीज़ें फ़र्ज़ हैं (1)एहराम बाँधना (2)वुक़ूफ़े अरफ़ा यानी ज़िलहिज्जा की नवीं तारीख़ के सूरज ढलने से दसवीं की सुबह सादिक़ से पहले किसी वक़्त अरफ़ात में ठहरना (3)तवाफ़े ज़ियारत का ज़्यादातर हिस्सा यानी चार फेरे (4)नियत (5)तरतीब यानी पहले एहराम बांधना फिर वुक़ूफ़ फिर तवाफ़ (6)हर फ़र्ज़ का अपने वक़्त पर होना (7)मकान यानी वूक़ूफ़ (ठहरना) ज़मीने आरफ़ात में होना और तवाफ़ का

मस्जिदे हराम से होना। (बहारे शरीअ़त 6 पेज 15)

ज़कात का बयान

सवाल – ज़कात किसे कहते हैं?

जवाब – माल के एक मख़सूस हिस्से का जो शरीअ़त ने मुक़र्रर किया है अल्लाह के लिये किसी मुसलमान फ़क़ीर को मालिक बना देना बशरते के वह फ़क़ीर हाशमी न हो, ज़कात कहलाता है। (दुर्रे मुख़्तार मअ रद्दुल मोहतार 2 पेज 3)

सवाल – ज़कात किस सन् में फ़र्ज़ हुई?

जवाब – सन् 2 हिजरी में फ़र्ज़ हुई। (तहतावी अला मराकियुल फ़लाह पेज 414) दुर्रे मुख़्तार मअ रद्दुलमोहतार 2 पेज 2

सवाल – ज़कात किन पर फ़र्ज़ है?

जवाब – चन्द शर्तों के साथ मालदार मुसलमानों पर फ़र्ज़ है। (आम्मऐ कुतुब)

सवाल – वह चन्द शर्तें क्या हैं?

जवाब – (1)बालिग़ होना (2)आकि़ल होना (3)आज़ाद होना (4)निसाब का मालिक होना (5)निसाब का कर्ज़ से फ़ारिग़ होना (6)निसाब का अपनी असली ज़रुरत से ज़्यादा होना (7)माल का बढ़ने वाला होना (8)माल पर साल गुज़रना वग़ैरा। (दुर्रे मुख़्तार मअ़ रद्दुल मोहतार 2 पेज 4 ता 6)

सवाल – साहिबे निसाब कौन है?

जवाब – जो आदमी साढ़े बावन तोला चाँदी या साढ़े सात तोला सोना या उन दोनों में से किसी एक की क़ीमत के बराबर रुपया पैसा या सामाने तिजारत का मालिक हो, वह साहिबे निसाब है।

(दुर्रे मुख़्तार मअ़ रद्दुल मोहतार 2 पेज 29 ता 31)

सवाल – क्या अम्बियाऐ किराम पर भी ज़कात फ़र्ज़ है?

जवाब – अम्बिाये किराम पर ज़कात बिलइजमाअ़ फ़र्ज़ नहीं।

(दुर्रे मुख़्तार मअ़रद्दुल मोहतार 2 पेज 2)

सवाल – अम्बियाऐ किराम के माल पर ज़कात फ़र्ज़ क्यों नहीं?

जवाब – अम्बियाऐ किराम के पास जो कुछ होता है वह माल अमानत है। और माले अमानत में ज़कात फ़र्ज़ नहीं। दूसरी वजह यह है कि ज़कात के माना हैं साहिबे ज़कात का गुनाहों से पाक होना और अम्बियाए किराम गुनाहों से पाक होते हैं इसलिये उनपर ज़कात फर्ज़ नहीं। (रद्दुल मोहतार 2 पेज 2, तहतावी पेज 414)

निकाह का बयान

सवाल – किन औरतों से निकाह करना बेहतर है?

जवाब – कुवाँरी औरत से और जिससे औलाद ज़्यादा होने की उम्मीद हो उनसे निकाह करना बेहतर है। (रद्दुल मोहतार 2 पेज 269)

सवाल – निकाह के लिये कौनसा दिन मुबारक और बाइसे बरकत है?

जवाब – जुमे का दिन, हज़रत आदम का निकाह हव्वा से, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का निकाह जुलेख़ा से, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का निकाह सफूरा से, हज़रत सुलेमान का निकाह बिलक़ीस से और हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलेहे वसल्लम का निकाह ख़दीजतुल कुबरा से और हज़रत आयशा से जुम ही के दिन हुआ। (तफ़सीर नईमी पारा 11 पेज 171)

सवाल – क्या निकाह के लिये गवाह का होना ज़रुरी है?

जवाब – हाँ ज़रुरी है वग़ैर गवाह निकाह नहीं होगा। (आम किताबों में)

सवाल – क्या कोई निकाह वग़ैर गवाह के हो सकता है?

जवाब – हाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम का निकाह वग़ैर गवाह और वग़ैर दैन महर के जाइज़ है यह आपकी खुसूसियात से है। (खसाइसुल कुबरा 2 पेज 245, ज़रक़ानी 5 पेज 231)

सवाल – हज़रत आदम व हव्वा का निकाह किसके सामने हुआ?

जवाब – फ़रिश्तों के सामने हुआ और फ़रिश्ते ही गवाह बने। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 159)

सवाल – क्या दुनिया में सभी नबियों ने निकाह फ़रमाया?

जवाब – हाँ अब तक जितने नबी दुनिया से परदा फ़रमा गये हैं सभी ने निकाह किया, उनमें कोई ऐसा नहीं जिसने निकाह न किया हो, यहाँ तक कि हज़रत यहया अलैहिस्सलाम के बारे में भी है कि आपने निकाह तो किया लेकिन मुबाशरत न फ़रमाई, क्योंकि आपकी शरीअ़त में मुबाशरत न करना अज़ीमत थी। इसी तरह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जब आसमान से उतरेंगे तो कबील ऐ जुहैनिया की एक औरत से शादी फ़रमाऐंगे और आपकी औलाद भी होगी। (रुहुल बयान 1 पेज 73) शरह शिफ़ा 1 पेज 290)

सवाल – हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने कितनी औरतों से निकाह फ़रमाया?

जवाब – ग्यारह औरतों से निकाह फ़रमाया उनके इलावा चार बाँदियाँ भी थीं। (शरह फ़िकहे अकबर लिअली क़ारी पेज 110, शरह शिफ़ा 1 पेज 212, ज़रक़ानी 3 पेज 271)

सवाल – यह शादियाँ एक ही वक़्त में हुईं या अलहदा-अलहदा?

जवाब – सबसे पहले आपका निकाह हज़रत ख़दीजतुल कुबरा बिन्त खुवैलद से हुआ उनके विसाल के बाद हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ से निकाह हुआ। फिर सन् 2 हिजरी में हज़रत आयशा

बिन्त हज़रत अबु बक्र रुख़सत होकर ख़िदमते अक़दस में पहुँची, फिर हिजरत के तीसरे साल या चौथे साल में हज़रत उम्मे सलमा बिन्त अबी उम्मिया, हज़रत हफ़्सा बिन्त उमर बिन ख़त्ताब, हज़रत ज़ैनब बिन्त खुज़ैमा से निकाह हुआ फिर पाँचवे साल हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश से निकाह फ़रमाया, फिर छटे साल हज़रत जुवेरिया बिन्त हारिस ख़ुज़ाइया से निकाह हुआ, फिर सातवीं साल हज़रत सफ़िय्या बिन्त हई, हज़रत मैमूना बिन्त हारिस हिलालिया और हज़रत उम्मे हबीबा बिन्त अबी सुफ़यान से निकाह फ़रमाया।

(मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 201, उम्दतुल क़ारी 2 पेज 32)

सवाल – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की वह कोनसी बीवी है जिससे आपका निकाह आसमान पर हुआ और हज़रत जिब्राईल उसके गवाह बने?

जवाब – हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश।

(जुमल 3 पेज 440, ज़रक़ानी 3 पेज 242)

सवाल – मर्द के निकाह करने की कितनी हालतें हैं?

जवाब – छः हालतें हैं (1)फ़र्ज़ (2)वाजिब (3)सुन्नते मुअक्किदा (4)मुबाह (5)हराम (6)मकरुह।

(1) जो शख़्स महर व नफ़्क़ा देने की ताक़त रखता हो और उसे यह यक़ीन हो कि निकाह न करने की हालत में ज़िना वाक़े हो जाऐगा तो उसपर निकाह फ़र्ज़ है।

(2) जो शख़्स महर व नफ़्क़ा की कुदरत रखता हो और उसे शहवत का ग़लबा इतना हो कि निकाह न करने की सूरत में ज़िना का अंदेशा है। तो उसपर निकाह करना वाजिब है।

(3) जब एतेदाल की हालत हो यानी न शहवत का बहुत ज़्यादा

ग़लबा हो और न नामर्द हो और वह महर व नफ़्क़ा पर कुदरत भी रखता हो तो ऐसी हालत में निकाह करना सुन्नते मुअक्किदा है कि निकाह न करने पर मुसिर रहना गुनाह है इस सूरत में अगर हराम से बचने या सुन्नत की पैरवी या औलाद हासिल करने की नियत करे तो सवाब भी पाऐगा।

(4) जो शख़्स सिर्फ़ लज़्ज़त हासिल करने की नियत से शादी करे तो उसके लिये निकाह करना मुबाह है।

(5) जिस आदमी को यह यक़ीन हो कि निकाह करेगा तो नान व नफ़्क़ा न दे सकेगा या जो ज़रुरी हुकूक़ हैं उनको पूरा न कर सके तो निकाह करना उसके लिये हराम है।

(6) जिस आदमी को यह अंदेशा हो कि निकाह करेगा तो नान व नफ़्क़ा न दे सकेगा या जो ज़रुरी हुकूक़ हैं उनको पूरा न कर सकेगा तो उस सूरत में निकाह करना मकरुह है।

(दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मोहतार जिल्द 2 पेज 268)

सवाल – औरतों के निकाह करने की कितनी सूरतें हैं?

जवाब – छः सूरतें हैं (1)मकरुह (2)हराम (3)वाजिब (4)फ़र्ज़ (5)सुन्नत (6)मुबाह।

(1) जिस औरत को अपने नफ़्स से खौफ़ हो कि ग़ालिबन उससे शौहर की इताअत और उसके वाजिब हुकूक़ अदा न हो सकेंगे तो उसे निकाह करना ममनू व नाजाइज़ है।

अगर करेगी तो गुनाहगार होगी। यह सूरत कराहते तहरीमी की है।

(2) अगर यह खौफ़ यक़ीन में बदल जाऐ तो इस सूरत में निकाह करना हराम है।

(3) जिस औरत को अपने नफ़्स से ऐसा ख़ौफ़ न हो लेकिन निकाह की ज़रुरत सख़्त है कि बे निकाह किये मआज़ल्लाह

गुनाह में मुब्तला होने का गुमान है तो ऐसी सूरत में निकाह करना वाजिब है।

(4) जिस औरत को बे निकाह किये मआज़ल्लाह हराम काम होने का यकीन हो तो उस हालत में निकाह करना फ़र्ज़ है यानी जब कि ज़्यादा रोज़े रखने और इलाज वग़ैरा से भी तसकीन की उम्मीद न हो।

(5) अगर औरत की हालत ऐतेदाल पर हो यानी न निकाह से बिल्कुल बे परवाही न इस शिद्दत का शौक कि बे निकाह गुनाह वाके होने का गुमान यकीनी है ऐसी हालत में निकाह करना सुन्नत है मगर शर्त यह है कि औरत अपने पर इत्मिनान काफ़ी रखती हो कि उससे इताअत और हुकूके शौहर की अदाऐगी न छूटेगी।

(6) अगर औरत को ज़रा भी इसका अंदेशा हो तो उसके हक़ में निकाह सुन्नत न रहेगा सिर्फ़ जाइज़ होगा बशर्ते के अंदेशा गुमान की हद तक न पहुँचे वरना इबाहत तो दूर की बात सिरे से निकाह ममनूअ व नाजाइज़ होगा। (फ़तावा रिज़विया 5 पेज 389)

सवाल – जो औरत निकाह से पहले मर जाऐं तो क्या आख़िरत में उसका निकाह होगा?

जवाब – हाँ किसी जन्नती आदमी से उसका निकाह कर दिया जाऐगा। (तफ़सीर नईमी पारा 3 पेज 356)

सवाल – क्या हर मोमिन को जन्नत में उसकी दुनयवी बीवी मिलेगी?

जवाब – हाँ बल्कि दुनयवी बीवी हूरों ग़िलमान से भी ज़्यादा हसीनो जमील होगी। (सावी 1 पेज 17)

सवाल – जन्नत में हूर अफ़ज़ल होगी या दुनियावी औरत?

जवाब – दुनियावी औरत अफ़ज़ल होगी। (सावी 4 पेज 56)

सवाल – जिस औरत को शौहर ने तलाक़ दे दी वह क़यामत के दिन किसके निकाह में रहेगी?

जवाब – अगर वह औरत दूसरा निकाह न करे तो क़यामत के दिन अपने शौहर को मिलेगी जबकि दोनों ईमान पर वफ़ात पाए हों। और अगर दूसरा शौहर कर ले और उसी के निकाह में मर जाए तो दूसरे शौहर की बशर्त ईमान मिलेगी और अगर उससे भी बेवा हो गई ग़र्ज़ किसी के निकाह में न मरी तो उसे क़यामत के दिन इख़्तियार दिया जाएगा कि उन शौहरों में जिसे चाहे पसन्द कर ले। (फ़तावा रिज़विया जिल्द 10 निस्फ़ अव्वल पेज 10)

सवाल – क्या हज़रत मरयम का भी आख़िरत में किसी से निकाह होगा?

जवाब – हाँ हज़रत मरयम बिन्त इमरान, कुलसूम हज़रत मूसा की बहन आसिया फिरऔन की बीवी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलेहे वसल्लम की अज़वाजे मुतहहरात में दाख़िल होंगी।

(नूरुल अबसार पेज 13)

रुह का बयान

सवाल – रुह क्या चीज़ है?

जवाब – उसकी पूरी हक़ीकत तो खुदा को मालूम अलबत्ता किताबों में है कि रुह एक लतीफ़ जिस्म है जो कसीफ़ जिसमों के साथ इस तरह मिली हुई है जैसे हरी लकड़ी में पानी।

(शरहुस्सुदूर पेज 133)

सवाल – रुहें कब पैदा की गईं?

जवाब – मुख़्तलिफ़ रिवायतें हैं जिस्म से दो हज़ार साल पहले। (फ़तावा रिज़विया 9 पेज 65) चार हज़ार साल पहले।(ख़ाज़िन 1 पेज 277)

पाँच हज़ार साल पहले। (शरह फ़िक़्हे अकबर बहरुल उलूम पेज 25)

सवाल – क्या नफ़्स और रुह दोनों एक ही चीज़ हैं?

जवाब – नहीं अस्ल में तीनों चीज़ें अलहदा अलहदा हैं। (1)नफ़्स (2)रुह (3)क़ल्ब यानी दिल। रुह बादशााह की जगह है और नफ़्स और दिल उसके दो वज़ीर हैं। नफ़्स का मर्कज़ नाफ़ के नीचे है और कल्ब का मर्कज़ वह गोश्त का टुकड़ा है जो सीने के बाई तरफ़ है। (अलमलफ़ूज़ 3 पेज 63)

सवाल – माँ के पेट में नुतफ़ा ठहरने के कितने दिन बाद उसमें रुह फूँकी जाती है?

जवाब – चार महीने के बाद ही रुह फूँक दी जाती है।

(सावी 3 पेज 78)

सवाल – इन्सान के जिस्मों में कितनी बार रुह दाख़िल हुई ओर दाख़िल होगी?

जवाब – छः बार (1)मीसाक़ के दिन में दाखिल हुई, जब अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम की पुश्त से उनकी जुर्रियत निकाली, और सब से अपनी रुबूबियत का इक़रार लिया। (2) जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ख़ानए काबा की तामीर की तो रब्बुल इज़्ज़त ने हज़रत इब्राहीम से फ़रमाया कि ऐ इब्राहीम मकामे इब्राहीम में खड़े होकर आवाज़ दो कि तुम्हारे रब का घर तैयार हो गया है इस घर की ज़ियारत और तवाफ़ के लिये चले आओ। हज़रत इब्राहीम ने आवाज़ दी तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हज़रत इब्राहीम की उस आवाज़ को सारे जहाँ के लोगों तक पहुँचा दिया। और जो माँ के पेटों में और बाप की पुश्तों में थे उनमें भी रुह डालकर यह आवाज़ पहुँचाई गई। (3) जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने तौरेत शरीफ़ में उम्मते

मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की फ़ज़ीलत व कमाल का ज़िक्र पाया तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि मुझे उम्मते मुहम्मदिया का दीदार और उनकी आवाज़ सुनवाई जाऐ तो खुदा वन्दे कुद्दूस ने उम्मते मुहम्मदिया की आवाज़ को उनके बापों की पुश्तों में रुह डालकर सुनवाया।

(4) माँ के पेट में दाख़िल होती है फिर मौत के वक़्त निकाली जाती है।

(5) कब्र में मुनकर नकीर के सावालात और जवाबात के वक़्त दाख़िल होती है।

(6) मैदाने महशर में जमा करने के लिये हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम के सूर फूंकने के वक़्त दाख़िल की जाऐगी।

(फ़तावा हदीसिया पेज 89, तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 407 तफ़सीर नईमी पारा 9 पेज 386)

सवाल – क्या नींद की हालत में रुह निकाल ली जाती है?

जवाब – इस बारे में मुख़्तलिफ़ क़ौल हैं (1)हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से मरवी है कि इन्सान में नफ़्स और रुह दोनों हैं और उनका तअल्लुक़ आपस में ऐसा है जैसे आफ़ताब, सूरज का अपनी किरनों से नींद में अल्लाह पाक नफ़्स को क़ब्ज़ कर लेता है और रुह को छोड़ देता है फिर जब अल्लाह तआला उसकी मौत का इरादा करता है तो नफ़्स के साथ रुह को भी क़ब्ज़ फ़रमा लेता है (2)बाज़ हज़रात फ़रमाते हैं कि हर इन्सान में दो रुहें हैं एक रुह यक़्ज़ा यानी वह रुह कि जब वह जिस्म में होती है तो आदतन इन्सान बेदार रहता है जब वह निकल जाती है तो इन्सान सो जाता है और ख़्वाब देखने लगता है। दूसरी रुहे

हयात कि जब वह जिस्म में होती है तो इन्सान ज़िन्दा रहता है, जब वह निकाल ली जाती है तो इन्सान मर जाता है पस नींद में रुहे यक्ज़ा निकाल ली जाती है और मौत के वक़्त दोनों निकाल ली जाती हैं। (शरहुस्सुदूर पेज 133, 134, सावी 2 पेज 18)

सवाल – क्या सब की रुह हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम क़ब्ज़ फ़रमाते हैं?

जवाब – हक़ीक़ते हाल तो खुदा को मालूम अल्बत्ता कुछ लोगों के बारे में है कि उनकी रुह खुद रब तबारक तआ़ला क़ब्ज़ फ़रमाता है। (शरहुस्सुदूर पेज 21)

सवाल – वह कौन लोग हैं कि जिनकी रुह खुद रब तबारक व तआ़ला अपने दस्ते कुदरत से क़ब्ज़ फ़रमाता है?

जवाब – शुहदाऐ बहर हैं, जिनकी रुह खुद अल्लाह पाक अपने दस्ते कुदरत से क़ब्ज़ फ़रमाता है।

(शरहुस्सुदूर पेज 21, कुनूज़ुलहकाइक 1 पेज 18)

सवाल – क्या उनके इलावा भी कोई शख़्स है जिनकी रुह खुद रब तबारक व तआला ने अपने दस्ते कुदरत से क़ब्ज़ फ़रमाई?

जवाब – हाँ हज़रत फातिमा जोहरा रदियल्लाहु अनहा हैं कि खुद अल्लाह ने उनकी रुह निकाली उनकी तरफ़ कोई फ़रिश्ता नहीं भेजा गया। (तफ़सीर नईमी पारा 7 पेज537)

सवाल – मरने के बाद रुहें कहाँ रहती हैं?

जवाब – मुसलामानों में कुछ की रुहें क़ब्र पर रहती हैं कुछ की चाहे ज़म-ज़म में और कुछ की आसमान व ज़मीन के बीच लटकी रहती हैं और कुछ की पहले आसमान दूसरे सातवें तक और कुछ की आला इल्लिय्यीन में और कुछ की सब्ज़ परिन्दों

की शक्ल में अर्श के नीचे नूर की क़िन्दीलों में और कुछ की सब्ज़ परिन्दों की शक्ल में जन्नत में सैर करती हैं और कुछ की रुहें जन्नत में रहती हैं जैसे नबियों और शहीदों की रूहें और ...ीन की रूहें जन्नत में हज़रत इब्राहीम और हज़रत सारा ... ।रानी में हैं। और काफ़िरों में कुछ की रुहें वादिये (बरहूत) के कुऐं में और कुछ की ज़मीन में अव्वल, दोम सातवीं तक और कुछ की सिज्जीन में और कुछ की हज़र मौत मे।

(शारहुस्सुदूर पेज 98 ता 101, फ़तावा रिज़विया 4 पेज 125)

मौत का बयान

सवाल – क्या मौत व हयात दोनों वुजूदी हैं?

जवाब – हाँ दोनों वुजूदी हैं। (अलमलफ़ूज़ 4 पेज 71)

सवाल – मौत व हयात किस शक्ल में है?

जवाब – मौत हज़रत इज़राईल के क़ब्ज़े में एक मेंढे की शक्ल में है जिसके पास से वह गुज़रता है वह मर जाता है और हयात यानी ज़िन्दगी हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम की सवारी में एक घोड़ी की शक्ल में है जिस बेजान के पास से गुज़रती है वह ज़िन्दा हो जाता है।

(ख़ाज़िन वमआलिम 7 पेज 103, शरहुस्सुदूर पेज 15, शरह शिफ़ा 1 पेज 29)

सवाल – क्या मौत को भी मौत होगी?

जवाब – हाँ मौत को एक मेंढे की शक्ल में जन्नत व दोज़ख़ के दरमयान लाया जाऐगा और हज़रत यहया अलैहिस्सलाम उसे हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के सामने अपने हाथ से ज़िबह फ़रमाऐंगे।

(शरहुस्सुदूर पेज 15, हयातुल हैवान 2 पेज 270, सीरत हलबी 1 पेज 435)

सवाल – क्या इन्सान की तरह फ़रिश्तों को भी मौत लाहिक़ होती है?

जवाब – फ़रिश्तों के लिये क़यामत से पहले मौत नहीं, फ़रिश्ते उस वक़्त मरेंगे जब पहला सूर फूँका जाऐगा, मलकुल मौत उनकी रुह क़ब्ज़ करेंगे फिर वह खुद भी मर जाऐंगे।

(आलहिदायतुल मुबारकह पेज 17)

सवाल – क्या रुह को भी मौत होगी?

जवाब – नहीं होगी। (फ़तावा रिज़विया 9 पेज 58)

सवाल – क्या मौत के वक़्त तकलीफ़ होती है?

जवाब – हाँ तकलीफ़ होती है उसकी कम से कम तकलीफ़ की मिसाल यह है कि कोई शख़्स काँटे दार शाख़ को ऊन में डाले फिर उसे खींचे तो शाख़ के साथ ऊन का रेशा-रेशा निकल आऐगा यानी नजअ़ के वक़्त गोया हर रगे जाँ में काँटे चुभते हैं और उन्हीं के साथ रुह निकलती है। (शरहुस्सुदूर पेज 13)

सवाल – फिर क्या वजह है कि इतनी तकलीफ़ के बावजूद मरने वाला पुर सुकून नज़र आता है?

जवाब – फ़रिश्ते उसे मज़बूती से बाँध देते हैं वरना अगर यह बात न हो तो तकलीफ़ की वजह से वह अपने क़रीब वालों को तलवार लेकर मारने लगे। (शरहुस्सुदूर पेज 13)

सवाल – आदमी के मरने के बाद उसे खुश्बू क्यों लगाते हैं?

जवाब – एक रिवायत में है कि जब हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम हज़रत आदम की तख़लीक़ के लिये ज़मीन से मिट्टी उठाकर ले गऐ तो ज़मीन ने अल्लाह तआला की बारगाह में शिकायत की कि ऐ अल्लाह मिट्टी उठाने से तो मुझ में कमी आ गई, खुदा ने जवाब दिया घबराओ मत जब यह तुम में

वापस आऐगा तो पहले से ज़्यादा हसीन व जमील और खुश्बूदार होगा, यही वजह है कि मय्यित को इत्र व मुश्क से मुअत्तर किया जाता है। (रुहुल बयान 1 पेज 68)

जनाज़े का बयान

सवाल – नमाज़े जनाज़ा की इब्तिदा कब से है?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से है।

(फ़तावा रिज़्विया 2 पेज 467)

सवाल – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ी?

जवाब – फ़रिश्तों न पढ़ी। (फ़तावा रिज़्विया 2 पेज 467)

सवाल – उनमें इमाम कौन हुऐ?

जवाब – हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरए बक़र पेज 172)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले नमाज़े जनाज़ा किसकी पढ़ी गई?

जवाब – हज़रत असद बिन जुरारह की खुद हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।

(फ़तावा रिज़्विया 2 पेज 468)

सवाल – नमाज़े जनाज़ा में किस सफ़ में खड़ा होना ज़्यादा अफ़ज़ल है?

जवाब – आख़िरी सफ़ में खड़ा होना ज़्यादा अफ़ज़ल है।

(दुर्रे मुख़्तार मअ रद्दुल मोहतार 1 पेज 611)

सवाल – इस्लाम में नमाज़े जनाज़ा की मशरुइयत कब और कहाँ हुई?

जवाब – मदीन ए मुनव्वरा में हिजरत के तक़रीबन नवें महीने

(फ़तावा रिज़विया 2 पेज 468)

में हुई।

सवाल – वह कौन लोग हैं जिनकी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी जाती?

जवाब – (1)बाग़ी जो इमामे बरहक़ पर ना हक़ खुरुज करे (बग़ावत) और उसी बग़ावत में मारा जाऐ। (2)डाकु कि डाका ज़नी में मारा जाऐ (3)जो लोग नाहक पासदारी से लड़ें। (4)जो शख़्स कई आदमियों को गला घोंट कर मार डाले (5)जो शख़्स शहर में रात को हथियार लेकर लूट मार करें और इसी हालत में मारे जाऐं। (6)जो अपने माँ–बाप को मार डाले (7)जो किसी का सामान छीन रहा था और इसी हालत में मारा जाऐ।

(आलमगीरी 1 पेज 83, दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मोहतार 1 पेज 609)

सवाल – हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की नमाज़े जनाज़ा सबसे पहले किसने पढ़ी?

जवाब – हज़रत जिब्राईल ने फिर हज़रत इसराफ़ील ने फिर हज़रत मीकाईल ने फिर मलकुल मौत ने फ़रिश्तों के लश्कर के साथ पढ़ी उसके बाद सहाबऐ किराम और दूसरे लोगों ने पढ़ी।

(ज़रकानी 8 पेज 270, ख़साइसुल कुबर 2 पेज 73)

सवाल – क्या आपकी नमाज़े जनाज़ा में कोई इमाम न था सबने अलहदा–अलहदा पढ़ी?

जवाब – इस बारे में उलाम मुख़्तलिफ़ हैं कुछ के नज़दीक यह नमाज़ मारुफ़ नहीं हुई बल्कि लोग गिरोह दर गिरो हाज़िर आते और आप पर सलातो सलाम अर्ज़ करते और बहुत से उलमा यही नमाज़ मारुफ़ मानते हैं। हज़रत सिद्दीके अकबर रदियल्लाहु अन्हु फ़ितनों को दूर करने और उम्मत के इन्तेज़ाम में मशगूल जब तक उनके दस्ते हक़ परस्त पर बैअत न हुई लोग जमाअत दर जमाअत आते और जनाज़ऐ अक़दस पर नमाज़ पढ़ते जाते,

जब बेअत हो गई और हज़रत सिद्दीक़ अकबर रदियल्लाहु अन्हु वली-ए-शरई हो गऐ उन्होंने जनाज़ऐ मुक़द्दस पर नमाज़ पढ़ ली उसके बाद फिर किसी ने न पढ़ी कि बाद नमाज़े वली फिर नमाज़ लौटाने का इख़्तियार नहीं। (फ़तावा रिज़्विया 4 पेज 54)

सवालाते क़ब्र का बयान

सवाल – क्या मुन्कर नकीर के सवलात सिर्फ़ मुसलमानों से होते हैं? या काफ़िर और मुश्रिक से भी?

जवाब – मुसलमान या इस्लाम का दावा करने वाले मुनाफ़िक़ से होते हैं, काफ़िर और मुश्रिक से क़ब्र के सवालात नहीं किये जाते। (शरहुस्सुदूर पेज 59, फ़तावा हदीसिया पेज7)

सवाल – मुन्कर नकीर दोनों मिलकर सवाल करते हैं या एक?

जवाब – कुछ लोगों से दोनों और कुछ लोगों से एक ही सवाल करता है। (शरहुस्ससुदूर पेज 59)

सवाल – क्या क़ब्र के सवालात के वक़्त रुह पूरे जिस्म में लौटाई जाती है?

जवाब – हक़ीकते हाल तो खुदा जाने अलबत्ता बाज़ यह कहते हैं कि रुह पूरे जिस्म में लौटाई जाती है। बाज़ कहते हैं कि सिर्फ़ सीने तक दाख़िल होती है और बाज़ उसके भी मुन्किर हैं वह कहते हैं कि रुह जिस्म और कफ़न के दरमयान रखी जाती है। (अलजवाहिरुल मनीफ़ह पेज 23)

सवाल – क्या सवालाते क़ब्र तमाम मुसलमान मुर्दों से होते हैं?

जवाब – मुस्तसनात छोड़कर तमाम मुसलमान मुर्दों से सवालात होंगे यहाँ तक कि कोई आग में जल जाऐ या पानी में डूब जाऐ तो उनसे भी सवाल होगा और वहीं वह सवाब और अज़ाब

पाऐगा इसी तरह अगर किसी जानवर ने किसी को खा लिया या मछली वग़ैरा निगल गई तो उनके पेट में ही सवालात होंगे और वह वहीं सवाब व अज़ाब से आशना होगा।

(फ़तावा हदीसिया पेज 7, शरहुस्सुदूर पेज 61 ता 75)

सवाल – वह कौन लोग हैं जिनसे क़ब्र के सवालात नहीं होते?

जवाब – हक़ीक़ का इल्म तो खुदा को मालूम, अलबत्ता किताबों से पता चलता है कि ग्यारह किस्म के लोग सवालाते क़ब्र से महफूज़ रहते हैं। (1)अम्बियाऐ किराम (2)शुहदाऐ इज़ाम (3)काफ़िरों से मुक़ाबले के लिये, इस्लामी सरहद पर घोड़ा बाँधने वाला (4)ताऊन की बीमारी में मरने वाला (5)ज़मानऐ ताऊन में मरने वाला चाहे किसी बीमारी से मर जाऐ (6)सिद्दीक़ीन (7)मोमिनीन के बच्चे। (8)जुमे की रात या दिन में मरने वाला (9)मरज़े मौत में सरूऐ "*कुल हुवल्लाहु अहद*" पढ़ने वाला (10) हर रात सूरऐ तबारक पढ़ने वाला (11)रमज़ान शरीफ़ में मरने वाला।

(दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मोहतार जिल्द 1 पेज 596, शरहुस्सुदूर पेज 62 ता 63)

सवाल – क्या जिन्नात से भी सवालाते क़ब्र होते हैं?

जवाब – हाँ जिन्नात भी सवालाते क़ब्र और हिसाब व किबात वग़ैरा के मामले में इन्सान की तरह़ हैं। (फ़तावा हदीसिया पेज 47)

सवाल – क्या पिछले अम्बिाया ए किराम की उम्मत से भी क़ब्र के सवालात होते थे?

जवाब – नहीं सवालाते क़ब्र इसी उम्मत के साथ ख़ास हैं।

(फ़तावा हदीसिया पेज 7, शरहुस्सुदूर पेज 59)

अज़ाबे क़ब्र का बयान

सवाल – क़ब्र का अज़ाब किन लोगों के लिये है?

जवाब – तमाम काफ़िरों और कुछ गुनाहगार मुसलमानों के लिये है।

(शरहुस्सुदूर पेज 76)

सवाल – क्या फिर मोमिन गुनाहगार से अज़ाबे क़ब्र उठा लिया जाता है?

जवाब – बाज़ से नहीं उठाया जाता और बाज़ से उनके गुनाहों के मुताबिक़ अज़ाब होने के बाद उठा लिया जाता है और बाज़ से मुक़र्ररा अज़ाब से पहले ही किसी की दुआ या ईसाले सवाब या सदक़ऐ जारिया वग़ैरा की वजह से उठा लिया जाता है और एक रिवायत में यह भी है कि मोमिन गुनाहगार पर अज़ाबे क़ब्र जुमे की रात आने तक रहता है उसके आते ही उठा लिया जाता है।

(शरहुस्सुदूर पेज 76, बहारे शरीअ़त 1 पेज 27)

सवाल – वह कौनसा दिन या कौनसा महीना है जिसमें मरने से गुनाहगार बन्दा भी क़ब्र के अज़ाब से महफ़ूज़ रहता है?

जवाब – जुमा या जुमे की रात या रमज़ान शरीफ़ का महीना है जिसमें अगर कोई मुसलामन मर जाऐ तो वह सवालाते नकीरैन और अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहता है।

(शरहुस्सुदूर पेज 62, फ़तावा रिज़विया 4 पेज 124)

सवाल – तो क्या फिर मोमिन गुनाहगार पर जुमा या जुमे की रात या रमज़ान के महीने के गुज़रने के बाद अज़ाबे क़ब्र लौट जाता है?

जवाब – नहीं लौटता और न क़यामत तक लौटेगा इन्शा अल्लाह तआला अल्लाह की रहमत से यही उम्मीद है।

(शरह इश्बाह वन्नज़ाइर पेज 565, शरहुस्सुदूर पेज 76)

सवाल – क्या किसी दिन काफ़िर से भी अज़ाबे क़ब्र उठा लिया जाता है?

जवाब – हाँ जुमा और जुमे की रात और रमज़ान शरीफ़ के महीने में उससे भी अज़ाबे क़ब्र उठा लिया जाता है यह सदक़ा है नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम का। फिर जुमा व जुमे की रात या रमज़ान के महीने के गुज़रने के बाद दोबारा अज़ाब उस पर लौट जाता है। (शरह इश्बाह वन्नज़ाइर पेज 564, शरहुस्सुदूर पेज 76)

जन्नत का बयान

सवाल – जन्नत क्या चीज़ है?

जवाब – जन्नत एक आलीशान मकान है जिसे अल्लाह तआला ने मोमिन बन्दों के लिये तैयार किया है जिस में ऐसी नेमत और राहत व आराम की चीज़ें मुहय्या हैं जिनको न किसी आँख ने देखा और न किसी कान ने सुना और न किसी आदमी के दिल पर उनका ख़तरा गुज़रा। (बहारे शरीअ़त 1 पेज 43)

सवाल – जन्नत कहाँ है?

जवाब – जन्नत सातवें आसमान के ऊपर अर्शे आज़म के नीचे है। (तफ़सीर कबीर 8 पेज 97, तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 पेज 12)

सवाल – जन्नत व जहन्नम में पहले कौन पैदा हुआ?

जवाब – पहले जन्नत पैदा की गई। (ज़रक़ानी 1 पेज46)

सवाल – जन्नत के तबक़ात कितने हैं?

जवाब – आठ हैं (1)दारुलजलाल, यह पूरा नूर ही नूर है। (2)दारुल क़रार उसमें तमाम चीज़ें मरजान की हैं। (3)दारुलस्सलामा, इस में तमाम चीज़ें याक़ूते अहमर की हैं (4)जन्नते अद्न, इसमें तमाम चीज़ें ज़बुर जद की हैं (5)जन्नतुल

मावा, यह ख़ालिस सोने की है (6)जन्नतुल खुल्द यह ख़ालिस चाँदी की है (7)जन्नतुल फ़िरदौस यह मोती की है और उसकी दीवार की ईंटें एक सोने की और एक चाँदी और एक याकूत की और एक ज़बुरजद की है और उसका गारा ख़ालिस मुश्क का है। (8)जन्नतुन्नईम यह भी ज़बूर जद की है। (रूहुल बयान 1 पेज 56)

सवाल – जन्नत के दरजात कितने हैं?

जवाब – सौ दरजे हैं और एक दरजे से दूसरे दरजे तक ज़मीन वआसमान का फ़ासला है। (मिश्कात शरीफ़ 2 पेज 334)

एक रिवायत में है कि कुराने करीम की आयतों के बराबर जन्नत के दरजात हैं और एक दरजे से दूसरे दरजे तक ज़मीन व आसमान का फ़ासला है। (अलइतक़ान 1 पेज 67, कन्ज़ुल उम्माल 1 पेज 481)

सवाल – दारो ग़ऐ जन्नत और दारो ग़ऐ जहन्नम के नाम क्या हैं?

जवाब – जन्नत के दारोग़ा का नाम रिज़वान और जहन्नम के दारोग़ा का नाम मालिक है। (ज़रक़ानी 6 पेज82)

सवाल – क्या जन्नत में दिन व रात भी होंगे?

जवाब – नहीं बल्कि वहाँ तो रोशनी ही रोशनी होगी और जन्नतियों के पास उन वक़्तों में जिनमें वह दुनिया में नमाज़े अदा किया करते थे, अजीबो ग़रीब चीज़ें पेश होती रहेंगी और फ़रिश्ते उन वक़्तों में जन्नतियों पर सलाम भेजते रहेंगे।

(जलालेन शरीफ़ पेज 258)

सवाल – फिर जन्नत वाले आराम के वक़्त को कैसे पहचानेंगे?

जवाब – परदों के लटक जाने और दरवाज़ों के बन्द हो जाने से पहचान लेंगे यानी जब आराम का वक़्त होगा तो परदे खुद ब खुद लटक जाऐंगे और दरवाज़े बन्द हो जाऐंगे ऐसे ही जब सैर व तफ़रीह का वक़्त होगा तो परदे खुद उठ जाया करेंगे और

दरवाज़े खुल जाऐंगे। (हाशिया जलालैन पेज 258)

सवाल – जन्नत में उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की तादाद कितनी होगी?

जवाब – जन्नतियों की एक सौ बीस सफ़ें होंगी, जिनमें अस्सी सफ़ों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की उम्मत होगी और चालीस सफ़ों में तमाम अंबियाऐ किराम की उम्मते होंगी।

(मिशकात शरीफ़ 2 पेज 498)

सवाल – जन्नती जन्नत में किस उमर के होंगे?

जवाब – सब तीस या तेंतीस साल के मालूम होंगे और सर के बालों पल्कों और भोओं के इलावा बदन पर कहीं बाल न होंगे।

(मिश्कात शरीफ़ 2 पेज 498, बहारे शरीअत 1 पेज 48)

सवाल – जन्नती जन्नत में किस शक्लो सूरत में दाख़िल होंगे?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की शक्ल में दाख़िल होंगे यानी हर एक की लम्बाई साठ हाथ होगी।

(तफ़सीरे अज़ीज़ी सूरए बक़र पेज 147)

सवाल – क्या जन्नत में किसी की दाढ़ी न होगी?

जवाब – सिर्फ़ चार नबी के बारे में है कि उनके चेहरे पर दाढ़ी होगी (1)हज़रत आदम अलैहिस्सलाम (2)हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम (3)हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम (4)हज़रत हारुन अलैहिस्सलाम। (फ़तावा हदीसिया पेज 6, मिरअतुलमानाजीह 7 पेज 497, तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 173)

सवाल – सबसे पहले जन्नत में कौनसी उम्मत दाख़िल होगी?

जवाब – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की उम्मत।

(मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 402)

सवाल – इस उम्मत में सबसे पहले कौन दाख़िल होगा?

जवाब – मर्दों में हज़रत अबु बक्र, औरतों में हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रदियल्लाहु अनहा। (सीरत हलबी 1 पेज 266)

सवाल – हज़रत आदम व हव्वा जन्नत में कितने दिन रहे?

जवाब – यौमे आख़िरत के आधे दिन रहे। जिसकी मिक़दार दुनिया के पाँच सौ साल के बराबर है। (ज़रक़ानी 1 पेज 55)

सवाल – जन्नतियों को जन्नत में सबसे पहले कौनसा खाना पेश किया जाऐगा?

जवाब – मछली के जिगर का वह हिस्सा जो किनारे रहता है। (बुख़ारी शरीफ़ 1 पेज 469)

सवाल – क्या काफ़िरों के छोटे बच्चे भी जन्नत में जाऐंगे?

जवाब – इस सिलसिले में मुख़्तलिफ़ क़ौल हैं, पहला क़ौल यह है कि अपने बाप दादा के ताबे होकर जहन्नम में जाऐंगे, दूसरा क़ौल तवक़्क़ुफ़ का है, तीसरा क़ौल यह है कि जन्नत में जाऐंगे यही सही और मुहक़्क़िक़ीन का क़ौल है।

(फ़तावा हदीसिया पेज 78, ख़ाज़िन 2 पेज 260, उम्दतुल क़ारी 4 पेज 236)

सवाल – क्या जन्नती जन्नत में कुरआन की तिलावत करेंगे?

जवाब – हदीस शरीफ़ में है कि जन्नतियों के सीने से दो सूरतें यानी सूरऐ ताहा और सूरऐ यासीन के इलावा तमाम कुरान उठा लिया जाऐगा सिर्फ़ इन्हीं दो सूरतों की वह तिलावत करेंगे। (कुनूज़ुल हक़ाइक़ 2 पेज 203)

सवाल – क्या जन्नती जन्नत में भी उलमा के मुहताज होंगे?

जवाब – हाँ मुहताज होंगे। (जामेऐ सग़ीर 1 पेज 74)

सवाल – किन बातों में मुहताज होंगे?

जवाब – जब मोमिन हर जुमे को अल्लाह के दीदार से सरफ़राज होंगे तो अल्लाह अपने बन्दों से फ़रमाऐगा ऐ बन्दे

तमन्ना करो तुम्हारी हर तमन्ना व आरज़ू पूरी होगी। इस पर लोग उलमा की तरफ़ रुजुअ करेंगे कि अब हम अपने रब से किस चीज़ की तमन्ना करें, उलमा जवाब देंगे कि फलाँ-फलाँ चीज़ की तमन्ना करो। (जामे सग़ीर 1 पेज 74, अलइत्तेहाफ़ पेज 104)

सवाल – क्या दुनिया की कुछ इमारतें भी जन्नत में जाऐंगी?

जवाब – हाँ जैसे काबऐ मुअज़्ज़मा, तमाम मस्जिदें, रोज़ऐ अक्दस, अम्बियाऐ किराम के मज़ारात। (अलमलफ़ूज़ 4 पेज 76)

सवाल – क्या जन्नत में दाख़िल होने के लिये मौत का मज़ा चखना ज़रुरी है?

जवाब – हाँ जिसने दुनिया की सूरत देख ली वह बग़ैर मज़ा चखे ही जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता। (अलमलफ़ूज़ 4 पेज 46)

सवाल – क्या कुछ आदमी ऐसे भी हैं जो मौत का मज़ा चखे बग़ैर जन्नत में जाऐंगे?

जवाब – हाँ वह आदमी हैं जिन्हें अल्लाह तआला जन्नत पुर करने के लिये पैदा फ़रमाऐगा। यानी उन रुहों को कि दुनियाँ में न भेजी गई, जिस्म अता फ़रमाकर उन मकानों में बसाऐगा जो ख़ाली रहेंगे, यह हज़रात बहुत आराम से रहे न दुनिया की सूरत देखी न कोई तक्लीफ़ सही न मौत चखी और न कोई अमल किया फ़क्त अल्लाह व रसूल पर ईमान और हमेशा के लिये दारुल जिनान। (अलमलफ़ूज़ 2 पेज 85)

दोज़ख़ का बयान

सवाल – दोज़ख़ क्या चीज़ है?

जवाब – वह एक ऐसा मकान है जो अल्लाह तआला के जलाल व कहर का मज़हर है उसे अल्लाह तआला ने काफ़िरों

और नाफ़रमानों के लिये बनाया है। आदमी और पत्थर उसका ईंधन हैं, दुनिया की आग उसकी आग के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है उसकी गहराई का यह आलम है कि अगर पत्थर की चटान जहन्नम के किनारे से उसमें फेंकी जाए तो सत्तर साल में भी तह तक न पहुँचे। (बहारे शरीअ़त 1 पेज 48)

सवाल – दोज़ख़ कहाँ है?

जवाब – सातवें तबक़ ज़मीन के नीचे है।

(तकमीलुल ईमान पेज 24, तफ़सीरे अज़ीज़ी पारा 30 पेज 12)

सवाल – दोज़ख़ के तबक़ात कितने हैं?

जवाब – सात हैं (1)जहन्नम (2)सईर (3)हुतमा (4)लज़्ज़ी (5)सक़र (6)जहीम (8)हावियह।

(ख़ज़ाइन पेज 382, दक़ाईक़ुल अख़बार पेज 35)

सवाल – कौनसा तबका किसके लिये है?

जवाब – हाविया मुनाफ़िक़ीन और फिरऔन व आले फिरऔन की लिये है।

जहीम, कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन के लिये, सक़र चाँद व सूरज व सितारा परस्तों के लिये, लज़्ज़ी इबलीस और उसकी पैरवी करने वालों के लिये, हुतमा यहूद के लिये सईर नसारा के लिये है और सबसे ऊपर के तबक़े में जिसे जहन्नम कहते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की उम्मत के गुनाहगारों के लिये है। वह लोग उसमें रहेंगे। (दक़ाईक़ुल अख़बार पेज 35)

सवाल – दोज़ख़ की आग किस शक्ल में है?

जवाब – हदीस शरीफ़ में है कि एक हज़ार साल तक वह आग दहकाई गई तो लाल सुर्ख़ हो गई, फिर एक हज़ार साल तक दहकाई गई तो वह आग सफ़ेद हो गई, फिर एक हज़ार साल

तक वह आग दहकाई गई तो काली सियाह हो गई अब वह ख़ालिस सियाही पर बाक़ी है जिसमें रोशनी का नाम नहीं।

(मिश्कात शरीफ़ 2 पेज 503)

सवाल - क्या क़यामत के दिन जहन्नम खुद ब खुद ज़ाहिर होगी? या कोई खींच कर लाऐगा?

जवाब - फ़रिश्ते उसे खींच कर लाऐंगे, हदीस शरीफ़ में है कि जहन्नम की सत्तर हज़ार बागें होंगी हर बाग पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जमा होकर उसको खीचेंगे और वह जोश ग़ज़ब में होगा, यहाँ तक कि फ़रिश्ते उसको अर्श की बाईं तरफ़ लाकर रखेंगे। (मिश्कात शरीफ़ 2 पेज 502, उम्दतुल क़ारी 7 पेज 269)

अलग-अलग बातों का बयान

(मुतफ़र्रिक उमूर का बयान)

सवाल - वह कौनसा खून है जिसका खाना हलाल है?

जवाब - कलेजी तिल्ली, खाना हलाल है जो दर असल जमा हुआ खून है। (मिश्कात शरीफ़ 2 पेज 361)

सवाल - वह कौनसा खून है जो खुद उसके लिये पाक और दूसरों के लिये नापाक है?

जवाब - शहीद का खून है कि खुद उसके लिये पाक है और दूसरों के लिये नापाक है। (अलइश्बाह वन्नज़ाइर पेज 109)

सवाल - कितनी किस्मों का खून पाक है?

जवाब - दस तरह के खून पाक हैं (1)शहीद का खून (2)वह खून जो ज़िबह के बाद गोश्त मे रह गया हो। (3)वह खून जो ज़िबह के बाद रगों में बाक़ी रह गया हो (4)जिगर और तिल्ली का खून (5)दिल का खून (6)वह खून जो इन्सान के बदन से

बहा नहीं (7)खटमल का खून (8)पिस्सू का खून (9)जुएं का खून (10)मछली का खून। (अलइश्बाह वन्नज़ाइर पेज 188)

सवाल - वह कौनसी चीज़ें हैं जिनको अल्लाह तआला ने अपने ख़ास दस्ते कुदरत से तैयार किया है?

जवाब - (1)अर्शे आज़म (2)क़लम (3)जन्नते अद्न (4)हज़रत आदम अलैहिस्सलाम (5)तौरेत शरीफ़ (6)शजरे तूबा।

(ख़ाज़िन 2 पेज 236, मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 423)

सवाल - वह कौनसे हज़रात हैं जिनके पैशाब-पाख़ाना को ज़मीन निगल जाती है?

जवाब - अम्बियाऐ किराम अलैहिमुस्सलाम।

(मदरिजुन्नुबुव्वत 1 पेज 29)

सवाल - वह कितने हज़रात हैं जिनको फ़रिश्तों ने नहलाया?

जवाब - हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, हज़रत ज़करया, अलैहिस्सलाम, हज़रत हन्ज़ला, हज़रत हमज़ा रदियल्लाहु अन्हुम। (ज़रक़ानी 3 पेज 278, कससुल अम्बिया पेज 262, तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 172)

सवाल - अल्लाह के नज़दीक कौनसा पहाड़ सबसे अफ़ज़ल है?

जवाब - उहुद पहाड़। (फ़तावा हदीसिया पेज 132)

सवाल - वह कौनसा आदमी है जिसकी मौत के वक़्त फ़रिश्ते ने उसका फ़तवा खुद उसके सामने पेश किया, और वह अपने ही फ़तवे के मुताबिक़ हलाक हुआ?

जवाब - वह फिरऔन है, एक बार हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम इन्सानी शक्ल में फिरऔन के पास एक इस्तिफ़ता लाऐ जिसका मज़मून यह था कि बादशाह का उस गुलाम के बारे में क्या हुक्म हैं जिसने अपने आक़ा के माल व नेमत में

परवरिश पाई फिर उसकी नाशुक्री की और उसके हक़ का मुनकिर हो गया और खुद आक़ा होने का दावा किया, उस पर फ़िरऔन ने यह जवाब दिया। कि जो गुलाम अपने आक़ा की नोमतो का इन्कार कर दे और उसके मुक़ाबले में आऐ उसकी सज़ा यह है कि उसको दरया में डुबा दिया जाऐ, जब फ़िरऔन डूबने लगा तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने उसका वही फ़तवा उसके सामने पेश कर दिया उसने उसको पहचान लिया।

(खज़ाइन पेज316)

सवाल – वह बादशाह जिनका लक़ब फ़िरऔन हुआ कितने हैं और किस नबी के ज़माने में गुज़रे?

जवाब – तीन हैं सिनानुल अश्अ़ल बिन अलअ़लवान, यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने का फ़िरऔन है (2)रय्यान बिन अलवलीद यह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने का फ़िरऔन है (3)वलीद बिन मुसइब यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने का फ़िरऔन है।

(हयातुल हैवान 1 पेज 80)

सवाल – शबे क़दर अफ़ज़ल है या शबे मेराज?

जवाब – हमारे लिये शबे क़दर अफ़जल है और हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के लिये शबे मेराज अफ़ज़ल है।

(ज़रकानी 6 पेज 9)

सवाल – अल्लाह तआला ने कितनी उम्मतों को पैदा फ़रमाया और वह कहाँ–कहाँ हैं?

जवाब – एक हज़ार उम्मत को पैदा फ़रमाया जिन में से छः सौ तो दरया में और चार सौ खुश्की में हैं। (मिश्कात शरीफ 2 पेज 472)

सवाल – हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने सबसे

ज़्यादा बद बख़्त किन लोगों को कहा?

जवाब - क़िदार बिन सालिफ़ को जिसने हज़रत सालेह अलैहिस्सलम की ऊँटनी को क़त्ल किया (2)हज़रत आदम के बेटे क़ाबील को जिसने अपने भाई हाबील को क़त्ल किया (3)हज़रत अली के क़ातिल इब्ने मुलजिम को।

(हयातुल हैवान 2 पेज 336)

सवाल - वह कौन इन्सान है जो हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के पैदा होने से एक हज़ार साल पहले आप पर ईमान लाऐ, और उन्होंने आपके नाम से एक ख़त भी लिखा जिसमें अपने ईमान लान की शहादत लिखी?

जवाब - तुब्बऐ अव्वल हुमयरी है जिसने आपके नाम ख़त भी लिखा और वह ख़त सिसिले वार मुन्तक़िल होता हुआ आप तक पहुँचा। (सावी 4 पेज 54, जज़्बुल कुलूब 59)

सवाल - वह कौन शख़्स है जिसने मदीने में आपके लिये हज़ार साल पहले एक मकान बनाया था ताकि जब आप हिजरत करके मदीना आएं तो उस में कुछ दिन आराम करें?

जवाब - तुब्बऐ अव्वल हुमयरी है और वह मकान वही हैं जिसके मालिक बाद में हज़रत अबु अय्यूब अन्सारी हुऐ।

(ज़रकानी 1 पेज 358, जज़्बुल कुलूब पेज 59)

सवाल - मक्के में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसललम के ख़िलाफ़ किस घर में मीटिंगे होती थीं उसका नाम क्या था?

जवाब - दारुन्नदवा। (ज़रकानी 1 पेज 321)

सवाल - उसकी तामीर किसने की थी?

जवाब - कुसई बिन किलाब ने। (सीरते हलबी 1 पेज 14)

सवाल - बुत परस्ती की इब्तिदा कब से हुई?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने से।

(तफ़सीर नईमी 12 पेज 84)

सवाल – बुत परस्ती की शुरुआत किस चीज़ से हुई?

जवाब – बुज़र्गों की तसवीरों से हुई।वाकेआ यह हुआ कि वद, सुवाअ़, यगूस, यऊक, नसर जो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कौम के नेक व सालेह लोग थे जब उनका इन्तिक़ाल हुआ तो उनके रिश्तेदारों व दोस्तों और चाहने वालों को बहुत ज़्यादा सदमा पहुँचा और 'वह इतने ग़मगीन हुऐ कि सब कारोबार छोड़कर उन्हें याद करने लगे, तो एक दिन इबलीस लईन ने इन्सानी शक्ल में आकर उनके मानने वालों से कहा कि, तुम इनकी तसवीरें बनाकर उनकी मजलिसों में लगाओ और उन्हें उन्हीं के नाम से पुकारो ताकि तुम्हारा ग़म दूर हो, पस इन लोगों ने ऐसा ही किया और यह मामला मुद्दतों चलता रहा फिर जब उस ज़माने के लोग वफ़ात कर गऐ और उनके बारे में कोई बताने वाला नहीं रहा तो इबलीस लईन ने मौक़ा ग़नीमत समझकर उनकी औलादों से कहा कि यह तुम्हारे बाप- दादाओं के माबूद, खुदा हैं तुम्हारे बाप-दादा इनकी इबादत करते थे यह सुनकर लोगों ने उन्हें माबूद समझ लिया और उनकी इबादत शुरु कर दी।

(बुखारी शरीफ़ 2 पेज 732, खाज़िन 7 पेज 130, सीरत हलबी 1 पेज 13)

फ़तावा रिज़्विया 10 निस्फ अव्वल पेज 145

सवाल – सरज़मीने अरब पर बुत परसती की रस्म किसने ईजाद की?

जवाब – अ़मर बिन लुही ने।

(ज़रक़ानी 1 पेज 175, सीरत तहलबी 1 पेज 12)

सवाल - उसने यह बुत कहाँ से हासिल किया और उसका नाम क्या था?

जवाब - मुल्के शाम से हासिल किया और उसका नाम हुबल था, वाक़िआ यह है कि यह किसी ज़रुरत से मुल्के शाम पहुँचा तो वहाँ देखा कि कौमे इमालक़ा के कुछ लोग बुतों की इबादत करते हैं तो उसने उनसे पूछा कि यह क्या है और इसे क्यों पूजते हो उन लोगों ने जवाब दिया यह बुत है और हम इसकी इबादत करते हैं, इसका फ़ायदा यह है कि हम इनसे बारिश तलब करते हैं तो बारिश होती है और मदद तलब करते हैं तो हमारी मदद होती है। अमर बिन लुही ने यह देखकर उनसे एक बुत माँग लिया ताकि सर ज़मीने अरब ले जाएं और वहाँ के लोगों को उसकी इबादत का तरीक़ा बताऐं, इन लोगों ने एक बुत दे दिया जिसका नाम हुबल था अमर बिन लुही ने उस बुत को लाकर ख़ानऐ काबा में लगा दिया और लोगों को उसकी इबादत का हुक्म दिया उसी दिन से अरब में बुत परस्ती फैल गई ।

(सीरते हलबी 1 पेज 12)

सवाल - इल्मे नह्व को पैदा करने वाल कौन है?

जवाब - हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु।(महाज़िरतुल अवाइल पेज 69) बक़ौलेबाज़ हज़रत अबुलअसवद दुइली ताबेई।

(अस्सिर्रुल मकतूम पेज 2)

सवाल - इल्मे मन्तिक़ को पैदा करने वाला कौन है?

जवाब - इल्मे मन्तिक का बाज़ाब्ता ज़ुहूर सबसे पहले हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम से हुआ, अल्लाह तआला ने आपको यह इल्म बतौरे मोज़िज़ा अता फ़रमाया था, फिर बाद में यूनानियो ने इस इल्म को अपनाया और यूनान ही के हकीम अरस्तु ने इस इल्म को जमा किया। (क़ुर्रतुलउयून पेज 134)

सवाल – इल्मे जफ़र को किसने ईजाद किया?

जवाब – हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने।

(तफ़सीर नईमी पारा 12 पेज 33)

सवाल – इल्मे हिसाब और इल्मे नुजूम का मोदि कौन है?

जवाब – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम। (ख़ाज़िन 4 पेज 202)

सवाल – इल्मे सर्फ़ को किसने ईजाद किया?

जवाब – मुआज़ बिना मुस्लिम ने। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 69)

सवाल – इल्मे मआ़नी का मोजिद (बनाने वाला) कौन है?

जवाब – जाफ़र बिन यहया। (कुर्रतुल उयून पेज 127)

सवाल – इल्मे बयान का मोजिद कौन है?

जवाब – अबू उबैदा मुअ़म्मर बिन मुसन्ना तमीमी।

(कुर्रतुल उयून पेज 129)

सवाल – फन्ने बदीअ़ का मोजिद (पैदा करने वाला) कौन है?

जवाब – अब्दुल्लाह बिन अलमुअ़तज़्जुल मुतवक्किल।

(कुर्रतुल उयून पेज 131)

सवाल – इल्मे उरुज़ और इल्मे काफ़िया किसने ईजाद किया?

जवाब – ख़लील बिन अहमद ने। (अस्सिर्रुल मकतूम पेज 2)

अव्वलियात का बयान

चाहे हक़ीक़ी हों या इज़ाफी

सवाल – सबसे पहले किस चीज़ को पैदा किया गया?

जवाब – हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के नूर को पैदा किया गया,

उसके बाद अर्शे आज़म, और कलम को पैदा किया गया।

(मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 9)

सवाल – सबसे पहले ज़मीन का कौनसा हिस्सा बना?

जवाब – कबऐ मुअ़ज़्ज़मा का हिस्सा (ख़ाज़िन 1 पेज 94)

सवाल – रुऐ ज़मीन में सबसे पहले किन शहरों की तामीर हुई?

जवाब – बाबुल और सूस की। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 116)

सवाल – ज़मीन में सबसे पहले कौनसा पहाड़ बना?

जवाब – जबले अबी कुबैस। (रोज़तुल बहिय्यह पेज 3)

सवाल – दिन रात में सबसे पहले किस की पैदाइश हुई?

जवाब – रात की। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 13)

सवाल – सातों दिनों में सबसे पहले किस दिन की पैदाइश हुई?

जवाब – हफ़्ते के दिन की। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 13)

सवाल – चाँद व सूरज में सबसे पहले किसको बनाया गया?

जवाब – सूरज को। (महज़िरतुल अवाइल पेज 13)

सवाल – सबसे पहले किस जानवर को पैदा किया गया?

जवाब – मछली को। (हयातुल हैवान 2 पेज 372)

सवाल – सबसे पहले अज़ान किसने पढ़ी?

जवाब – हज़रत जिब्राईल ने। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 95)

सवाल – सबसे पहले कदर के मसले में बहस व मुबाहसा किसने किया?

जवाब – हज़रत जिब्राईल व मीकाईल ने किया जिनका फ़ैसला हज़रत इसराफ़ील ने किया। (शरह फ़िक्हे अकबर मुग़सियावी पेज 5)

सवाल – ज़मीन में सबसे पहले कौनसा दरख़्त उगा?

जवाब – ज़ैतून का दरख़्त। (मवाहिब लदुन्निया पेज़ 107)

बाज़ के नज़दीक छुआरे का दरख़्त। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 17)

जवाब – सबसे पहले सुबहानल्लाह किसने कहा?

जवाब – हज़रत जिब्राईल ने। (महाज़िरतुल अवाइल पेज93)

सवाल – सबसे पहले "*सुबहान रब्बियल अअ़ला*" किसने कहा?

जवाब – हज़रत इसराफ़ील ने। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 93)

सवाल – सबसे पहले लफ़्ज़े अना यानी में किसने कहा?

जवाब – इबलीस ने। (मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 19)

सवाल – सबसे पहले झूठी क़सम किसने खाई?

जवाब – इबलीस ने। (ख़ज़ाइन पेज 221)

सवाल – सबसे पहले धोका बाज़ी किसने की?

जवाब – इबलीस ने। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 106)

सवाल – सबसे पहले ग़ीबत किसने की?

जवाब – इबलीस ने। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 114)

सवाल – सबसे पहले नस (अल्लाह के लिखे हुऐ) के ख़िलाफ़ क़्यास किसने किया?

जवाब – इबलीस ने ही। (ख़ाज़िन व मआलिम 2 पेज 176)

सवाल – सबसे पहले गिर्या व ज़ारी (रोना-चिल्लाना) किसने की?

जवाब – इबलीस ने की हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हव्वा को धोका देने के लिये। (ज़रक़ानी 1 पेज 54)

सवाल – सब से पहले कुफ़्र किसने किया?

जवाब – इबलीस ने। (सावी 4 पेज 21)

सवाल – क़यामत के दिन सबसे पहले जहन्नम का लिबास किसको पहनाया जाऐगा?

जवाब – इबलीस को। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 147)

सवाल – सबसे पहले कौनसा गुनाह सादिर हुआ?

जवाब – हसद, जो ज़मीन पर क़ाबील से और आसमान में इबलीस से सादिर हुआ। (तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 पेज 299)

सवाल – सबसे पहले ख़ुदा होने का दावा किसने किया?

जवाब – शद्दाद ने। (तफ़सीर अज़ीज़ी पारा 30 पेज 167)

सवाल – सबसे पहले नबुव्वत का दावा किसने किया?

जवाब – हकीम ज़रतुश्त या ज़रदश्त शागिर्द फ़ीसा ग़ौरिस ने। (ग़यासुललुग़ात पेज 270)

सवाल – सबसे पहले सर पर ताज किसने रखा?

जवाब – नमरुद ने। (ख़ाज़िन 2 पेज 124)

सवाल – सबसे पहले अमामा (साफ़ा) सर पर किसने बाँधा?

जवाब – सिकन्दर ज़ुल करनैन ने। (महाज़िरतुल अवाइज़ पेज 84)

सवाल – सबसे पहले काला ख़िज़ाब किसने लगाया?

जवाब – फ़िरऔन ने। (जामेऐ सग़ीरा 1 पेज 94)

सवाल – सबसे पहले सूली की सज़ा किसने दी?

जवाब – फ़िरऔन ने ही। (ख़ाज़िन 2 पेज 224)

सवाल – सबसे पहले हाथ पैर कटवाने की सज़ा किसने दी?

जवाब – इसका मोजिद भी फ़िरऔन है। (ख़ाज़िन 2 पेज 224)

सवाल – सबसे पहले पक्की ईंट किसने बनवाई?

जवाब – फ़िरऔन ने। (सावी 3 पेज 181)

सवाल – सबसे पहले छींक किसको आई?

जवाब – हज़रत आदम को जिस वक़्त रुह आपकी नाक में पहुँची तो आपको छींक आ गई (ख़ाज़िन 1 पेज 39)

सवाल – हज़रत आदम के मुँह से सबसे पहले कौनसा कलिमा निकला?

जवाब – आपको छींक आई तो आपने ज़ुबान से कहा '*अलहम्दुल्लिाह*' पहले यही कलिमा आपकी ज़ुबान से जारी हुआ। (रुहुल बयान 1 पेज 25)

सवाल – सबसे पहले यरहमुकल्लाह किसने कहा?

जवाब – खुदा ने कहा हजरत आदम अलैहिस्सलाम की छींक के जवाब में। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बकर पेज 146)

सवाल – सबसे पहले सलाम किसने किया?

जवाब – हज़रत आदम ने फ़रिश्तों को किया और फ़रिश्तों ने उसके जवाब में "*अलैकस्सलाम वरहमतुल्लाह*" कहा'

(मिश्कात शरीफ़ 2 पेज 397)

सवाल – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हव्वा ने दुनिया में आने के बाद सबसे पहले किस चीज़ का लिबास पहना?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने भेड़ के बालों को काट कर अपने लिये जुब्बा तैयार किया और हज़रत हव्वा के लिये एक दरअ़ कमीस की तरह और एक ओढ़नी तैयार की।

(अलबिदाया वन्निहाया 1 पेज 92)

सवाल – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने ज़मीन पर आने के बाद सबसे पहले कौनसा खाना तनावुल फ़रमाया?

जवाब – गेहूँ की रोटी। (अलबिदाया वन्निहाया 1 पेज 92)

सवाल – सबसे पहले खेती बाड़ी का काम किसने किया?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बकर पेज 170)

सवाल – सबसे पहले गेहूँ की खेती किसने की?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज97)

सवाल – सबसे पहले ज़मीन में पौदा किसने लगाया?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने ही।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 17)

सवाल – सबसे पहले कपड़ा बुनने का काम किसने किया?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने ही।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – सबसे पहले रुपया, अशरफ़ी किसने तैयार की?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – सबसे पहले सर का बाल किसने मुँडाया?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने मुँडाया, और मूँडने वाले हज़रत जिब्राईल अमीन थे। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 43)

सवाल – सबसे पहले किसने लिखा?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने।

(मुहाजिरतुल अवाइल पेज 27)

सवाल – सबसे पहले अरबी ख़त किसने लिखा?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने लिखा, एक क़ौल यह है कि हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम ने लिखा।

(अलइतक़ान 2 पेज166)

सवाल – सबसे पहले अरबी और सुरयानी ज़ुबान को किसने लिखा?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने ही।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 28)

सवाल – सबसे पहले शेर किसने पढ़ा?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 29)

सवाल – सबसे पहले हज किसने किया?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 139)

सवाल – सबसे पहले किस मय्यित को गुस्ल दिया गया?

जवाब – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को फ़रिश्तों ने गुस्ल दिया। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 100)

सवाल – सबसे पहले माहवारी का खून किस औरत को आया?

जवाब – हज़रत हव्वा को जब वह जन्नत से दुनिया में आईं। (उम्दतुल क़ारी 2 पेज 80)

सवाल – मज़ामीर ढोल, बाजे वग़ैरा आलाते खेल-कूद सब से पहले किसने बनाऐ?

जवाब – क़ाबील ने। (तफ़सीर मवाहिबुर्रहमान 6 पेज 96)

सवाल – सबसे पहले आग की पूजा किसने की?

जवाब – क़ाबील ने। (सावी 1 पेज 243)

सवाल – इन्सानों में सबसे पहले अल्लाह की नाफ़रमानी किसने की?

जवाब – क़ाबील ने की। (रुहुल बयान पेज 556)

सवाल – सबसे पहले क़ब्र में कौन दफ़न हुआ?

जवाब – हाबील। (अशिअ़अतुल लमआत 1 पेज 691)

सवाल – सबसे पहले दाढ़ी किसकी निकली?

जवाब – हज़रत शीस अलैहिस्सलाम की। (आईनए तारीख़ पेज 49)

सवाल – सबसे पहले क़िला और शहर किसने तामीर किये?

जवाब – हज़रत शीस अलैहिस्सलाम के पर पोते महलाईल ने। (अलबिदाया वन्निहाया जिल्द 1 पेज 99)

सवाल – सबसे पहले रुई किसने निकाली?

जवाब – अनूश बिन शीस ने। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 90)

सवाल – सबसे पहले कलम से किसने लिखा?

जवाब – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने।

(ख़ाज़िन व मआलिम 4 पेज 202)

सवाल – सबसे पहले हथियार किसने बनाया?

जवाब – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने। (सावी 3 पेज 35)

सवाल – सबसे पहले जिहाद किसने किया?

जवाब – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 19)

सवाल – सबसे पहले सूई किसने बनाई?

जवाब – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने। (आईनऐ तारीख़ पेज 50)

सवाल – सबसे पहले कपड़ा सीने का काम किसने किया?

जवाब – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने। (ख़ाज़िन 4 पेज 202)

सवाल – सबसे पहले सिले हुऐ कपड़े किसने पहने?

जवाब – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने। (ख़ाज़िन 4 पेज 202)

सवाल – सबसे पहले खत्ते रमल किसने लिखा?

जवाब – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने।

(रुहुल बयान 4 पेज 676)

सवाल – सबसे पहले तराजू और पैमाने किसने तैयार किये?

जवाब – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने।

(नूरूलइरफान पेज 492)

सवाल – सबसे पहले रुई का लिबास किसने ज़ेब तन किया?

जवाब – हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 19)

सवाल – सबसे पहले कश्ती किसने तैयार की?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने।(महाज़िरतुल अवाइल पेज130)

नोटः– अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को

भेजा उन्होंने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को कश्ती बनाना सिखाई।

(सावी 3 पेज 96)

सवाल – सबसे पहले चमड़े का जूता किसने बनाया?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने। (मिरअतल मनाजीह 6 पेज 141)

सवाल – सबसे पहले काफ़िरों की जानिब किस रसूल को मबऊस किया गया?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ही को।(अलमलफ़ूज़ 3 पेज75)

सवाल – सबसे पहले शिर्क से किसने डराया?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिससलाम ने। (क़ससुल अम्बिया पेज 42)

सवाल – सबसे पहले निगरानी व हिफ़ाज़त के लिये कुत्ता किसने रखा?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ही ने रखा, वजह यह हुई कि जिस वक़्त हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने कश्ती बनाना शुरु की तो लोग रात में आकर आपके दिन भर की महनत को ख़त्म कर देते, और कश्ती की हालत को बिगाड़ देते थे, तब आपने बहुक्मे खुदा वन्दी निगरानी के लिये कुत्ता रख लिया, जो रात भर, पहरा दिया करता था। (हयातुल हैवान 2 पेज 306)

सवाल – सबसे पहले अल्लाह का अज़ाब किस नबी की उम्मत पर आया?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की उम्मत पर।

(कस्सुल अम्बिया पेज 42)

सवाल – सबसे पहले अपनी उम्मत को दज्जाल से किसने डराया?

जवाब – नूह अलैहिस्सलाम ने। (मिशकात शरीफ 2 पेज 473)

सवाल – तूफ़ान के बाद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने सबसे

पहले कौनसा शहर बसाया?

जवाब – सूकुस्समानीन जबले नहावंद के क़रीब।

(अलमलफ़ूज़ 1 पेज 73)

सवाल – सबसे पहले आशूरे का रोज़ा किसने रखा?

जवाब – हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने। (महाज़िरतुल अवाइल पेज98)

सवाल – अम्बिया में सबसे पहले तिजारत किसने की?

जवाब – हज़तर सालेह अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज131)

सवाल – सर ज़मीने अरब में सबसे पहले कौनसे नबी तशरीफ़ लाऐ?

जवाब – हज़रत हूद अलैहिस्सलाम। (तफ़सीर नईमी पारा 11 पेज 547)

सवाल – सबसे पहले ख़तना किसने किया?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने। (ख़ाज़िन 1 पेज 89)

सवाल – सबसे पहले बालों में माँग किसने निकाली?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाईल पेज 38)

सवाल – सबसे पहले नाफ़ के नीचे का बाल किसने मूँडा?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(अलबिदाया वन्निहाया 1 पेज 175)

सवाल – सबसे पहले पायजामा किसने पहना?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(फ़तावा रिज़विया जिल्द दहुम निस्फ़े अव्वल पेज 84)

सवाल – सबसे पहले हिजरत किसने की?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(रुहुल बयान 2 पेज 973)

सवाल – सबसे पहले किसने कंघी बनाई?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने। (आईनऐ तारीख़ पेज 70)

सवाल – सबसे पहले पानी से इस्तिन्जा किसने किया?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही ने।

(हाशिया शेख़ ज़ादा 1 पेज 408)

सवाल – सबसे पहले नाखुन किसने तराशे?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने। (सावी 1 पेज 53)

सवाल – सबसे पहले मूँछें किसने पस्त कराईं?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ही। (सावी 1 पेज 53)

सवाल – सबसे पहले खुदा की राह में किसने जिहाद किया?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 373)

सवाल – सबसे पहले मैदाने कारज़ार में लश्करों की मैमना और मेसरा पर तरतीब किसने दी?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दी जिस वक़्त कि आपने हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को रुमियों से छुड़ाने के लिये लशकरों में तरतीब दी और उनसे जिहाद करके हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को लेकर आऐ। (तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 373)

सवाल – सबसे पहले मिम्बर पर खुत्बा किसने दिया?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 373)

सवाल – सबसे पहले मेंहदी का ख़िज़ाब किसने लगाया?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(तफ़सीर अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पज 373)

सवाल – सबसे पहले मिसवाक किसने की?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।(शेख़ ज़ादा 1 पेज 408)

सवाल – सबसे पहले मेहमान नवाज़ी किसने की?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने। (ख़ाज़िन 1 पेज 89)

सवाल – सबसे पहले मेहमान ख़ाना किसने बनवाया?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 37)

सवाल – सबसे पहले मुसाफ़े के वक़्त दोनों आँखों के बीच बोसा किसने दिया?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल लअवाइल पेज 39)

सवाल – सबसे पहले नालैन किसने पहना?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 38)

सवाल – सबसे पहले बुतों को किसने तोड़ा?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 38)

सवाल – हज के अरकान अदा करते वक़्त सबसे पहले सर के बाल किसने मुँडाऐ?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 131)

सवाल – सबसे पहले मुआनक़ा किसने किया?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने।

(फ़तावा रिज़विया जिल्द दहुम निस्फ़ 1 पेज 10)

सवाल – सबसे पहले बाल किसके सफ़ेद हुऐ?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के। (ख़ाज़िन 1 पेज 89)

सवाल – सबसे पहले मुसाफ़ा किसने किया?

जवाब – हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ने।

(महाजिरतुल अवाइल पेज 140)

बक़ौले दीगर ज़ुलकरनैन अकबर ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से किया।

सवाल – क़यामत के दिन सबसे पहले लिबास किनको पहनाया जाऐगा?

जवाब – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को।

(मिश्का तशरीफ़ 2 पेज 483)

सवाल – हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर सबसे पहले कौन ईमान लाया?

जवाब – हज़रत सारा आपकी ज़ौजऐ मुहतरमा।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 33)

सवाल – सबसे पहले अपनी अहलिया के साथ हिजरत किसने की?

जवाब – हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने। (मदारिजुन्नुबुव्वत 2 पेज 52)

सवाल – सबसे पहले ज़म-ज़म शरीफ़ किसने पिया?

जवाब – हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाईल पेज 41)

सवाल – सबसे पहले घोड़े पर कौन सवार हुऐ?

जवाब – हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम। (हयातुल हैवान 1 पेज 388)

सवाल – सबसे पहले फसीह अरबी में कलाम किसने किया?

जवाब – हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने। (सीरते हलबी 1 पेज 21)

सवाल – सबसे पहले अम्मा बअ़्द किसने कहा?

जवाब – हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने (मदारिजुन्नुबुव्वत 1 पेज 435)

सवाल – सबसे पहले ज़िरह किसने बनाई?

जवाब – हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने। (सावी 3 पेज 243)

सवाल – सबसे पहले ऊन और बालों का लिबास किसने ज़ेब तन किया?

जवाब – हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने।

(बहारे शरीअत 16 पेज53)

सवाल – सबसे पहले गुस्ल खाना किसने बनवाया?

जवाब – हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने। (सावी 3 पेज 165)

सवाल – सबसे पहले समुन्दर से मोती किसने निकलवाऐ?

जवाब – हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने।

(खाज़िनव मआलिम 6 पेज 50)

सवाल – सबसे पहले ख़त पर मुहर किसने लगाई?

जवाब – हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने जिस वक़्त आपने मलकऐ बिलक़ीस को ख़त लिखा था।

(मवाहिब लदुन्निया अलश्शमाइलिलमुहम्मदिया, पेज 107)

सवाल – सबसे पहले बाल उड़ाने का पावडर किसने बनाया?

जवाब – हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने।

(ग़नियतुत्तालेबीन 1 पेज 108)

सवाल – सबसे पहले क़ुबा किसने ज़ेब तन किया?

जवाब – हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने।

(महारिज़ुतुलअवाइल पेज 84)

सवाल – सबसे पहले पंखे और चटाई बनाने का कम किसने किया?

जवाब – हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने।

(तफ़सीरे अज़ीज़ी सूरऐ बक़र पेज 170)

सवाल – सबसे पहले हम्माम में ग़ुस्ल किसने किया?

जवाब – हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 7)

सवाल – सबसे पहले साबुन किसने ईजाद किया?

जवाब – हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 91)

सवाल – सबसे पहले "*बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम*" किस नबी पर नाज़िल हुई?

जवाब – हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम पर।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 36)

सवाल – सबसे पहले मौत की तमन्ना किसने की?

जवाब – हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 100)

सवाल – सबसे पहले काग़ज़ किसने तैयार किया?

जवाब – हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 131)

सवाल – सबसे पहले खिराज किसने मुतअय्यन किया?

जवाब – हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने।(महाज़िरतुल अवाइल पेज 97)

सवाल – सबसे पहले नहर किसने खुदवाई?

जवाब – हज़रत दानयाल अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 118)

सवाल – सबसे पहले ज़मीन में सय्याहते किसने की?

जवाब – हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 131)

सवाल – हमारे नबी ने पैदा होते ही सबसे पहले कोनसा

कलाम किया?

जवाब – इन कलमों को कहा, "*अल्लाहु अकबरु कबीरन वलहमदुलिल्लाहि कसीरन व सुबहानल्लाहि बुकरतव-व-असीलन, लाइला-ह-इल्लल्लाह व इन्नी रसूलुल्लाह*"। (ज़रक़ानी 1 पेज 147)

सवाल – हमारे नबी को सबसे पहले किस औरत ने दूध पिलाया?

जवाब – अबु लहब की बाँदी सुवैबह ने। (मदरिजुन्नुबुव्वत 2 पेज 23)

सवाल – यौमे मीसाक़ में सबसे पहले "*अलस्तुबिरब्बिकुम*" का अहद किससे लिया गया?

जवाब – नबीए आखिरूज़्ज़माँ सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से। (मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 396)

सवाल – सबसे पहले रुबूबियत का इक़रार किसने किया?

जवाब – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने।

(ज़रक़ानी 5 पेज 242)

सवाल – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने सबसे पहले जुमा कहाँ अदा फ़रमाया?

जवाब – मदीने के अन्दर मस्जिदे बनु सालिम में। (ज़रक़ानी 1 पेज 354)

सवाल – नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने सबसे पहले किस मस्जिद में जमाअते सहाबा के साथ नमाज़ अदा की?

जवाब – मस्जिदे कुबा में। (ज़रक़ानी 1 पेज 353)

सवाल – नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने सबसे पहले कौनसा ग़ज़वा किया?

जवाब – ग़ज़वऐ अबवा। (बुख़ारी शरीफ 2 पेज 563)

सवाल – माले ग़नीमत सबसे पहले किस नबी के लिये हलाल हुआ?

जवाब – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के लिये।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 133)

सवाल – सूर फूँकने के बाद सबसे पहले क़ब्र से कौन निकलेंगे?

जवाब – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम।

(मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 402)

सवाल – क़यामत के दिन सबसे पहले शफ़ाअ़त कौन करेंगे?

जवाब – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम।

(मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 402)

सवाल – सबसे पहले किनकी शफ़ाअत क़ुबूल होगी?

जवाब – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की।

(मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 402)

सवाल – सबसे पहले जन्नत का दरवाज़ा कौन खटखटाऐगा?

जवाब – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम।

(मिश्कात शरीफ़ 2 पेज 511)

सवाल – सबसे पहले जन्नत में कौन दाख़िल होगा?

जवाब – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम

(मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 402)

सवाल – सबसे पहले पुल सिरात कौन पार करेगा?

जवाब – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम अपनी उम्मत के साथ पार करेंगे।

(मिश्क़ात शरीफ़ 2 पेज 490)

सवाल – नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने सबसे पहले किस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी?

जवाब – हज़रत असअ़द बिन ज़ुरारह पर।

(फ़तावा रिज़विया 2 पेज 468)

सवाल – सबसे पहले किस नबी की उम्मत जन्नत में दाखिल होगी?

जवाब – हमारे नबी की उम्मत। (मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 402)

सवाल – सबसे पहले ख़ानऐ काबा पर ग़िलाफ़ किसने चढ़ाया?

जवाब – तुब्बअ़ ने चढ़ाया इस्लाम के ज़ाहिर होने से 900 साल पहले, या हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने।

(उम्दतुल क़ारी 4 पेज 600)

सवाल – सबसे पहले हरम शरीफ़ की हद बन्दी किसने की?

जवाब – अदनान ने। (ज़रक़ानी 1 पेज 79)

सवाल – क्या अदनान ने भी ख़ानऐ क़ाबा पर ग़िलाफ़ चढ़ाया?

जवाब – हाँ उनके बारे में भी है कि उन्होंने सबसे पहले ग़िलाफ़ चढ़ाया। (ज़रक़ानी 1 पेज 79)

सवाल – सबसे पहले लोगों को वाज़ व नसीहत के लिये किसने जमा किया?

जवाब – कअ़ब बिन लूई ने। (ज़रक़ानी 1 पेज 72)

सवाल – ख़ानऐ काबा की तरफ़ सबसे पहले हदी यानी क़ुर्बानी का जानवर किसने भेजा?

जवाब – इलयास बिन मुज़र ने (ज़रक़ानी 1 पेज 78)

सवाल – सबसे पहले अरबी ज़बान में कलाम किसने किया?

जवाब – यअ़रब बिन कह़तान ने। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 23)

सवाल – सबसे पहले अरबी ख़त किसने लिखा?

जवाब – यअ़रब बिन कहतान ने। (रुहुल बयान 4 पेज 66)

सवाल – सबसे पहले जुमे के दिन का नाम जुमा किसने रखा?

जवाब – कअ़ब बिन लूई ने। (ज़रक़ानी 1 पेज 354)

सवाल – सबसे पहले ख़ुतबा देते वक़्त असा पर टेक किसने लगाई?

जवाब – कस बिन साइदा ने। (ज़रकानी 1 पेज 182)

सवाल – अरब में सबसे पहले काला ख़िज़ाब किसने लगाया?

जवाब – अब्दुल मुत्तलिब ने। (ज़रकानी 1 पेज 72)

सवाल – दीने इब्राहीमी को सबसे पहले किसने बदल डाला?

जवाब – उमर बिन लुही ने। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 7)

सवाल – मक्के में सबसे पहले हाजियों को खाना किसने खिलाया?

जवाब – अमर बिन लुही ने (सीरते हलबी 1 पेज 11)

सवाल – सबसे पहले तलबिया में शिर्क के अलफ़ाज़ किसने दाख़िल किये?

जवाब – अमर बिन लुहो ने। (सीरते हलबी 1 पेज 12)

सवाल – सबसे पहले बुतों के नाम पर जानवर किसने छोड़ा?

जवाब – अमर बिन लुही ने। (सीरते हलबी 1 पेज11)

सवाल – सबसे पहले दीनार किसने तैयार किया?

जवाब – तुब्बअ़ ने (मुसनदे इमाम आज़म पेज 278)

सवाल – सबसे पहले दिरहम किसने तैयार किया?

जवाब – तुब्बाऐ़ असग़र ने। (मुसनदे इमाम आज़म पेज 278)

सवाल – सबसे पहले ताँबे का रुपया पैसा किसने तैयार किया?

जवाब – नमरुद बिन कनआ़न ने। (मुनसदे इमाम आज़म पेज 278)

सवाल – सबसे पहले सिक्के पर मुहर किसने लगाई?

जवाब – हिरक़्ल ने। (उम्दतुल क़ारी 1 पेज 93)

सवाल – सबसे पहले ग़िरजा घर किसने तैयार किया?

जवाब – हिरक़्ल ने (उम्दतुल क़ारी 1 पेज 93)

सवाल – सबसे पहले ज़मीन में चश्मा और नहर किसने जारी किये?

जवाब – शहंशाह जू बाद ने। (महारिज़रतुल अवाइल पेज 115)

सवाल – सबसे पहले शराब किसने तैयार की?

जवाब – फीसा ग़ोरिस ने (महाज़िरतुल अवाइल पेज 72)

सवाल – सबसे पहले रेशम का लिबास किसने पहना?

जवाब – कौमे लूत ने (महाज़िरतुल अवाइल पेज 85)

सवाल – सबसे पहले मजलिसों में बैठकर शराब किसने पी?

जवाब – कौमे लूत ने (महाज़िरतुल अवाइल पेज 85)

सवाल – सबसे पहले लम्बी-लम्बी मूँछें किसने रखीं?

जवाब – क़ौमे लूत ने (महरितुल अवाइल पेज 85)

सवाल – सबसे पहले लाल कपड़े किसने पहने?

जवाब – क़ारून ने। (महाजिरतुल अवाइल पेज 86)

सवाल – सबसे पहले दाढ़ी किस ने मुँडाई?

जवाब – क़ौमे लूत ने। (महाजिरतुल अवाइल पेज 85)

सवाल – सबसे पहले कान किस औरत के छेदे गऐ?

जवाब – हज़रत हाजरा के। (उमदतुल क़ारी 7 पेज 360)

सवाल – सबसे पहले किस औरत ने ख़ानऐ काबा पर रेशमी ग़िलाफ़ चढ़ाया?

जवाब – हज़रत अब्बास की माँ ने। बचपन में हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के गुम हो जाने पर उनकी माँ ने नज़र मानी थी कि अगर मेरा बेटा मिल जाऐ तो में ख़ानऐ काबा पर रेशमी ग़िलाफ़ चढ़ाऊगीं।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 42, मिश्कात असमाउर्रिजाल पेज 602)

सवाल – सबसे पहले सुरयानी ज़ुबान में किताब किसने लिखी?

जवाब – नज़्ज़ार बिन मअ़द ने। (सीरते हलबी 1 पेज 22)

बकौले बाज़ तमाम ज़ुबानों यानी, अरबी, फ़ारसी, सुरयानी, इबरानी वग़ैरा में किताब सबसे पहले हज़रत आदम ही ने लिखी थी। (सीरते हलबी 1 पेज 22)

सवाल – सबसे पहले जान की दियत सौ ऊँट से किसने दी?

जवाब – अब्दुल मुत्तलिब ने हज़रत अब्दुल्लाह के बदले सौ ऊँट कुरबान किये। (सीरते हलबी 1 पेज 43)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले शरीअ़त का कौनसा हुक्म मन्सूख हुआ?

जवाब – बैतुल मुक़द्दस का क़िबला होना मन्सूख़ हुआ। (ख़ाज़िन 1 पेज 103)

सवाल – सबसे पहले जुमा किसने काइम किया?

जवाब – हज़रत असअ़द बिन ज़ुरारह ने क़ाइम किया मदीने में सरकार की आमद से पहले (ज़रक़ानी 1 पेज 315)

बक़ौले बाज़ हज़रत मुसइब बिन उमैर ने हज़रत असअ़द बिन ज़ुरारह की मदद से क़ाइम किया। (जज़बुल कुलूब पेज 61)

सवाल – इस उम्मत में सबसे पहले नमाज़ किसने अदा की?

जवाब – हज़रत खदीजतुल कुबरा ने फिर उसके बाद अली मुर्तज़ा ने। (ज़रक़ानी 1 पंज 241)

सवाल – सबसे पहले ख़ानऐ काबा का तवाफ़ और हज किसने किया?

जवाब – फ़रिश्तों ने। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 40)

सवाल – हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सबसे पहले किस फ़रिश्ते ने सजदा किया?

जवाब – हज़रत जिब्राईल ने फिर मीकाईल ने फिर इसराफ़ील फिर इज़राईल फिर मुक़र्रबीन फ़रिश्तों ने। (मवाहिब लदुन्निया 1 पेज 10)

सवाल – क़यामत के दिन सबसे पहले किनसे लिया जाएगा?

जवाब – हज़रत जिब्राईले अमीन से। (अलइतक़ान 1 पेज 45)

सवाल – क़यामत के दिन सबसे पहले लोगों के दरमयान किस चीज़ का फ़ैसला होगा?

जवाब – खून का फ़ैसला होगा। (मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 416)

सवाल – आमाल में सबसे पहले किस अ़मल को उठाया जाऐगा?

जवाब – नमाज़ को। (अलइत्तेहाफ़ पेज 136)

सवाल – क़यामत के दिन सबसे पहले हिसाब किस एबादत के बारे में पूछ–ताछ होगी?

जवाब – नमाज़ के बारे में। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 7)

सवाल – सबसे पहले दुनिया की कौनसी नेमत उठाई जाऐगी?

जवाब – शहद। (हयातुल हैवान 2 पेज 347)

सवाल – इस उम्मत से सबसे पहले कौनसी चीज़ उठाई जाऐगी?

जवाब – हया और अमानत। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 7)

सवाल – नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पर सबसे पहले कौन ईमान लाया?

जवाब – मर्दों में हज़रत अबु बक्र, औरतों में हज़रत ख़दीजा, बच्चों में हज़रत अली, गुलामों में हज़रत बिलाल हबशी, मवाली में हज़रत ज़ैद बिन हारिसा ईमान लाऐ।

(सीरते हलबी 1 पेज 311)

सवाल – सबसे पहले हमारे नबी की तसदीक़ किसने की?

जवाब – हज़रत अबु बकर ने (रद्दुल मोहतार 1 पेज 41)

सवाल – सबसे पहले कुरान को–किताबी शक्ल में किसने

जमा किया?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ ने। (अलइतक़ान 1 पेज 57)

सवाल – सबसे पहले क़ुरान का नाम मुसहफ़ किसने रखा?

जवाब – हज़र अबु बक्र सिद्दीक़ी ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 57)

सवाल – सबसे पहले ख़लीफ़ा के नाम के साथ कौन मोसूम हुऐ?

जवाब – हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ (तारीखुल खुलफ़ा पेज 57)

सवाल – सबसे पहले बैतुल माल किसने काइम किया?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 57)

सवाल – सबसे पहले रिआया के लिये वज़ीफ़ा किसने मुक़र्रर किया?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ी ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 57)

सवाल – इस उम्मत में सबसे पहले दरजऐ ग़ौसियत पर कौन फाइज़ हुऐ?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ (अलमलफ़ूज़ 1 पेज 120)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले मुफ़्ती कौन हुऐ?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 62)

सवाल – अम्बिया के बाद मर्दों में सबसे पहले जन्नत में कौन दाख़िल होगा?

जवाब – हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ (ज़रक़ानी 3 पेज 311)

सवाल – सबसे पहले अमीरुल मोमेनीन का लक़ब किस ख़लीफ़ा को दिया गया?

जवाब – हज़रत उमर फ़ारुक को (जज़्बुल क़ुलूब पेज 80)

सवाल – सबसे पहले सन् हिजरी किसने ईजाद की?

जवाब – हज़रत उमर ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 97)

सवाल – सबसे पहले बीस रकअ़त तरावीह की नमाज़

बाजमाअत किसने राइज की?

जवाब – हज़रत उमर ने ही। (तारीखुल खुलफ़ा पेज 97)

सवाल – सबसे पहले रात में पहरा किस ख़लीफ़ा ने दिया?

जवाब – हज़रत उमर ही ने (तारीखुल खुलफ़ा 1 पेज 97)

सवाल – सबसे पहले दुर्रह किसने बनाया?

जवाब – हज़रत उमर ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 97)

सवाल – सबसे पहले शराब पीने पर अस्सी दुर्रे किसने लगाऐ?

जवाब – हज़रत उमर ने (महाज़िरतुल अवाइल पेज 97)

सवाल – सबसे पहले दफ़्तर किसने क़ाइम किया?

जवाब – हज़रत उमर ही ने। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 97)

सवाल – सबसे पहले ज़मीन की पैमाइश किसने कराई?

जवाब – हज़रत उमर फ़ारुक ने (महाज़िरतुल अवाइल पेज 97)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले क़ाज़ी कौन बने?

जवाब – हज़रत उमर फ़ारुक (महाज़िरतुल अवाइल पेज 62)

सवाल – सबसे पहले हर शहर में क़ाज़ी किसने मुक़र्रर किया?

जवाब – हज़रत उमर फ़ारुक ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 97)

सवाल – सबसे पहले मर्दुम शुमारी किसने कराई?

जवाब – हज़रत उमर ने (तारीख़े इस्लाम 1 पेज 368)

सवाल – सबसे पहले जेल ख़ाना किसने बनवाया?

जवाब – हज़रत उमर ने (तारीख़े इस्लाम 1 पेज 368)

सवाल – सबसे पहले पुलिस का महकमा किसने क़ाइम किया?

जवाब – हज़रत उमर फ़ारुक़ ने (तारीख़ इस्लाम 1 पेज 368)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले एहलो अयाल के साथ हिजरत किसने की?

जवाब – हज़रत उसमान ग़नी ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 117)

सवाल – सबसे पहले मुअज़्ज़िन की तनख़्वाह किसने मुक़र्रर की?

जवाब – हज़रत उसमान ग़नी ने (महाज़िरतुल अवाइल पेज 95)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले मेहमान ख़ाना किसने बनवाया?

जवाब – हज़रत उसमान ग़नी ने (महाज़िरतुल अवाइल पेज 95)

सवाल – जुमे की नमाज़ के लिये सबसे पहले अज़ाने अव्वल का इज़ाफ़ा किसने किया?

जवाब – हज़रत उसमान ग़नी ने (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 116)

सवाल – सबसे पहले मस्जिदों को खुश्बुओं से मुअत्तर किसने किया?

जवाब – हज़रत उसमान ग़नी ने। (तारीख़ुल ख़लफ़ा पेज 116)

सवाल – सबसे पहले मस्जिदों में मेहराब किसने बनवाई?

जवाब – हज़रत उसमान ग़नीने (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 116)

सवाल – सबसे पहले जानवरों के लिये चरागाह किसने मुक़र्रर की?

जवाब – हज़रत उसमान ग़नी ने (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 116)

सवाल – सबसे पहले लोंगों को एक क़िरअत पर किसने जमा किया?

जवाब – हज़रत उसमान ग़नी ने (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 116)

सवाल – सबसे पहले जागीरें किसने मुक़र्रर कीं?

जवाब – हज़रत उसमान ग़नी ने (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 116)

सवाल – सबसे पहले कोतवाल और पुलिस किसने मुक़र्रर किये?

जवाब – हज़रत उसमान ग़नी ने (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 116)

सवाल – बनु हाशिम में सबसे पहले ख़लीफ़ा कौन हुऐ?

जवाब – हज़रत अली। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 117)

सवाल – कयामत के दिन सबसे पहले फ़ैसले के लिये खुदा की बारगाह में कौन खड़ा होगा?

जवाब – हज़रत अली खड़े होंगे (मवाहिब लदुन्निया 2 पेज 416)

सवाल – इल्मे नहव को सबसे पहले किसने ईजाद किया?

जवाब – हज़रत अली ने (महाज़िरतुल अवाइल पेज 69)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले राहे खुदा में तीर किसने चलाया?

जवाब – सअ्द बिन वक़्कास ने (जज़्बुल कुलूब पेज 78)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले राहे खुदा में अपनी तलवार किसने नियाम से निकाली?

जवाब – हज़रत जुबैर बिन अव्वाम ने। (ज़रक़ानी 3 पेज 318)

सवाल – जन्नतुल बक़ी में सबसे पहले किस सहाबी को दफ़न किया गया?

जवाब – हज़रत उसमान बिन मज़ऊन को (ज़रक़ानी 1 पेज 246)

सवाल – मक्का की सरज़मीन पर सबसे पहले बुलन्द आवाज़ से कुराने मुकद्दस को किसने पढ़ा?

जवाब – हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने।

(सीरते इब्ने हिशाम 1 पेज 107)

सवाल – शहादत के वक़्त सबसे पहले दो रकअ़त नमाज़ पढ़ने की सुन्नत किसने राइज की?

जवाब – हज़रत खुबैब बिन अ़दी ने। (ज़रक़ानी 2 पेज 71)

सवाल – सबसे पहले ईंट और गारे का मिम्बर किसने बनवाया?

जवाब – कसीर बिन सल्त ने (ज़ादुल मआ़द 1 पेज 127)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले शाइर कौन हुऐ?

जवाब – हज़रत हस्सान बिन साबित। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 111)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले रज्म (पत्थर मारकर ख़त्म करना) किसको किया गया?

जवाब – माइज़ असलमी को (महाज़िरतुल अवाइल 111)

सवाल – सबसे पहले हद्दे क़ज़फ (झूठे इलज़ाम और बोहतान की सज़ा) किन पर लगाई गई?

जवाब – हस्सान बिन साबित और मिस्तह पर।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 111)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले मुबल्लिग़ कौन हुऐ?

जवाब – हज़रत मुसइब बिन उमैर

(जज़्बुल कुलूब 61)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले शहादत किसकी हुई?

जवाब – अम्मार बिन यासर की माँ समिय्या की।

(ज़रक़ानी 1 पेज 266)

सवाल – राहे खुदा में सबसे पहले शहीद कौन हुऐ?

जवाब – हारिस बिन अबु हाला (नुज़हतुल क़ारी पेज 189)

सवाल – मालदारों में सबसे पहले जन्नत की तरफ़ किसको बुलाया जाऐगा?

जवाब – हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 147)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले अपनी बीवी से ज़िहार किसने किया?

जवाब – ओश बिन सामित ने (महाज़िरतुल अवाइल 89)

सवाल – हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के सबसे पहले कातिब का नाम क्या हे?

जवाब – उबई इबने कअ़ब। (तबसिरतुददिराया पेज 27)

सवाल – मस्जिदे नबवी में सबसे पहले चिराग किसने रोशन किया?

जवाब – हज़रत तमीम दारी ने (इबने माजा पेज 256)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले अज़ान किसने पढ़ी?

जवाब – हज़रत बिलाल हब्शी ने (महाज़िरतुल अवाइल पेज 95)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहला कौनसा बच्चा पैदा हुआ?

जवाब – हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 33)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले वज़ीर का लक़ब किन को दिया गया?

जवाब –अुब सलमा हफ़्स बिन ग़यास को (महाज़िरतुल अवाइल पेज 56)

सवाल – सबसे पहले क़ाज़ियुल कुज़ात का लक़ब किनको दिया गया?

जवाब – इमाम अबुयूसुफ़ को। (महाज़िरतुल अवाइल पेज 80)

सवाल – इस्लाम के सबसे पहले बादशाह का नाम क्या है?

जवाब – हज़रत अमीर मुआ़विया (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 139)

सवाल – बेअत के वक़्त कसम लेने का रिवाज़ व दस्तूर सबसे पहले किसने राइज किया?

जवाब – हज़रत अमीर मुआवियह ने (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 140)

सवाल – सबसे पहले डाक का महकमा किसने क़ाइम किया?

जवाब – हज़रत अमीर मुआवीय़ा ने (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 140)

सवाल – सबसे पहले दफ़्तर के लिये मुहर किसने तैयार की?

जवाब – हज़रत अमीर मुआविया ने (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 140)

सवाल – सबसे पहले दरबान किसने मुक़र्रर किये?

जवाब – हज़रत अमीर मुआविया ने (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 140)

सवाल – सबसे पहले रजिस्ट्री का महकमा किसने क़ाइम किया?

जवाब – हज़रत अमीर मुआविया ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 140)

सवाल – सबसे पहले बहरी जहाज़ किसने तैयार किया?

जवाब – हज़रत अमीर मुआविया ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 140)

सवाल – सबसे पहले मस्जिदों में रौशन दान किसन लगाऐ?

जवाब – हज़रत अमीर मआविया ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 140)

सवाल – इस्लाम में सबसे पहले ख़ानऐ काबा पर रेशमी ग़िलाफ़ किसने चढ़ाया?

जवाब – हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने। (सीरते हलबी 1 पेज 204) या हज्जाज बिन यूसुफ़ ने (सीरते इब्ने हिशाम 1 पेज 67)

सवाल – मुहाजरीने मदीना में सबसे पहले कौनसा बच्चा पैदा हुआ?

जवाब – हज़रत अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर (तारीखुल खुलफ़ा पेज 147)

सवाल – हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के मुँह में सबसे पहले कौन सी चीज़ गई?

जवाब – हुज़ूर का लुआबे दहन (अलबिदाया वन्निहाया 3 पेज 230)

सवाल – सबसे पहले ईद गाह में मिम्बर किसने रखवाया?

जवाब – मरवान बिन हकम ने (ज़ादुल मआद 1 पेज 127)

सवाल – सबसे पहले इस्लामी सिक्का यानी दिरहम व दीनार किसने राइज किया?

जवाब – अब्दुल मलिक बिन मरवान ने। (तारीखुल खुलफ़ा पेज 152)

सवाल – सबसे पहले इस्लामी दीनार पर मुहर किसने लगाई?

जवाब – अब्दुल मलिक बिन मरवार ने। (तारीखुल खुलफ़ा पेज 152)

सवाल – सबसे पहले दीनार पर आयते करीमा "*कुल हुवल्लाहु अहद*" किसने लिखवाई?

जवाब – अब्दुल मलिक बिन मरवान ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 152)

सवाल – सबसे पहले बुख़्ल किस ख़लीफ़ा ने इख़्तियार किया?

जवाब – अब्दुल मलिक बिन मरवान ने। (तारीखुल खुलफ़ा पेज 152)

सवाल – सबसे पहले किस ख़लीफ़ा के सामने कलाम करने से रोका गया?

जवाब – अब्दुल मलिक बिन मरवान के सामने।

(तारीखुल खुलफ़ा पेज 152)

सवाल – सबसे पहले अम्र बिल मारुफ़ से किसने रोका?

जवाब – अब्दुल मलिक बिन मरवान ने। (तारीखुल खुलफ़ा पेज 152)

सवाल – सबसे पहले मिम्बर पर हाथ किसने उठाया?

जवाब – अब्दुल मलिक बिन मरवान ने (तारीखुल खुलफा पेज 153)

सवाल – सबसे पहले दफ़्तर की ज़बान को फ़ारसी से अरबी की तरफ़ किसने मुन्तक़िल किया?

जवाब – अब्दुल मलिक बिन मरवान ने। (तारीखुल खुलफ़ा पेज153)

सवाल – सबसे पहले मस्जिद में मेहराब किसने बनवाई?

जवाब – हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 96)

सवाल – सबसे पहले दिरहम व दीनार पर अपना नाम किसने लिखवाया?

जवाब – हारुन रशीद अब्बासी ने (महाज़िरतुल अवाइल पेज 99)

सवाल – सबसे पहले मस्जिदों में नक़्शो निगार किसने किये?

जवाब – वलीद बिन अब्दुल मलिक ने (ज़रक़ानी 1 पेज 369)

सवाल – सबसे पहले किस ख़लीफ़ा ने अपने दरबार में नजूमियों को रखा और नजूमियों की बातों पर अमल किया?

जवाब – ख़लीफ़ा मन्सूर ने (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज 187)

सवाल – सबसे पहले ग़ैर अरब को अरब पर हाकिम किसने किया?

जवाब – ख़लीफ़ा मन्सूर ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 187)

सवाल – सबसे पहले किस ख़लीफ़ा ने किताबों को सुरयानी ज़ुबान से अरबी ज़ुबान की तरफ़ मुन्तक़िल किया?

जवाब – ख़लीफ़ा मन्सूर ने (तारीखुल खुलफ़ा पेज 187)

सवाल – इल्मे हदीस को सबसे पहले किसने जमा किया?

जवाब – अबुबक्र बिन हज़्म ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के हुक्म से जमा किया। (नुज़हतुलक़ारी जिल्द 1 पेज 17)

बक़ौले बाज़ इब्ने शहाब ज़ुहरी ने जमा किया।

(महाज़िरतुल अवाइल पेज 67)

सवाल – इल्मे हदीस में सबसे पहले किताब किसने तसनीफ़ की?

जवाब – इब्ने ज़ुरैज मुहद्दिस ने, बक़ौल बाज़ इमाम मालिक ने। (शरह शिफ़ा 1 पेज 164)

सवाल – इल्मे फ़िक़ह को सबसे पहले किसने जमा किया? और उसे बाबों में तरतीब भी दिया?

जवाब – हज़रत इमामे आज़म ने (रद्दुल मोहतार 1 पेज 35)

सवाल – इल्मे फ़िक़ह में सबसे पहले किताब किसने लिखी?

जवाब – हज़रत इमाम आज़म ने (महाजिरतुल अवाइल पेज 68)

सवाल – अहकामे कुरान में सबसे पहले किताब किसने लिखी?

जवाब – हज़रत इमाम शाफ़ेई ने (महाज़िरतुल अवाइल पेज 66)

सवाल – उलूमे फ़लसफ़ा को यूनानी ज़ुबान से अरबी ज़ुबान की तरफ़ सबसे पहले किसने मुन्तक़िल कराया?

जवाब – हुनैन ने (असिर्रुल मकतूम पेज 10)

बक़ौल बाज़ ख़ालिद बिन यज़ीद बिन मुआविया ने। (निबरास पेज 31)

सवाल – इल्मे कलाम की बुनयाद सबसे पहले किसने रखी?

जवाब – फ़िरक़ऐ मोअ़तज़ला ने रखी फिर बाद में एहले सुन्नत

व जमाअत ने इल्मे कलाम की बुन्याद मज़हबे ऐतेज़ाल से रुजूअ (बापस होना) करने के बाद इमाम अबुल हसन अशअरी ने रखी।

(असिरुल मक़तूम पेज 6)

सवाल – इमामे आज़म के उसूले फ़िक़हा पर सबसे पहले किताब किसने लिखी?

जवाब – इमाम अबु यूसुफ़ ने। (रद्दुल मोहतार 1 पेज 35)

जिन किताबों से मदद ली गई

मआखज़ व मराजेअ

नाम किताब	मतबअ	मुसन्निफ़
कुरआन-		
ख़ाज़िन	मिसरी	अलाउद्दीन अली बिन मु० बगदादी
मआलिमुत्तन्ज़ील	मिसरी	इमाम मोहीयुस्सुन्नह बग़वी
जुमल	मिश्री	सुलैमान बिन उमरुलअजीली
सावी	हलबी	शेख़ अहमद सावी
इतक़ान	तुर्की	जलालुद्दीन सयूती
ऐजाज़ुल कुरआन अललइतकान	तुर्की	क़ाज़ी अबु बक्र बाक़िल्लानी।
तफ़सीर कबीर	मिसरी	इमाम फ़ख्रुद्दीन मु० राज़ी
रुहुल बयान	मिसरी	अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी
तफ़सीर अहमदी	करीमी	शेख़ अहमद अल मअरूफ़ मुल्ला जीवन
तफ़सीरे अज़ीज़ी		शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी
तफ़सीर इब्ने जरीर तिबरी	मिसरी	अबु जाफ़र मु० बिन जरीर तिबरी
तफ़सीरे नसफ़ी अल मअरूफ बिल(मदारिक)	असहहुलमताबेअ	अबुल बरकात अब्दुल्लाह बिन अहमद
ग़राइबुल कुरआन अलत्तफ़सीर इब्ने जरीर	मिसरी	निज़ामुद्दीन नीसा पुरी
जलालैन शरीफ़	रशीदिया	जलालुद्दीन सयूतीव महल्ली
हाशिया शेख़ज़ादा	उसमानिया	मु० बिन मुसलिहुद्दीन
अल कलामुल औज़ह फ़ी तफ़सीर अलम नशरह	मकतबा रिज़विया	मौलाना नक़ी अली ख़ाँ
मवाहिबुर्रहमान	नवल किशोर	सय्यद अमीर अली
ख़ज़ाइनल इरफ़ान	फ़रीद बुक डिपो	मौलाना नईमुद्दीन (सदरुल अफ़ाज़िल)
तफ़सीरे नईमी	पाकिस्तान	मुफ़्ती अहमद यार ख़ाँ

नरुल इरफ़ान	पाकिस्तान	मुफ़्ती अहमद यार खाँ
बुख़ारी शरीफ़	रशीदिया	इमाम बुख़ारी बिन मु॰ इस्माईल
मुस्लिम शरीफ़	असहहुल मताबेअ़	अबूल हुसैन मुस्लिम बिन अलहेजाज कुशैरी
तिरमिज़ी शरीफ़	देवबन्द	अबुईसा मु॰ बिन ईसा तिरमिज़ी
अबु दाऊद शरीफ़	मुजतबाई	सुलैमान बिन अशअससजिस्तानी
मिश्कात शरीफ़	रशीदिया	वलिय्यद्दीन मु॰ बिन अब्दुल्लाह ख़तीब
मिश्कात असमाउर्रिजाल	रशीदिया	वलिय्युद्दीन मु॰ बिन अब्दुल्लाह ख़तीब
इब्ने माजा	मिसरी	मु॰ बिन यज़ीद अबु अब्दुल्लाह इब्ने माजा
कन्ज़ुल उम्माल	दाइरतुल मआरिफ़	अलाउद्दीन अली अल मुत्तकी बिन हिसामुद्दीन
बुस्तानुल आरफ़ीन	तुर्की	फ़िक़ीह अबुल्लैस शेख़ ज़ाहिद नसर बिन मु॰
अलइत्तेहाफ़ुस्सुन्नियह	दाइरतुलमआरिफ़	अब्दुर्रऊफ़ मनावी
कुनूज़ुल हक़ाइक़	मिसरी	अब्दुर्रऊफ़ मुनावी
जामेऐ सग़ीर	मिसरी	अल्लामा जलालुद्दीन सयूती
अशिअअ़तुल लमआत	नवल किशोर	शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहलवी
शरह शिफ़ा	मिसरी	मुल्ला अली क़ारी
मसनदे इमामे आज़म मअ़ शरह लिअली क़ारी		बरिवायत अल्लाम हस्फ़की
उम्दतुल क़ारी	आमिरा	अल्लामा बदरुद्दीन महमूद ऐनी
बशारेरूल क़ारी	मकतबा जीलानी	मौलाना गुलाम जीलानी
मिरअतुल मनाजीह	पाकिस्तान	मुफ़्ती अहमद यार खाँ
नुज़हतुल क़ारी	दाइरतुल बरकात	अल्लामा शरीफ़ुल हक़
शरह अक़ाइद	रशीदिया	अल्लामा सुअ़दुद्दीन तफ़्ताज़ानी
शरह फ़िक़हे अकबर लिअलीकारी	पाकिस्तान	मुल्ला अली क़ारी
शरह फ़िक़हे अकबर बहरूल उलूम	मुज्जतबाई	अब्दुल ओला लखनवी
शरह फ़िक़हे अकबर मुगी सावी	दाइरतुल मआरिफ़	शेख़ अहमद बिन मु॰ मुग़ी सावी
तकमीलुल ईमान	मुजतबाई शेख़	अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहलवी
अलमुअ़तक़दुल मुन्तक़द	लाहौर	अल्लामा फ़ज़्ले रसूल बदायूनी
अलमुअ़तमदुल मुसतनद	लाहौर	आला हज़रत बरेलवी
सुहानस्सुब्बूह	लाहौर	आला हज़रत फ़ाज़िल बरेलवी
तजल्लियुल यक़ीन	रज़ा ऐकेडमी	आला हज़रत फ़ाज़िल बरेलवी
अलअम्नुवल उला	रज़ा ऐकेडमी	आला हज़रत फ़ाज़िल बरेलवी
मन्बहुल मनीयह	रज़ा ऐकेडमी	आला हज़रत फ़ाज़िल बरेलवी
अलहिदायतुल मुबारकाह फी ख़लक़िल मलाइकह	रेज़ा ऐकेडमी	आला हज़रत फ़ाज़िल बरेलवी
निबरास	पाकिस्तान	अब्दुल अज़ीज़ फरहारवी
रौज़तुल बाहय्या	दाइरतुल मआरिफ़	हसन बिन अब्दुल मुहसिन

अलजवाहिरुल मुज़िय्या फ़ी तबक़ातिल हनफ़िय्या	दाइरतुल मआरिफ़	अब्दुल क़ादिर मु० बिन मु०
अलजवाहिरुल मनीफ़ह फ़ी शरहे वसिय्यतिल इमाम अबी हनीफ़ा	दाइरतुल मआरिफ़	मुल्ला हुसैन बिन असकन्दर हनफ़ी
दक़ाइक़ुल अख़बार फ़ी ज़िकरिल जन्नति वन्नार	बम्बई	अब्दुर्रउफ़ बिन अहमद
रद्दुल मोहतार	मिसरी	शेख़ अमीन इब्ने आबेदीन शामी
दुर्रे मुख़्तार मअ रद्दुल मोहतार	मिसरी	अलाउद्दीन हसकफ़ी
जद्दुल मुम्तार अला रद्दिल मोहतार	हैदराबाद	आला हज़रत बरेलवी
तहतावी अलद्दुर्रिल मुख़्तार	बेरुत	सय्यद अहमद तहतावी
तहतावी अला मराक़ियुल फ़लाह	मिसरी	सय्यद अहमद तहतावी
आलमगीरी	मजीदी	अल्लामा निज़ामुद्दीन वग़ैरहुम
बहरुर्राइक़	पाकिस्तान	शेख़ ज़ैनुद्दीन अल मआरूफ़ इब्ने नजीम
अलइश्बाह वन्नज़ाइर	नवलकिशोर	शेख़ ज़ैनुद्दीन अल मआरूफ़ इब्ने नजीम
शरह अलइश्बाह लिलहमवी	नवलकिशोर	अल्लामा हमवी
फ़तावा हदीसिया	मिसरी	शेख अहमद शहाबुद्दीन इब्ने हजरहीतमी
फ़तावा रिज़विया	मुख़्तलिफ़	आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी
फ़तावा अफ़रीक़ा	सिमनानी	आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी
अहकामे शरीअत	कराची	आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी
फ़तावा अज़ीज़िया	मुज्तबाई	शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस दहलवी
बहारे शरीअत	कादरी बुक डिपो	सदरुश्शरीअह मौलाना अमजद अली
अलमलफ़ूज़	कादरी बुक डिपो	आला हज़रत फ़ज़िले बरेलवी
तबसिरतुद्दिराया फ़ी मुक़द्दमतिल हिदाया	नवल किशोर	अब्दुल अली मद्रासी
फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल	दारुल इशाअत	मुफ़्ती जलालुद्दीन अमजदी
मवाहिब लदुनिया	शरफ़िया	शहाबुद्दीन-अहमद कुसतलानी
मदारिजुन्नुबुव्वत	नासरी	शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहलवी
सीरते हलबी	मिसरी	अली बिन बुरहानुद्दीन हलबी
ज़रक़ानी	मिसरी	मु० बिन अब्दुल बाक़ी ज़रक़ानी
ज़ादुल मआद	मिसरी	शमसुद्दीन अलमअरूफ़, इब्ने क़य्यिम
जज़्बुल क़ुलूब इलादयारिल महबूब		शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहलवी
शरह सफ़रुस्सआदह	लाहौर	शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहलवी
नूरुल अबसार फ़ी मनाक़िबे आले बैते नबी इल मुख़्तार	मिसरी	सय्यद मोमीन बिन हसन शबलंजी
इरशादुस्सारी इला मनासिकिल मुल्ला लिअली क़ारी	मिसरी	हुसैन बिन मु० सईद अब्दुलग़नी
शरह अलमसलकुल मुतक़सित फ़िल मनसकिल मुतवस्सित	मिसरी	मुल्ला लिअली क़ारी
अलमवाहिबुल्लदुनिया अलश्शमाइलिल मुहम्मदिया	मिसरी	शेख़ इब्राहीम बीजोरी
ख़साइसुल कुबरा	लाइल पूर	जलालुद्दीन सयूती
ततहीरुल जिनान अलस्सवाइक़िल मुहिरक़ा	मिसरी	शेख़ शहाबुद्दीन अहमद बिन हजर हीतमी

कसासुल अम्बिया	मिसरी	अबु इसहाक़ अहमद बिन मु॰ सअ्लबी
गुनियतुत्तालेबीन	लाहौर	गौसे आज़म अब्दुल कादिर जीलानी
अश्शरफुल मोअबद लिआले मुहम्मद	मिसरी	अल्लामा यूसुफ़ नबहानी
नुज़हतुल मजालिस		अब्दुर्रहमान सफ़ूरी
शरहुस्सुदूर	मिसरी	अल्लामा जलालुद्दीन सयूती
बहजतुल असरार	मिसरी	शेख़ नूरुद्दीन अली बिन यूसुफ़ शतनूफ़ी
अल इबरीज़	मिसरी	अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़
तबक़ातुल कुबरा		मु॰ बिन सअ्द कातिबुल वाक़दी
हयातुल हैवान	मिसरी	कमालुद्दीन दमीरी
अलबिदाया वन्निहाया	मिसरी	हाफ़िज़ इमादुद्दीन इस्माईल बिन दमिश्क़ी
महाज़िरतु अवाइल	मिसरी	शेख़ अलाउद्दीन अली वद्दतिस्सकतूरी
सीरते इब्ने हिशाम		अब्दुल मलिक बिन हिशाम
तारीख़ुल ख़ुलफ़ा	रहीमिया	अल्लामा जलालुद्दीन सयूती
इज़हारुल हक़ अलअजल्ला	रज़ा ऐकेडमी	आला हज़रत बरेलवी
अस्सूउ वलइक़ाब अललमसीहिल कज़्ज़ाब	रज़ा ऐकेडमी	आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी
अन्नाहियह अन तअ्नि मआवियह	पाकिस्तान	अब्दुल अज़ीज़ फ़रहारी
असिर्रुल मक़्तूम फी असबाबि तदवीनुल उलूम	अहमदी	शाह वलियलाह मुहद्दिस दहलवी
मज़ाहिबुल इस्लाम	लाहौर	नजमुल ग़नी ख़ाँ रामपुरी
मज़हबे इस्लाम	मकतबा अजमली	मुफ़्ती अजमलशाह रह॰
इस्लाम और चाँद का सफ़र	दाइरतुल बरकात	मुफ़्ती शरीफुल हक़
तारीख़े इस्लाम		अकबर शाह नजीब आबादी
आईनए तारीख़	कादरिया	मुख़्तार अहमद उवैसी
ग़यासुल्लुग़ात		मु॰ ग़यासुद्दीन
ग़ैर मुक़ल्लिदों के फ़रेब	अमजदिया	मुफ़्ती जलालुद्दीन अमजदी
तबलीग़ी जमाअत	जामे नूर	अल्लामा अरशदुल क़ादरी
मौदूदी मज़हब	रिज़वी कुतुब ख़ाना	इक़बाल अहमद नूरी
मौदूदी मज़हब	पाकिस्तान	काज़ी मज़हर हुसैन
कुर्रतुल उयून	देवबन्द	मौलवी हनीफ़
उर्दू अदब की तारीख़		सय्यद मु॰ असीम
दास्तान ज़ुबानें उर्दू		डा॰ शौकत सब्ज़वारी